पंजीयन : UTTHIN/2012/48352

अविरामसाहित्यिकी

समग्र साहित्य की समकालीन त्रैमासिक पत्रिका

।।सामाजिक–राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के उन्नयन को समर्पित।।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' के लघुकथा–सृजन की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर

श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

खंड (वर्ष) : 11 / अंक : 2
जुलाई–सितम्बर 2022

लघुकथा विशेषांक :
लघुकथाकार रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी के योगदान पर केन्द्रित

प्रधान सम्पादिका :
मध्यमा गुप्ता

अंक सम्पादक :
डा. उमेश महादोषी

।।माइक पर/उमेश महादोषी।।

■ समाज केन्द्रित मननशील रचनाकार से अधिक उसकी रचना बोलती है। कई लघुकथाकारों के सन्दर्भ में यह उक्ति बहुत सटीक बैठती है। इस सन्दर्भ में अग्रज श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी पर कहने को बहुत कुछ है; किन्तु अंक को व्यवस्थित करते हुए यही एक पृष्ठ बचा है मेरे पास, अपनी बात कहने के लिए। संक्षेप में इतना कहना समीचीन होगा कि मैंने प्रायः उन्हें सामाजिक–राजनैतिक मुद्दों पर भाषणबाजी जैसा कुछ बोलते हुए नहीं सुना। संभवतः यह मुझे अवसर न मिलने की बजाय उनके स्वभाव से जुड़ी बात है। किन्तु उनकी लघुकथाओं (और दूसरी विधाओं की रचनाओं में भी) समाज के तमाम ज्वलंत मुद्दों पर सटीक विचार और चिंतनपूर्ण टिप्पणियाँ अमिट रूप में अंकित हुई हैं। जिस व्यक्तित्व ने कुल 65–70 लघुकथाएँ रची हों और उन्हीं में अपने समय की तमाम सामाजिक चिंताओं को गूँथकर रख दिया हो, समझा जा सकता है कि उसकी चिंतन–दृष्टि की सामयिकता, वैचारिक–प्रवाह का फैलाव और भावों की सान्द्रता किस कदर समाज केन्द्रित रही होगी! हिमांशु जी के लघुकथा–सृजन और लघुकथा की स्थापना में योगदान के सन्दर्भ में अनेक मित्रों के विचार इस अंक के पृष्ठों पर अंकित हुए हैं, अधिकतर से मेरी सहमति तो है ही, उन मित्रों के साथ मेरा मन भी साझेदार बनकर खड़ा है। निश्चित रूप से हिमांशु जी की रचनात्मकता का फलक बहुत व्यापक है और यह व्यापकता उनके स्वयं के लेखन के साथ उन अनेकानेक नये–नये रचनाकारों के लेखन से गुणित होती है, जिन्हें हिमांशु जी ने मार्गदर्शन देकर आगे बढ़ने और सार्थक रचनाकार के रूप में स्थापित होने में मदद की है।

■ मैंने भी विगत चालीस से अधिक वर्षो के अपनापे में हिमांशु जी से बहुत कुछ पाया, बहुत कुछ सीखा और बहुत कुछ समझा। किन्तु एक बात बेहद महत्त्वपूर्ण है, जो मैंने उनके अन्दर देखी– मित्रता को हृदयस्थ कर लेना, उसे भावनाओं से जोड़ लेना। उनके मित्रों में कई लोग हैं, जिनसे उनकी मित्रता या तो स्वर्णजयंती मना चुकी है या मनाने के कगार पर है। ऐसा ईमानदारीपूर्वक रिश्ते निभाने से ही संभव हो पाता है। साहित्यिक क्षेत्र में अनेक पत्रिकाएँ हैं, जिनसे जुड़ने के बाद उनका रिश्ता कभी नहीं टूटा। अनेकानेक पत्रिकाओं में संपादकीय सहयोग करने वाले साहित्यकारों की सूची में दो ही नाम प्रमुखतः देखने में आते हैं– हिमांशु जी और डॉ. बलराम अग्रवाल। लघुकथा का यह सौभाग्य है कि इन दोनों सरीखे निस्पृह संपादकों के कारण तमाम लघुकथाकारों को अनेकानेक पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को सार्वजनिक मंच प्राप्त करने का अवसर मिला। आशा है इनके द्वारा दिखाया रास्ता साहित्य के प्रसार–माध्यमों के मध्य एक स्वस्थ परम्परा के रूप में स्थापित होगा।

■ अविराम/अविराम साहित्यिकी के संपादन में हिमांशु जी से निरंतर सहयोग मिलता रहा है। हाइकु और ताँका जैसी नवोन्मेषी रचनाओं पर तो जो भी कार्य अविराम के मंच से (मुद्रित और इण्टरनेट– दोनों स्तरों पर) हुआ, उसका श्रेय हिमांशु जी को ही जाता है। लघुकथा के सम्बन्ध में भी उनका मार्गदर्शन समय–समय पर मिलता रहा है।

■ हिमांशु जी ने लघुकथा सृजन 1972 में आरम्भ किया था, इस प्रकार यह वर्ष (2022) उनके लघुकथा सृजन का स्वर्णजयन्ती वर्ष है। संयोगवश मुद्रित प्रारूप में अविराम/अविराम साहित्यिकी का यह अंक भी 50 वाँ यानी स्वर्णजयन्ती अंक है। हमारा सौभाग्य है कि इन दो–दो स्वर्णजयन्ती अवसरों पर हम हिमांशु जी की रचनात्मकता के साथ उत्सव–मंच पर हैं।

■ हिमांशु जी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें। उनकी रचनात्मकता साहित्य को समृद्ध करती रहे। उनका स्नेह हम सबको मिलता रहे! ■

अविरामसाहित्यिकी

समग्र साहित्य की समकालीन त्रैमासिक पत्रिका

आदरणीया भाभी जी के साथ रा. का. 'हिमांशु'जी : एक भाव चित्र

खंड (वर्ष) : 11/अंक : 2

जुलाई–सितम्बर 2022

प्रधान सम्पादिका : **मध्यमा गुप्ता**

अंक सम्पादक : **डॉ. उमेश महादोषी**

संयुक्त सम्पादिका : **डॉ. संध्या तिवारी**

सह सम्पादिका : **ज्योत्स्ना कपिल**

संपर्क (प्रकाशन/रचना सामग्री प्रेषण हेतु):

ई–मेल : aviramsahityaki@gmail.com

121, इन्द्रापुरम, निकट बीडीए कॉलोनी, बदायूँ रोड, बरेली–243001, उ.प्र./मो. 09458929004**(सूचना हेतु)**

इन्टरनेट पर उमेश महादोषी संचालित ब्लाग :

http://aviramsahitya.blogspot.com

स्थायी कार्यालय :

एफ–488/2, गली सं. 11, राजेन्द्र नगर, रुड़की, जिला–हरिद्वार–247667, उ.खण्ड

न्यायिक क्षेत्र : रुड़की (हरिद्वार)

सम्पादन परामर्श : **डॉ. सुरेश सपन**

मुद्रण सहयोगी : **पवन कुमार**

कृपया अगली सूचना तक कोई शुल्क न भेजें।

अविराम साहित्यिकी की प्रकाशन तिथियाँ हैं– क्रमशः 14 मई, 14 अगस्त, 14 नवम्बर व 14 फरवरी। सभी संबन्धितों को प्रेषण प्रकाशन तिथि के एक सप्ताह में। प्रकाशित सामग्री से संपादक/प्रबंधन की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं पर पारिश्रमिक देय नहीं। ईमेल से रचनाएँ मेल बाक्स में पेस्ट करके या वर्ड 2007 या पेजमेकर में ही भेजें। पीडीएफ या स्केन (फोटो) रूप में रचनाएँ स्वीकार्य नहीं होंगी।

यह विशेषांक :

लघुकथा में रा. का. 'हिमांशु' का योगदान

आवरण (रामेश्वर कॉबोज 'हिमांशु') रेखाचित्र :

डॉ. बलराम अग्रवाल

एक प्रति का मूल्य : रु. **25/–**, पाठक सदस्यता : त्रैवार्षिक रु. **300/–**, आजीवन रु. **1100/–**

(पाठक सदस्यता शुल्क 'अविराम साहित्यिकी' के अंकों की एक–एक प्रति साधारण डाक से भेजने का शुल्क है, रचनाओं के प्रकाशन से शुल्क का कोई संबंध नहीं है। प्राप्त शुल्क वापस नहीं किया जायेगा।)

(सभी राशियाँ 'अविराम साहित्यिकी' के पक्ष में ही बरेली पर देय सी.टी.एस.–2010 चैक या माँग ड्राफ्ट या विवरण की सूचना हमें देते हुए पंजाब नेशनल बैंक, बायपास रोड, बरेली में 'अविराम साहित्यिकी'के खाता 03401131002357 (आईएफएस कोड PUNB0223410) में नकद जमा या इलेक्ट्रानिक अन्तरण द्वारा ही भेजें। धनादेश द्वारा राशि कदापि न भेजें। विज्ञापन हेतु उमेश महादोषी से पूछताछ करें।)

सम्पादन/प्रकाशन/प्रबन्धन पूर्णतः अव्यवसायिक व अवैतनिक

प्रैस लाइन

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक श्रीमती मध्यमा गुप्ता द्वारा पवन ऑफसैट प्रिंटर्स, 60, पूर्वा दीनदयाल, रुड़की, जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से मुद्रित करवाकर एफ–488/2, गली संख्या 11, राजेन्द्रनगर, रुड़की, जिला–हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

।।सामग्री।।

लघुकथा में रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' के योगदान पर केन्द्रित आयोजन

भावभूमि की पृष्ठभूमि (3)

लघुकथा में रा. का. 'हिमांशु'

सुकेश साहनी (5)
भगीरथ परिहार (7)
डॉ. बलराम अग्रवाल (10)
डॉ. अशोक भाटिया (11)
डॉ. जितेन्द्र 'जीतू' (14)
सुदर्शन रत्नाकर (15)
डॉ. जेन्नी शबनम (16)
सन्तोष सुपेकर (17)
डॉ. नितिन सेठी (19)
डॉ. चन्द्रेश कुमार छतलानी (23)
डॉ. खेमकरण सोमन (24)
डॉ. संध्या तिवारी (28)
डॉ.लता अग्रवाल 'तुलजा'/अनिता मण्डा (30)
विरेन्द्र 'वीर' मेहता (31)
ज्योत्स्ना कपिल (32)

'असभ्य नगर और अन्य लघुकथाएँ' संग्रह पर चर्चा

गोविन्द राव मराठे (34)
शराफत अली खान (35)
नवीन चतुर्वेदी (36)
डॉ. हृदय नारायण उपाध्याय (38)
कल्पना भट्ट (39)

'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' ग्रंथ पर चर्चा

डॉ.कविता भट्ट (41)/डॉ.सुषमा गुप्ता (43)
डॉ. शिवजी श्रीवास्तव (47)
कृष्णा वर्मा (50)/पवन जैन (51)

'मेरी पसन्द' और हिमांशु जी की लघुकथाएँ

डॉ. सुधा गुप्ता (52)
प्रो. बी. एल. आच्छा (53)
निशान्तर (55)/डॉ. सुधा ओम ढींगरा (56)
डॉ. अनीता राकेश/हरिशंकर सक्सेना (57)
डॉ.कुँवर दिनेश सिंह (58)/हरेराम समीप (59)
रमेश गौतम (60)/डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा (61)
भावना सक्सेना/सत्या शर्मा कीर्ति (62)
डॉ. सरस्वती माथुर/सुरेश बाबू मिश्रा (63)
डॉ. राजेन्द्र साहिल (64)
डॉ. आशा पाण्डेय/रणजीत टाडा (65)

छाया दृष्टि

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी की साहित्यिक यात्रा के कुछ चित्रात्मक पड़ाव (66 व आव. 4)

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' का लघुकथा सृजन

लघुकथा संग्रह 'असभ्य नगर और अन्य लघुकथाएँ' से 20 लघुकथाएँ (71)

कथा प्रवाह (सदस्यों की लघुकथाएँ)

खेमकरण सोमन/विभा रश्मि (82)
मालती बसंत (83)/सुधा भार्गव (84)
कपिल शास्त्री/महावीर रंवाल्टा (85)
पवन जैन (86)/लाजपत रॉय गर्ग (87)
मिनी मिश्रा/कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' (88)
सत्य शुचि (89)/सुभाष मित्तल 'सत्यम्' (90)

स्तम्भ

माइक पर : संपादकीय (आव. 2)/गतिविधियाँ (91)/प्राप्ति स्वीकार (33 व आवरण 3)

घर हो या साहित्य : हर कदम पर साथ
{सहधिर्मिणी श्रीमती बीरबाला काम्बोज जी के साथ हिमांशु जी।}

।।भावभूमि की पृष्ठभूमि।।

{हाइकु–तांका जैसी काव्य विधाओं के साथ श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी का योगदान लघुकथा की विकास–यात्रा में भी महत्वपूर्ण रहा है। स्थापित रचनाकारों के साथ नयी पीढ़ी के रचनाकारों एवं लघुकथा–पाठकों के मध्य उनकी लोकप्रियता असंदिग्ध है। ऐसे में उनके जैसे शिखर पुरुष के परिचय की औपचारिकता का उद्देश्य शोधादि के दृष्टिगत अकादमिक सन्दर्भ की अपेक्षा–पूर्ति से अधिक कुछ नहीं हो सकता। हम इसी विनम्र भाव को हृदयस्थ करके यहाँ उनके संक्षिप्त जीवन–वृत्त को प्रस्तुत कर रहे हैं।}

रामेश्वर काम्बोज हिमांशु

जन्म : 19.03.1949 को ग्राम हरिपुर, जिला सहारनपुर (उ.प्र.) में।
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.।
माता : श्रीमती शान्ति काम्बोज
पिता : श्री सोम सिंह काम्बोज
जीवनसहचरी : श्रीमती वीरबाला काम्बोज
भावज–भाई : 1. श्रीमती रोशन काम्बोज एवं श्री ब्रजपाल काम्बोज (दोनों स्मृतिशेष)
2. श्रीमती सन्तोष काम्बोज एवं श्री बीर सिंह काम्बोज
3. श्रीमती संयोगिता काम्बोज एवं श्री तेजपाल सिंह काम्बोज
4. श्रीमती कान्ता काम्बोज एवं श्री स्वराज सिंह काम्बोज
5 श्रीमती संगीता काम्बोज एवं श्री राजेश कुमार काम्बोज
बहन–बहनोई : 1. श्रीमती सुलोचना काम्बोज एवं श्री धर्मपाल सिंह काम्बोज
2. श्रीमती ब्रजवती काम्बोज एवं श्री महिपाल सिंह काम्बोज
3. श्रीमती प्रभा काम्बोज (स्मृतिशेष) एवं श्री राजकिशोर काम्बोज
अगली पीढ़ी : ज्येष्ठ पुत्र–पुत्रवधू : निशान्त काम्बोज एवं श्रीजा काम्बोज
मँझला पुत्र–पुत्रवधू : रोहित काम्बोज एवं अंजना काम्बोज
कनिष्ठ पुत्र–पुत्रवधू : सुशान्त काम्बोज एवं तरुणा काम्बोज
तीसरी पीढ़ी : पौत्र : मिहिर काम्बोज, मयंक काम्बोज (पुत्र निशान्त काम्बोज–श्रीजा काम्बोज)
पौत्री : आरोही काम्बोज, आर्या काम्बोज (पुत्री रोहित काम्बोज–अंजना काम्बोज)।
पौत्र : शान्तनु काम्बोज (पुत्र–सुशान्त काम्बोज–तरुणा काम्बोज)

लेखन/प्रकाशन/योगदान :

मूल लेखन विधाएँ : व्यंग्य, लघुकथा एवं हाइकु।
अन्य प्रमुख लेखन विधाएँ : व्यंग्य, उपन्यास, कविता, क्षणिका, छान्दसिक काव्य, बालसाहित्य, समीक्षा एवं सैद्धान्तिक–व्यावहारिक समालोचना।
प्रकाशित रचनाएँ : माटी, पानी और हवा (प्रौ. शि. विभाग उ.प्र. द्वारा 14 हज़ार प्रतियाँ प्रकाशित), अँजुरी भर आसीस, कुकडूँ कूँ (3 संस्करण), हुआ सवेरा (3 संस्करण), मैं घर लौटा, तुम सर्दी की धूप, बनजारा मन (कविता–संग्रह), मेरे सात जनम, माटी की नाव, बन्द कर लो द्वार (हाइकु–संग्रह), तीसरा पहर (ताँका–सेदोका–चोका संग्रह), मिले किनारे (ताँका और चोका संग्रह डॉ. हरदीप सन्धु के साथ), झरे हरसिंगार (ताँका–संग्रह), धरती के आँसू, (उपन्यास), दीपा, दूसरा सवेरा (लघु उपन्यास– अब 'बतियाती पगडण्डी' नाम से), असभ्य नगर (लघुकथा–संग्रह, दो संस्करण), खूँटी पर टँगी आत्मा (व्यंग्य–संग्रह, 3 संस्करण), बाल भाषा व्याकरण, नूतन भाषा–चन्द्रिका (व्याकरण), लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य, (लघुकथा–समालोचना), सह–अनुभूति एवं काव्य–शिल्प (काव्य–समालोचना), हाइकु आदि काव्य–धारा (जापानी काव्य विधाओं की

समालोचना), छन्द–विधान एवं सृजन, गद्य की विभिन्न विधाएँ (रचनात्मक लेखन), फुलिया और मुनिया (बालकथा हिन्दी और अंग्रेजी, अंग्रेजी संस्करण दो बार इटली के विश्व पुस्तक मेले में प्रदर्शित), रा. पु. न्यास द्वारा प्रकाशित हरियाली और पानी (बालकथा–6 संस्करण लगभग एक लाख प्रतियाँ) का 'गीड्–गदेड् ओन्डोः दः अ (हो भाषा में 2 संस्करण), हरियार और दः अः ('असुरी' भाषा में), मिथिंगा आरो दै ('बोडो' भाषा में), उड़िया, पंजाबी और गुजराती में अनुवाद, झरना, सोनमछरिया, कुआँ (पोस्टर बाल कविताएँ), रोचक बाल कथाएँ। लोकल कवि का चक्कर (2005 में आकाशवाणी जबलपुर से नाटक का प्रसारण)। 'ऊँचाई' लघुकथा पर लघु फिल्म। नेपाली, पंजाबी, अंग्रेजी, उर्दू, मराठी, गुजराती, संस्कृत, बांग्ला में अनूदित कुछ रचनाएँ।

प्रसारण : रेडियो सीलोन, आकाशवाणी गुवाहाटी, रामपुर, नजीबाबाद, अम्बिकापुर एवं जबलपुर, दूरदर्शन हिसार, टैग टी. वी. और सी. एन. (कैनेडा) से।

अनुवाद : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के लिए 2 पुस्तकों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद।

सम्पादन : **39 पुस्तकें**। आयोजन, मेरी पसन्द (3 भाग), बाल मनोवैज्ञानिक लघुकथाएँ, लघुकथा देश–देशान्तर, मानव मूल्यों की लघुकथाएँ, लघुकथाएँ जीवन मूल्यों की (सुकेश साहनी के साथ)। चन्दनमन, भावकलश, 'हाइकु–काव्य शिल्प एवं अनुभूति', गीत सरिता (3 भाग), 'डॉ. सुधा गुप्ता के हाइकु में प्रकृति', गीले आखर (डॉ. भावना कुँअर के साथ), यादों के पाखी, अलसाई चाँदनी, उजास साथ रखना, पीर भरा दरिया (डॉ.भावना कुँअर और डॉ. हरदीप सन्धु के साथ), स्वप्न शृंखला (डॉ.कविता भट्ट के साथ), झरा प्यार निर्झर (डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा के साथ); नैतिक कथाएँ (5 भाग–नवीन चतुर्वेदी के साथ), डीसेण्ट हिन्दी रीडर (8 भाग), एक दुनिया इनकी भी (2 भाग) आदि।

विशेषांक–सम्पादन : सरस्वती सुमन (दो हाइकु एवं एक बाल विशेषांक), नेवा : हाइकु–नेपाल (हिन्दी हाइकु विशेषांक), शोध दिशा (2 लघुकथा विशेषांक), हरिगन्धा (4 विशेषांक), हिन्दी चेतना और अभिनव इमरोज़ के लघुकथा विशेषांक (सुकेश साहनी के साथ)। सरस्वती सुमन का क्षणिका–विशेषांक (हरकीरत 'हीर' के साथ), अविराम (हाइकु व तांका परिशिष्ट)। अन्य सम्पादन–कार्य : हिन्दी चेतना त्रैमासिक (कनाडा)।

अन्तर्जाल : https://www.hindichetna.com, सहज साहित्य– sahajsahity.com, (मार्च 2007 से हिमांशु जी का ब्लॉग), laghukatha.com, https://hindihaiku.wordpress.com, http://www.trivenii.com

अन्य गतिविधियाँ : 1. नवतरंग कक्षा 4 एवं 5 (इन्डिनिका पब्लिकेशंस), सुगन्धा कक्षा–2–3 और 5 (सार पब्लिकेशंस) 2020 के पाठ्यक्रम में रचनाएँ, स्नातक पाठ्यक्रम में बलराम द्वारा सम्पादित छोटी–बड़ी कथाएँ (2019), ईशान प्रकाशन दिल्ली, लघुकथा लहरी, लघुकथा कौस्तुभ (2020) राजकमल प्रकाशन दिल्ली में लघुकथाएँ। **कार्यशालाएँ** : संसाधक– हरियाणा साहित्य अकादमी (10), नेशनल बुक ट्रस्ट (4), केन्द्रीय विद्यालय संगठन : (6), निदेशक (6), विषय–विशेषज्ञ (1)।

शोध कार्य : एम. फिल. : मेरे सात जनम (2013, कुरुक्षेत्र वि.वि. से राजेश ढल द्वारा), असभ्य नगर (2020) कविता सालोदिया (द. हि. प्र. स. कर्नाटक), रामेश्वर काम्बोज की लघुकथाएँ (2021) मोनिका बहन कान्तिभाई प्रजापति (सरदार पटेल वि.वि. वल्लभ विद्यानगर–गुजरात)

सम्प्रति : केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य–पद से सेवानिवृत्त। वर्तमान में स्वतन्त्र लेखन।

सम्पर्क : 1. 1704 बी, जैन नगर, गली नं. 4/10, कश्मीरीब्लॉक, रोहिणी सेक्टर– 38, करावला, नई दिल्ली–110081/मो.09313727493/ई–मेल : rdkamboj@gmail.com

2. रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', सी–1702, जे एम अरोमा, सेक्टर–75, नोएडा–201301, उ.प्र.

।।लघुकथा में रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'।।

{लघुकथा के तमाम लेखकों और अध्येताओं ने लघुकथा में श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी के योगदान को निकट से देखा–समझा है। इस भाग में हम लघुकथा में हिमांशु जी के सामान्य योगदान, जिसमें उनका समग्र लघुकथा लेखन, संपादन, समीक्षा–समालोचना सब कुछ शामिल है, को रेखांकित करते कुछ मित्रों के आलेखबद्ध विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें लघुकथा के प्रति हिमांशु जी के समर्पण और व्यक्तित्व से जुड़े पक्ष पर भी चर्चा की है। आशा है सांकेतिक रूप में यह खण्ड लघुकथा में हिमांशु जी के समग्र योगदान को समझने के लिए पर्याप्त होगा।}

सुकेश साहनी

लघुकथा की विकास–यात्रा में
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' का अप्रतिम योगदान

हिंदी साहित्य के मौन साधक और मेरे अभिन्न मित्र 'हिमांशु' जी के लघुकथा विधा में योगदान पर टिप्पणी लिखना मेरे लिए खासा जोखिम भरा काम है। यहाँ एकाएक भाई योगराज प्रभाकर की एक बात याद आ रही है, एक बार दूरभाष पर बात बात में उन्होंने कहा था कि मेरे लिए सुकेश साहनी और रामेश्वर काम्बोज तो 'एक' ही हैं, उनकी इस बात को गंभीरता से लूँ तो मुझे लगता है इसी वजह से कुछ लोग मेरी इस टिप्पणी का वास्तविक मूल्य कम आँकेगे, जबकि इसी कारण यह कार्य मेरे लिए काफी चुनौतीपूर्ण भी है। काम्बोज जी से वर्षों की जुगलबंदी और मित्रता का नमक, जो मेरी रगों में दौड़ रहा है, उसके प्रभाव से पूर्णतया मुक्त होकर अपनी बात कह सकूँगा, ऐसा मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ।

शासकीय सेवा में मेरी पहली पदस्थापना आगरा में हुई थी, एक अंतराल के बाद पुनः लेखन में सक्रिय हो गया था, बहुत–सी पत्र–पत्रिकाएँ घर पर आने लगी थीं। इन पत्रिकाओं में छपी काम्बोज जी की रचनाओं ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा था। 'काम्बोज' उपनाम से विशेष जुड़ाव के कारण भी मैं पहले–पहल उनकी रचनाएँ पढ़ता था। तेरह–चौदह वर्ष की आयु में मैं जासूसी उपन्यास लिखने लगा था, विजय सीरीज़ के रचयिता प्रसिद्द उपन्यासकार वेद प्रकाश काम्बोज मेरे आदर्श थे, मेरा उनसे मिलना–जुलना भी था, उन्होंने ही मेरा ध्यान लघुकथा लेखन की ओर आकृष्ट किया था।

'तारिका' में प्रकाशित रामेश्वर काम्बोज जी की लघुकथाएँ पढ़कर उनके लेखन से बहुत प्रभावित हुआ था, तब यह भी भ्रम था कि वे वेद प्रकाश काम्बोज जी के परिवार से होंगे। इस तरह काम्बोज जी के रचनाकर्म से परिचय 1977 के आस–पास का है। काम्बोज जी से पहली मुलाकात कराने का श्रेय स्वर्गीय सतीशराज पुष्करणा जी को जाता है, पुष्करणा जी बरेली आए हुए थे, उन्होंने काम्बोज जी का जिक्र किया, तो हम दोनों तुरंत ही हिमांशु जी के सदर स्थित निवास की ओर चल दिए थे। उनसे पहली भेंट आज भी ताज़ा है। आज पुष्करणा जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन काम्बोज जी से मिलवाने के लिए मैं जीवन पर्यन्त उनका आभार मानता रहूँगा। प्रायः कहा जाता जाता है कि बहुत कम

साहित्यकार अपनी कथनी और करनी में एक होते हैं। काम्बोज जी अपने जीवन में भी अपने लेखन की तरह अनुशासित और खरे हैं। पहली मुलाकात के बाद हमारे मिलने–जुलने का सिलसिला चल निकला, जो समय के साथ और प्रगाढ़ होता गया। लघुकथा विषयक लेखन, संपादन और विभिन्न गतिविधियों में हमारी जुगलबंदी जारी है।

हिमांशु जी साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजनरत हैं, लेकिन लघुकथा के प्रति उनका विशेष लगाव रहा है, लघुकथा में उनके योगदान पर लिखा जाए तो टिप्पणी बहुत विस्तार ले लेगी, यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख समीचीन होगा–

(1) 'असभ्य नगर' काम्बोज जी का एकमात्र लघुकथा–संग्रह है। गुणवत्ता की दृष्टि से यह संग्रह लघुकथा–जगत के उन गिने–चुने संग्रहों में शामिल है, जिनमें बहुतायत में उत्कृष्ट लघुकथाएँ संकलित हैं। उत्कृष्ट लघुकथाओं के एकल संग्रहों की छोटी से छोटी सूची भी तैयार की जाय तो उसमें 'असभ्य नगर' अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराएगा। हिमांशु जी की लघुकथाएँ सर्जन के तप से जन्मी हैं, इसलिए इनकी संख्या एक संग्रह तक सीमित है। लघुकथा–जगत में उदाहरण के रूप में रमेश बतरा जैसे अतुलनीय हस्ताक्षर हैं, जो अपनी चंद लघुकथाओं के दम पर अमर हैं। वहीं उसी दौर के ऐसे रचनाकार भी हैं, जिनके कई लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं लेकिन उनमें कुल पाँच–दस उत्कृष्ट रचनाएँ भी ढूँढे नहीं मिलती। सृजन–यात्रा में काम्बोज जी निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से काम्बोज जी की लघुकथाएँ अपने समकालीन बहुत से प्रसिद्द लेखकों से बहुत बेहतर हैं। धर्म निरपेक्ष, गंगा–स्नान, दूसरा सरोवर, संस्कार, चक्र, मुखौटा, काग–भगौड़ा, खुशबू, छोटे–बड़े सपने, चिरसंगिनी, एजेंडा, खूबसूरत, कटे हुए पंख, प्रवेश–निषेध, कालचिड़ी, असभ्य नगर, धन्यवाद्, परख, शिक्षाकाल, उड़ान, टुकड़खोर, आत्महंता, खलनायक जैसी लघुकथाओं का रचयिता 'ऊँचाई' जैसी कालजयी लघुकथा का सृजन करता है। हिमांशु जी की 'नवजन्मा' जैसी लघुकथा उनके निरंतर विकासपथ पर अग्रसर होने का प्रमाण है।

(2) लघुकथा आलोचना के क्षेत्र में काम्बोज जी प्रारम्भ से ही सक्रिय रहे हैं, नए–पुराने सभी लघुकथा लेखकों के संग्रहों पर उन्होंने लिखा है, इसके अलावा लघुकथा के शास्त्रीय पक्ष पर उनके स्वतंत्र लेख हैं, जो लघुकथा सम्मेलनों अथवा पत्र–पत्रिकाओं के लिए लिखे गए हैं। आलोचना से सम्बंधित सभी लेख 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' नामक पुस्तक में संकलित हैं। उनके समीक्षा कर्म से विधा समृद्ध हुई है और नए लघुकथा लेखकों को मार्गदर्शन मिला है।

(3) शिक्षा जगत से जुड़े होने के कारण लघुकथा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की पहल काम्बोज जी द्वारा की गई, स्वर–संगम (कक्षा एक से आठ की पाठ्य–पुस्तिका) में अनेक लघुकथाओं का समावेश उनके द्वारा किया गया, जिसके अब तक अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

(4) वर्ष 2000 में लघुकथा डॉट कॉम की योजना बनी थी। प्राचार्य पद के दायित्वों के प्रति समर्पण और दूरस्थ क्षेत्रों में पोस्टिंग के चलते काम्बोज जी इसमें समय नहीं दे सकते थे, तब उनके पुत्र निशांत काम्बोज के सहयोग से वेब साइट की शुरुआत हुई। 2007 में काम्बोज जी का साथ मिलते ही इसे मासिक कर पाना संभव हुआ। तब से अब तक

प्रत्येक माह का अंक समय से प्रकाशित होता आ रहा है। आज लघुकथा डॉट कॉम जिस मुकाम पर है, उसके पीछे काम्बोज जी का समर्पण और श्रम प्रमुख है।

(5) लघुकथा के क्षेत्र में कदम रखने वाले नए लेखकों को प्रोत्साहित करने में हिमांशु जी अग्रणी हैं और इस बारे में कभी किसी से चर्चा तक नहीं करते। लघुकथा में नई पौध को विकसित करने में उनका अमिट योगदान है।

(6) लघुकथा विषयक अनेक पुस्तकों का संपादन उनके द्वारा किया गया है, लघुकथा डॉट कॉम से बाल मनोविज्ञान विषयक लघुकथाएँ, मेरी पसंद (तीन भाग) का संपादन हमारी जुगलबंदी में हुआ। हिंदी चेतना, उदंती, पुष्पांजलि के संपादन से जुड़े होने के कारण लघुकथा को प्रमुखता से मंच देने के लिए उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। अभिनव इमरोज़, हिंदी चेतना जैसी अनेक पत्रिकाओं के लघुकथा विशेषांक का संपादन उन्होंने किया, जो आज लघुकथा विधा की धरोहर कहे जाते हैं।

(7) बरेली में 11 एवं 12 फरवरी 1989 को आयोजित अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन को देश में वार्षिक लघुकथा सम्मेलनों के आयोजन का प्रस्थान बिंदु कहा जाना उचित होगा। इस आयोजन में पढ़ी गई रचनाओं और उस पर हुए विमर्श को रिकार्ड कर जस का तस 'आयोजन' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण हाल ही में अयन प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। यह कार्य भी हिमांशु जी के संपादन में पूर्ण हुआ। कहना न होगा कि बरेली सम्मेलन देश में विभिन्न स्थलों पर प्रति वर्ष लघुकथा सम्मेलनों के आयोजनों का कारण बना। एक दूसरे का साथ मिलने का प्रतिफल रहा कि हम बिहार और पंजाब में आयोजित लगभग प्रत्येक सम्मेलन में प्रतिभाग करते रहे। लघुकथा विमर्श में काम्बोज जी की बेबाक टिप्पणियाँ प्रतिभागियों द्वारा सदैव सराही गईं। भाषा को लेकर उनकी सारगर्भित टिप्पणियाँ नए–पुराने लेखकों को उनके लेखन में और सचेत रहने के लिए प्रेरित करती रहीं। कहना न होगा कि अपने लघुकथा लेखन से इतर विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभाग से उन्होंने विधा के विकास में आहुति दी है।

नए–पुराने लेखकों की लघुकथाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद, लघुकथाओं के ऑडियो, शार्ट फिल्म्स जैसी अनेकानेक गतिविधियाँ हैं, जिनमें उनके योगदान को रेखांकित किया जा सकता है। अंत में यही कहना चाहूँगा कि रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' साहित्य जगत का ऐसा हस्ताक्षर है, जिसका सत्संग हमें समृद्ध करता है। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे उनका संग–साथ मिला, जिससे मैं निरंतर लाभान्वित होता रहा हूँ। हमारी जुगलबंदी बनी रहे, साहित्य की दूसरी विधाओं के साथ–साथ लघुकथा में भी उनकी लेखनी चलती रहे, यही कामना है।

■ 185,उत्सव,महानगर पार्ट–2, बरेली–243122, उ.प्र./मो. 09634258583

भगीरथ परिहार

विविधता पूर्ण लेखन के सृजक : रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की ख्याति लघुकथा डॉट कॉम के

संपादक–प्रकाशक के रूप में है, जो उन्होंने सुकेश साहनी के साथ शुरू की थी। यह हिंदी लघुकथा की पहली वैब पत्रिका है। उनका लेखन काफी विविधतापूर्ण है। वे कविताओं से शुरुआत करते हैं, उपन्यास पर आते हैं, फिर लघुकथा लेखन पर जमते हैं कुछ समय; लेकिन वहाँ ही नहीं ठहरते, वे बालकथा लेखन और हाइकु लेखन की ओर मुड़ते हैं और वहीं के होकर रह जाते हैं। हाइकु लेखन में वे बेहतरीन हैं।

वह एम.ए., बी.एड. की शिक्षा प्राप्त कर केंद्रीय विद्यालय में हिंदी शिक्षक बने और प्रिंसिपल होकर सेवानिवृत हुए। तभी तो उन्होंने 'भाषा–चन्द्रिका' नाम की व्याकरण की विद्यार्थियोपयोगी पुस्तक लिखी।

'असभ्य नगर' उनका एकमात्र लघुकथा संग्रह है, जिसमें 67 लघुकथाएँ संग्रहित हैं। उनकी बहुत–सी रचनाओं को लेखकों ने 'मेरी पसंद' (लघुकथा डॉट कॉम) में पसंद कर, उन पर टिप्पणी की है। बाद में यह इसी नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित हुई है। वे कई लघुकथा सम्मेलनों में मेरे साथ रहे हैं और हम व्यक्तिशः एक–दूसरे को जानते हैं। वे मृदुल स्वभाव के हैं और लोगों को अपना बनाने में ज्यादा वक्त नहीं लेते।

उनका लघुकथा लेखन 1972 से आरम्भ हुआ, जब जगदीश कश्यप ने उनसे 'मिनीयुग' के लिए लघुकथा माँगी। इनकी पहली लघुकथा 'इंतजार' मिनीयुग में प्रकाशित हुई तब से ये सिलसिला चला आ रहा है।

रामेश्वर काम्बोज हिमांशु और सुकेश साहनी के संयुक्त संपादन में दो महत्वपूर्ण लघुकथा संकलन प्रकाशित हुए, जिनका जिक्र यहाँ जरुरी है– 'बाल मनोवैज्ञानिक लघुकथाएँ' व 'जीवन मूल्यों की लघुकथाएँ'। इनमें विषय से सम्बन्धित बेहतरीन लघुकथाएँ संकलित हैं, जो बाल मनोविज्ञान को सूक्ष्मता से पकड़ते हैं और जीवन मूल्यों की पैरवी करते हैं।

पहले संस्करण में 'अपनी बात' में हिमांशु लिखते हैं, 'फूल अलग–अलग रंग का होने से अपनी खुशबू नहीं खो देता, अपना सौन्दर्य नहीं छोड़ देता। पत्तियों का विविध आकार 'पत्ती' होने का सौन्दर्य है यदि आदमी का इन पर वश होता तो वह सबको तहस–नहस कर देता या एक जैसा रंग–रूप–आकार देकर विविधता का सौन्दर्य छीन लेता, उसे कुरूप बना देता।' इस आधार भूमि से हम उनकी बात ठीक से समझ सकते हैं।

'हिमांशु' साहित्य के जरिये जिन मूल्यों को आगे बढ़ाते हैं, उनमें धर्म–निरपेक्षता, एक अहम मूल्य है। 'आदमी मूलतः एक है उसे किसी भी प्रकार से विभाजित करना, उसकी आदमियत को छीनना है। राजनीति, सम्प्रदाय, देश, प्रान्त व धर्म गुरु उसी आदमियत को छीन रहे हैं, जिसे बचाने के लिए वे संकल्प लेते हैं।' धार्मिक उन्मादी न केवल पूजा स्थल जलाते हैं बल्कि 'ठीक से जीने की कोशिश में संघर्षरत आदमी को भी जलाते हैं।' इस सन्दर्भ में उनकी लघुकथा 'धर्मनिरपेक्ष' का जिक्र जरुरी है। धार्मिक उन्मादी गाली से छूटे सीधे छुरे पर आकर एक–दूसरे को धराशायी कर देते हैं। जमीन खून से नम हो गई। 'कुत्ते ने पास आकर दोनों को सूँघा, कान फड़फड़ाये, बारी–बारी दोनों के ऊपर पेशाब किया फिर सूखी हड्डी चबाने लगा।' कुत्ता उनकी मूर्खता पर पेशाब कर देता है।

वे खुद्दारी को स्वाभिमान का अहम मूल्य मानते हैं। 'गंगा–स्नान' की सत्तर साला बुढ़िया सिलाई कर पेट पालती है और सरकारी वृद्धावस्था पेंशन भी लेने से इंकार कर देती

है। जब कन्या पाठशाला खोलने की बात आती है तो उसने गंगा स्नान के लिए बचाए तीन सौ रुपये दान में दे दिए। उसकी नजर में पाठशाला खोलना 'गंगा–स्नान' के बराबर है।

'पिघलती हुई बर्फ' में पति–पत्नी के बीच की तकरार सम्बन्ध विच्छेद तक आ पहुँचती है लेकिन प्रेम की प्रगाढ़ता के कारण वे अंतिम बिंदु पर फिर एक हो जाते हैं। प्रेम दाम्पत्य जीवन का आधार है।

सामाजिक और सकारात्मक लघुकथाओं में सर्वप्रथम 'ऊँचाई', पिता की ऊँचाई तक बेटे कभी नहीं पहुँच सकते। बहुप्रचारित और बहुप्रशंसित इसे इनकी प्रतिनिधि रचना भी कह सकते हैं। 'चक्रव्यूह' अभावों की विवशताओं से उपजे दर्द को व्यक्त करती है। जीवन में अभावों के फैलते रेगिस्तान उसे न बेटे का इलाज करने दे रहे हैं न पिताजी की कोई मदद। 'खुशबू' की शाहीन अपने भाइयों की पढाई, नौकरी, शादी आदि के लिए अपने बेहतरीन साल भेंट कर देती है और स्वयम् अकेलेपन को अंगीकार कर लेती है। परिवार के सदस्यों के लिए त्याग एक महत्वपूर्ण जीवन–मूल्य है, जो अब धीरे–धीरे कम होता जा रहा है।

'नवजन्मा' लड़की को लेकर सब तरफ चिंता पसरी पड़ी थी। पहले तो पिता तनाव में आ जाता है लेकिन पत्नी और पुत्री का चेहरा देखकर उत्साह और उमंग से भर जाता है। पिता जिलेसिंह ढोली को बुला लाया, नवजन्मी के सिर पर नोट फेरकर ढोल बजाते ढोली को दे दिए यानी लड़की के जन्म पर जमकर जश्न मना लिया। कथ्य भले ही नया न हो लेकिन इसका प्रस्तुतिकरण अद्‌भुत है।

'कटे हुए पंख' में निरंकुश बादशाह प्रतिरोध को रोकने के लिए तोते के पंख काट देता है ताकि वह फड़फड़ाये परन्तु उड़ नहीं सके। 'असभ्य नगर' का मूल कथ्य है कि जंगल हमेशा नगरों से अधिक सभ्य रहे हैं। शहर में आदमी को आदमी जब चाहता है, क़त्ल कर देता है। रोज अख़बार हत्या, बलात्कार, लूटपाट, आगजनी के समाचारों से भरे रहते हैं। आदमी तो जानवर से भी ज्यादा जंगली और असभ्य है।

मूल्यहीन राजनीति का वे अपनी लघुकथाओं में बराबर व्यंग्य के माध्यम से विरोध करते हैं। 'मुखौटा' में नेताजी चुनाव जीतने के लिए नए मुखौटे की तलाश में हैं। बीमार नेता के 'उपचार' के लिए प्रांतीय अध्यक्ष की कुर्सी लाकर उस पर नेताजी को बैठाया तो उनकी चेतना लौट आई। किसान ने खेत में 'काग भगौड़ा' की जगह नेता का पुतला टाँग दिया। अब जीव–जन्तु पास आने का साहस नहीं जुटा पाए। 'अर्थ परिवर्तन' में बापू अपने बंदरो से मिलने चल पड़े जिसने आँख बंद कर ली उसे न्याय व्यवस्था का जिम्मा, मुँह बंद करने वाला आम आदमी था जिसे चुप ही रहना है और नहीं सुननेवाला मंत्री बना दिया गया है। वैश्या के अड्डे पर भी राजनीति का 'प्रवेश निषेध' है। राजनीति छूत की बीमारी है जो मरने पर ही जाती है। 'राजनीति' कूटनीति और अपराध को बढ़ाते हैं। राजनीति में आपके विश्वसनीय कार्यकर्त्ता ही आपको पटखनी दे देते हैं। धूर्तता अब एक मूल्य है, जिसे आदमी से सीखा जा सकता है। इसलिए धूर्तता की 'नयी सीख' सीखने के लिए भेड़िया आदमी के बच्चे को उठाकर ले जाता है। हीरोइन बनाने के चक्कर में 'स्क्रीन टेस्ट' के बहाने उसका यौन शोषण होता है। 'अश्लीलता' में जिस काम कुंठित रामलाल की अगुवाई में भीड़ मूर्ति को तोड़ने आई थी, वही रामलाल चाँदनी रात में चुपके से उस सुन्दर मूर्ति के सुडौल कोमल अंगों से लिपट जाता है।

मेरी दृष्टि में उनकी निम्न लघुकथाएँ उत्कृष्ट श्रेणी की लघुकथाएँ हैं– ऊँचाई, चक्रव्यूह, खुशबू, असभ्य नगर, धर्मनिरपेक्ष, गंगा–स्नान, पिघलती हुई बर्फ, कटे हुए पंख, नवजन्मा और राजनीति; जिन्हें मानक लघुकथाओं के तौर पर याद किया जाता रहेगा।

हिमांशुजी कविता की कुछ पंक्तियों से इस लेख का समापन करना चाहूँगा–

हवा में फिर से घुटन है आजकल
रोज सीने में जलन है आजकल।
घुल रही नफरत नदी के नीर में
नफरतों का आगमन है आजकल।। ('अंजुरी भर आसीस' कविता संग्रह से.)

■ 228, नयाबाजार कालोनी रावतभाटा–323307, राजस्थान/मो. 09414317654

डॉ. बलराम अग्रवाल

सही अर्थों में बड़े भाई और
हितैषी मित्र हैं हिमांशु जी

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी हमारे समय के गंभीर और कर्मठ रचनाकार व चिंतक हैं। कथा, काव्य, व्याकरण, बाल साहित्य आदि अनेक विधाओं में वे निरंतर रचनारत हैं। संपादन की कला में भी वे निष्णात हैं। कथा व काव्य की अनेक विधाओं में उनके द्वारा संपादित/सह–संपादित पुस्तकें समय–समय पर आती रही हैं और आयु के 74वें वर्ष में भी उनका यह कार्य लगातार जारी है। मैत्री और निःस्वार्थ सहयोग उनके व्यक्तित्व के ऐसे पक्ष हैं जो उनके व्यक्तित्व की निश्छलता, प्रखरता और 'ऊँचाई' को एक साथ अभिव्यक्ति देते हैं।

मैं डाक विभाग की इंटरनल ऑडिट सेवा (वहाँ यह विभाग 'बचत बैंक नियंत्रण संगठन' कहलाता है, जबकि स्वयं वही नियंत्रित रखा जाने लगा है और बदली हुई परिस्थितियों में निपट अप्रासंगिक हो गया है) में रहा हूँ, जिसके कारण चीजों/बातों को सन्देह की नजर से देखने की आदत–सी बन गयी है। काम्बोज जी अनेक वर्षों तक केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य पद पर कार्यरत रहे हैं। ऐसे महत्त्वपूर्ण पद पर व्यक्ति ऊपरी आदेशों के परिपालन हेतु बाध्य रहता है। दूसरी ओर कुछेक कुटिल अधीनस्थों की स्वार्थपरक और संवेदनहीन कार्यपद्धति से भी उसे लगातार दो–चार होते रहना पड़ता है। स्थितियों–परिस्थितियों को मैनेज करने की प्रशासनिक त्वरा भी उसमें पनप जाती है। यह प्रशासनिक त्वरा उसके स्वभाव में अनचाहे ही शंकालुता को भी प्रश्रय दे देती है। कई बार वह सहज सामान्य बातों के प्रति भी शंकालु हो उठता है। ऐसा (उनके बारे में नहीं) अपने बारे में अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ।

काम्बोज जी के अनुसार, उनकी पहली लघुकथा 'इन्तजार' जगदीश कश्यप के आमंत्रण पर मिनीयुग के (सम्भवतः अक्टूबर 1972 में प्रकाशित) पहले अंक हेतु 29 जून 1972 को लिखी गयी थी। 1998 में प्रकाशित लघुकथा संग्रह 'असभ्य नगर' में उनकी कुल 62 लघुकथाएँ संगृहीत हैं। इन्हीं में कमीज, एजेण्डा, धारणा, खूबसूरत तथा नवजन्मा शीर्षक

5 लघुकथाएँ और जोड़कर 2013 में 'असभ्य नगर और अन्य लघुकथाएँ' का प्रकाशन किया गया था। उनके सृजन पक्ष को देखने पर पता चलता है कि 1998 के बाद 2013 तक काम्बोज जी लघुकथा से इतर हाइकु, हाइगा, ताँका, सेदोका, चौका, बालकथा तथा व्याकरणादि शिक्षापरक पुस्तकों के लेखन व संपादन पर अधिक केन्द्रित रहे। पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने की दिशा में तो वे संलग्न रहे ही होंगे।

काव्य की नवीन विधाओं में काम्बोज जी निरन्तर रचनारत रहे हैं और उन्होंने काव्य को ही अपनी मुख्य विधा बनाए रखा है। बावजूद इसके, सुकेश साहनी के साथ लघुकथा डॉट कॉम के उनके स्थापना–कार्य (सन् 2008) ने हिन्दी लघुकथा को विश्व–पटल पर उपस्थित होने का गौरव प्रदान किया है। जैसाकि परस्पर बातचीत में अक्सर वह बताते रहे हैं कि लघुकथा डॉट कॉम उनके या सुकेश दम्पती के लिए ही नहीं, काम्बोज जी के सुपुत्र और उसके स्टाफ के लिए भी अक्सर 'फुल टाइम जॉब' होता है। वह बताते हैं– 'जब तक अंक पूरा तैयार न हो जाए, बेटे के ऑफिस में कोई अन्य कार्य नहीं किया जाता।' एक ऐसे कार्य को, जिसमें धन और श्रम को सिर्फ व्यय ही किया जाना है, गत 14 वर्षों से निरन्तर गुणवत्ता के साथ सम्पन्न किये रखना सिर्फ और सिर्फ उनकी साहित्य–निष्ठा और मैत्री–भाव से ही सम्भव हो रहा है। ऐसा इसलिए कि स्वयं काम्बोज जी ने 'अध्ययन और सकारात्मक सोच' तथा 'निष्ठापूर्वक सृजनरत' रहने को लघुकथा के उत्तरोत्तर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक माना है।

काम्बोज जी ने अनेक लघुकथा संग्रहों की भूमिका लिखी है और अनेक संग्रहों–संकलनों की समीक्षा भी की है। उनमें से अधिकतर को उन्होंने 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' (2018) में संकलित किया है। इन लेखों/समीक्षाओं में आए उनके विचार लघुकथा की विधागत शास्त्रीयता को समझने के लिए बहुत उपयोगी हैं। उनमें से कुछ लेख फैलाव की चिन्ता के कारण किंचित छोटे रह गए लगते हैं; लेकिन सब के सब उपयोगी हैं।

कम्प्यूटर संबंधी किसी भी दुविधा के लिए मैं उन्हें ही फोन करता हूँ और समाधान भी पाता हूँ। कई ऐसे लेखकों से, जिनकी चालाकियों और स्वार्थपरक नीतियों का वे शिकार हो चुके हों, निकट मित्रों को सावधान करने में वे तनिक भी देर नहीं लगाते हैं। मैंने पाया है कि वह सावधान करना उस शख्स की निराधार निंदा का हिस्सा कतई नहीं होता है। काम्बोज जी सही अर्थों में बड़े भाई और हितैषी मित्र हैं। वे लगातार स्वस्थ और सक्रिय रहें, शुभकामनाएँ।

■ एम–70, निकट जैन मन्दिर, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032/मो. 08826499115

डॉ. अशोक भाटिया

हिमांशु की लघुकथाओं में रचनात्मक युक्तियाँ

एक रचनाकार के लिए संवेदना और शिल्प–कला का होना नितांत आवश्यक है, उतना ही महत्व उसके दृष्टिकोण और सरोकारों का होता है। सामने मौजूद दृश्य–जाल को रचनाकार अपने दृष्टिकोण द्वारा ही विवेक–सम्मत रूप में समझ–सुलझा पाता है। और सरोकार

ही न हों तो सब कुछ बेमानी हो जाता है। इन चारों को किसी भी क्रम में रख लें, महत्व चारों का है। इन पर विस्तार से लिखा जा सकता है। यहाँ रामेश्वर काम्बोज हिमांशु की कुछ लघुकथाओं पर चर्चा करते हैं।

लेखक जब रचनात्मक जरूरत के मुताबिक अपनी रचना को बुनता है तो उसमें आए संतुलन का सौंदर्य पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ने में सक्षम होता है। हिमांशु की 'काल चिड़ी' और 'एजेंडा' लघुकथाओं की बुनावट में लेखक की युक्ति को देख सकते हैं। 'काल चिड़ी' में जहाँ वाक्य आता है– 'कितने अच्छे लोग हैं सब।' उन सबका प्रतिनिधित्व तीन पात्रों से करवाया गया है– स्कूली दिनों के आदर्श शिक्षक अरोड़ा, कॉलेज में प्रो. सिंह और घर में पिता।

'काल चिड़ी' लघुकथा में छिपी ध्वनियों को सुनने की जरूरत है, जिन्हें अभी तक आलोचना में उभारा नहीं गया। रचना यथार्थ का समुचित प्रतिनिधित्व करते हुए बलशाली हो जाती है। साँवली शुचिता को देखने आने वालों पर ये दो पंक्तियाँ बहुत कुछ कह जाती हैं– ''साधारण कद–काठी का अकड़कर चलता हुआ युवक। साथ में नाक–भौं सिकोड़ते माता–पिता। घर में जैसे सन्नाटा छा गया।'' इससे लेखक की अभिव्यक्ति सामर्थ्य का पता तो चलता ही है, साथ ही आज के दौर में मध्यवर्गीय बीमार मानसिकता को भी इतिहास में जैसे दर्ज कर दिया गया है।

लड़के की अकड़ याद रखें और जलपान के बाद शुचिता के पिता द्वारा कहे ये शब्द देखें– ''आपका बेटा तो बहुत होनहार है।'' यह बीमार समाज की निशानी है, जहाँ लड़की का, तिस पर साँवली लड़की का पिता ''अबकी बार लगभग गिड़गिड़ाते हुए पूछता है– 'हमारी बेटी कैसी लगी आपको?' यह सदियों से चली आ रही व्यथा–कथा को वाणी देने का सफल प्रयास है। शुरू में जिस काली चिड़िया द्वारा आईने पर चोंच मारने आने से शुचिता खीझ उठती है कि उसे आईने से इतनी चिढ़ क्यों है, अंत में शुचिता उसी चिड़िया को उड़ाने की चेष्टा नहीं करती। काली चिड़िया शुचिता जैसी लड़कियों की प्रतीक बन जाती है। आईना बाहरी रूप–रंग का, सतहीपन का प्रतीक बन जाता है, जिसका विरोध चिड़िया रूप में शुचिता द्वारा किया जाता है। इस प्रकार 'काल चिड़ी' लघुकथा विशेष संदर्भ में अपने देश और काल का बोध कराती हुई विशिष्ट कोटि की लघुकथा बन जाती है। रचना को रस्म अदायगी के तौर पर नहीं बल्कि डूबकर पढ़ने की जरूरत होती है।

संवेदना केवल रचनाकार में नहीं, पाठक में भी होनी चाहिए। रचनाकार अपनी रचनाओं के द्वारा पाठकीय संवेदना को परिष्कृत करता है। दृष्टिकोंण और सरोकार रचनाकार में ही नहीं आलोचक में भी होने अनिवार्य हैं। तभी वह रचना का सही मंतव्य पाठक तक पहुँचा पाता है। लघुकथा क्षण–भर की ही नहीं होती, कई बार वह एक क्षण–विशेष में ही सदियों की उदात्त यात्रा करा देती है। विश्वास ना हो तो ऊँचाई लघुकथा को एक बार फिर पढ़ लो। इसमें निम्न मध्यवर्ग का विवेकशील पिता अपनी व्यावहारिकता से पाठक को बता जाता है कि 'ऊँचाई' क्या होती है। गाँव में सरल जीवन बिताने वाले पिता को एहसास हो जाता है कि उनका बेटा शहर में किस स्थिति में रह रहा है। लेकिन पढ़ा–लिखा नौकरीपेशा शहरी बेटा नहीं जान पाता कि उसके बाबूजी क्यों आ रहे हैं? उसे लगता है कि बाबूजी पैसे माँगने आए होंगे। यहाँ पहले आप

पिता की संवेदना की ऊँचाई देखें, जब खाने के बाद वे बेटे से कहते हैं– ''तीन महीने से तुम्हारी कोई चिट्ठी तक नहीं मिली। जब तुम परेशान होते हो, तभी ऐसा करते हो।'' ये पंक्तियाँ बेटे को ही नहीं, पाठक को भी हतप्रभ कर देती हैं। संवेदना यहाँ पाठक के मन में प्रवेश कर उसे प्रकाश से भर देती है। तब बेटे के हलक में शब्दों का फँसकर रह जाना और नजरों का झुकना स्वाभाविक ही था।

अधिकतर हिंदी लघुकथाओं में संवादों की भाषा को सहजता से कोसों दूर देखकर आमतौर पर निराशा होती है। कृत्रिम शब्दावली सहजता से कोसों दूर, लेखक की ही शब्दावली में लिख मारे गए ऐसे संवाद एक ऊब पैदा करते हैं। यहाँ हिमांशु की लघुकथा 'पिघलती हुई वर्फ' की चर्चा करना जरूरी है। इस रचना के संवादों से नई पीढ़ी को सीखना चाहिए कि कितने कम शब्दों में लेखक ने कितने जीवंत संवाद रचे हैं। अब जरा पति–पत्नी के संवादों के द्वारा दोनों की मानसिकता को परखें। पत्नी शुरू से अंत तक सकारात्मक सोच लिए हुए है और झगड़े का अंत चाहती है। पति कुछ हद तक परंपरागत सोच का स्वामी है, उसके संवादों में एक अहंकार का स्पर्श मौजूद रहता है। यह रचना यथार्थ से इच्छित यथार्थ तक की यात्रा तय करती है।

हिमांशु की एक लघुकथा 'एजेंडा' भारतवर्ष के सरकारी कार्यालयों–निदेशालयों के छोटे–बड़े कार्यक्रमों के खोखलेपन और उसके पीछे छिपी कुत्सित योजनाओं को सलीके से कहने वाली श्रेष्ठ और संपन्न रचना है। किसी भी कर्मचारी को कार्यक्रम के एजेंडे का न पता है, न हीं कोई एजेंडा है। एजेंडा तो सिर्फ चीफ साहब और छोटे साहब का है, जिनकी जेब में चुपके से नोटों की गड्डियाँ खिसका दी जाती हैं। जरा इस रचना की बुनावट और शब्दावली पर गौर करें। 'काल चिड़ी' की भाँति यहाँ भी केवल तीन अफसरों के भाषणों की दो–दो पंक्तियों से काम चलाया गया है और निष्कर्ष– ''अफसर बारी–बारी से कुछ न कुछ बोलते जा रहे थे।'' मंच से कहा गया कि 'आप देश की नींव हैं', 'समाज की रीढ़ हैं'। बैठक खत्म होने पर साहब निर्देश देते हैं– ''इस भीड़ को भोजन के लिए हाल में हाँककर लेते जाओ।'' शब्दावली की तुलना आप स्वयं करके निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

साहब जब चार लोगों को चीफ साहब के पास ले जाते हैं तो साहब व्यंजना शब्द–शक्ति का सटीक प्रयोग करते हैं– ''ये बहुत काम के आदमी हैं। बाढ़, सूखा, भूकंप आदि जब भी कोई त्रासदी आती है, ये बहुत काम आते हैं।''

क्या यह अंश कथा में प्रक्षेप है, ठूँसा हुआ है? नहीं, यह रचना में विडंबना की स्थिति को अधिक ज्वलंत और जीवंत रूप में उभारने में 'उत्प्रेरक' का काम करता है। जब बड़े नोटों की तीन गड्डियाँ बड़े साहब की जेबों में धकेली जाती हैं, तो सारे संदर्भ स्पष्ट होते चले जाते हैं और भ्रष्टाचार का एक बड़ा और भयावह परिदृश्य पाठक के जहन में बनने लगता है। तिस पर विडंबना यह है कि बड़े साहब 'परहेजी खाना' लेते हैं। भ्रष्ट मानसिकता इतनी उच्च और परिपक्व कि जेबों में नोटों की गड्डियाँ पड़ रही हैं, पर चीफ साहब इस सबसे निर्विकार सॉफ्ट ड्रिंक की चुस्कियाँ लेते रहे। इस विषय पर 'एजेंडा' संभवत हिंदी की श्रेष्ठ लघुकथा है।

■ 1882, सेक्टर–13, करनाल–132001, हरियाणा / मो.09416152100

डॉ. जितेन्द्र जीतू

जिले सिंह ने जीत लिया दिल

'नवजन्मा' रामेश्वर काम्बोज़ 'हिमांशु' जी की लघुकथा क्लासिक है। किसी भी लघुकथा को क्लासिकल का दर्ज़ा यों ही नहीं मिल जाता, इसके लिए लघुकथा को समय की पंगत में जाकर बैठना पड़ता है। लघुकथा को समय की पंगत में जगह यों ही नहीं मिल जाती, इसके लिए लघुकथाकार को उस काल/समय की नब्ज़ पर हाथ रखकर बड़ी कार्यवाही करनी होती है। वह बड़ी कार्यवाही होती है शिल्प, संवेदना, कथानक और पात्रों के स्तर पर लघुकथा को ऊँचाइयों पर लेकर आना। परिश्रम सभी लघुकथाओं पर किया जाता है; किन्तु निर्णय 'काल' लेता है कि कौन–सी लघुकथा क्लासिक का दर्ज़ा हासिल कर सकेगी। वास्तव में इस बात से लेखक भी अनजान ही होता है कि उसकी कौन–सी रचना 'काल' के बैरियर को तोड़ पाएगी।

'नवजन्मा' का मुख्य किरदार है जिले सिंह। लघुकथा का कथानक यों है कि जिले सिंह की पत्नी एक बच्ची को जन्म देती है। समस्या यहीं से शुरू होती है। दादी नाराज़, ननद परेशान। दादी इसलिए कि अब न जाने किसके पैरों में पगड़ी रखनी पड़े। ननद इसलिए कि अब नेग नहीं मिलेगा। लड़का होता तो ज्यादा मिलता। वे जिले सिंह को भी प्रभावित करने की कोशिश करती हैं। जिले सिंह जब अपनी पत्नी और नवजन्मा को देखने कमरे में जाते हैं तो पत्नी शर्मिंदा होती दिखती है। जिले सिंह घर से बाहर चले जाते हैं। जब लौटते हैं तो ढोल वाला साथ होता है। वे उसे ढोल बजाने को कहते हैं। ढोल बजता है और वे नोट निकालकर बच्चे पर वार–फेर करते हैं। इस तरह लघुकथा सन्देश देती है कि भाई, लड़का–लड़की एक समान।

लघुकथा में मुख्य किरदार है जिले सिंह। पत्नी है मनमीत। एक दादी हैं, एक बहिन है, जिसका नाम है फूलमती। माँ भी है। लघुकथा के हिसाब से किरदारों की संख्या अधिक है पर मज़ाल है जो एक भी पात्र अधिक लगता हो। शुरू में जिले सिंह की एंट्री होती है, वह घर में घुसता है तो सन्नाटा पसरा हुआ होता है। यहाँ दादी की एंट्री होती है। वो बच्ची के जन्म लेने पर उदास है। तभी बहिन फूलमती आती है, वह भी बच्ची के जन्म लेने पर कमेंट करती है। माँ की एंट्री अब तक हो चुकी है लेकिन वह कुछ बोलती नहीं। जिले सिंह तमतमाया हुआ अपनी पत्नी मनमीत के कमरे में घुसता है। मनमीत बोलती नहीं लेकिन बच्ची पैदा होने पर उसे भी अपराधबोध–सा है। इस तरह लघुकथा अभी आधे तक भी नहीं पहुँची और पाँच चरित्र प्रवेश कर गए हैं, जिनमें से तीन के पास बाक़ायदा अपने डायलॉग हैं। इनमें से एक भी चरित्र ऐसा नहीं है, जिसे ज़बरन घुसाया गया हो अथवा लेखक की मर्ज़ी अथवा बिना मर्ज़ी के लघुकथा में ज़बरदस्ती घुसा हो। इनमें से कोई पात्र ऐसा नहीं है, जिसकी भूमिका ख़त्म की जा सके। दादी को हटाते हैं तो पाठकों को दी जा रही यह सूचना भी हटानी पड़ेगी कि तत्कालीन समय में स्त्री के जन्म के वक़्त खुद घर की औरतें तक

कितनी दुखी होतीं थीं। बहिन को हटाते हैं, तो नेग जैसी परंपरा तक पाठक कैसे पहुँचेंगे, जो लड़के के जन्म लेने पर भाई अपनी बहिन को देता था। बहिन का डायलॉग दादी को नहीं दिया जा सकता गोकि नेग छोटों को मिलता था, बड़ों को नहीं।

लघुकथा में एक सिख परिवार का वातावरण है। काल वह मानिए जब सौ का नोट ढोलक वाले को ज्यादा खुश होने पर दिया जाता था। लघुकथा में पात्रों द्वारा बोली गई भाषा उनकी अपनी भाषा है। संवाद सहज और प्रवाहमय हैं। लेखक द्वारा ठूँसे हुए नहीं हैं, उनमें मौलिकता है।

लघुकथा के एक पात्र का ज़िक्र नहीं हुआ, वह है सन्तु ढोलिया। वह मूक पात्र है। बस उसकी ढोलक बोलती है। मज़े की बात है कि ढोलक लघुकथा का पात्र न होने के बावजूद खूब बोलती है। लेखक उससे बुलवाता भी खूब है। ज़िले सिंह को नचाना जो होता है। ढोल पर जिले सिंह ही नहीं नाचता, हर वह आदमी नाचता है, जिसके घर लड़की ने जन्म लिया होता है। इस तरह यह लघुकथा आज भी प्रासंगिक है। बेशक़ आज लड़कियों के जन्म पर स्यापा न दिखता हो, बेशक़ आज उनका जन्मदिन मनाया जाने लगा हो; लेकिन तत्कालीन परिस्थितियों को लेकर लिखी गई रचना को परिस्थितियाँ बदलने पर भी ख़ारिज नहीं किया जा सकता। हालांकि परिस्थितियाँ सर्वत्र बदली हों, ऐसा नहीं लगता।

जब भी 'जिले सिंह' का ज़िक्र होगा, नवजन्मा लघुकथा याद आएगी और दुनिया के सत्पुरुषों को अपनी मूछें उमेठने का मौका मिलेगा।

■ कविकुल, खरवन्दा निवास, स्टेशन रोड, बिजनौर–246701, उ.प्र./मो. 08650567854

सुदर्शन रत्नाकर

रा. का. 'हिमांशु' का बहुआयामी योगदान

साहित्य की लगभग सभी विधाओं में पारंगत, लघुकथा के शीर्ष स्तम्भों में एक रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' साहित्य जगत् में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनका कार्यक्षेत्र विस्तृत है। लघुकथा को ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उनका योगदान अविस्मरणीय है, अवर्णनीय है। उनकी कुछ लघुकथाओं पर शॉर्ट फ़िल्में भी बन चुकी हैं, जो अत्यंत सराही गई हैं। स्वयं तो उन्होंने उत्कृष्ट लघुकथाओं का सृजन कर साहित्य जगत को कालजयी रचनाएँ दी ही हैं, इसके साथ ही लघुकथा को स्थापित करने, विस्तृत आकाश देकर लोकप्रिय बनाने के उनके प्रयास सराहनीय हैं। नए लेखकों को इस क्षेत्र में उतारने और स्वस्थ, स्तरीय लेखन के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करने एवं प्रकाशित करवाने का जो दायित्व वे निभा रहे हैं, वह केवल एक स्वार्थहीन व्यक्तित्व ही कर सकता है। इण्टरनेट पर लघुकथा डॉट कॉम वेबसाइट के माध्यम से वह लघुकथाकारों को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। यह एक ऐसा मंच है जहाँ विख्यात एवं स्थापित वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ नवलेखकों को स्थान देकर उत्साह बढ़ाने का काम वे बखूबी पूरा कर रहे हैं। रचनाकारों की लघुकथाओं को देश की अन्य भाषाओं में अनुवाद करवाने का बीड़ा भी उठाया है, जिससे पाठकों की संख्या

बढ़ी है। इसके साथ ही लघुकथा के संयुक्त संकलनों के माध्यम से उन लेखकों को भी अवसर प्रदान कर रहे हैं, जो प्रकाशन के क्षेत्र में नए हैं। अनंत शुभकामनाएँ।

■ ई–29, नेहरू ग्राउंड, फ़रीदाबाद–121001, हरि../मो. 09811251135

डॉ. जेन्नी शबनम

लघुकथा में 'हिमांशु' जी का अतुलनीय योगदान

साहित्य–जगत् में श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' किसी परिचय के मोहताज़ नहीं है। गद्य और पद्य दोनों विधा पर इनका समान रूप से अधिकार है और लेखन के हर क्षेत्र पर काम्बोज जी की गहरी पकड़ है। उनकी कलम से कोई विषय अछूता नहीं है। गद्य में कथा, कहानी, लघु उपन्यास, लघुकथा, बाल कथा, नाटक, आलोचना, समालोचना, लेख, व्यंग्य आदि हर विषय पर इन्होंने लेखन किया है। पद्य में दोहे, छन्द, मुक्तक, कविता, बाल कविता, क्षणिका, माहिया, जापानी छन्द की कविताएँ जैसे हाइकु, हाइगा, सेदोका, ताँका, चोका आदि पर इन्होंने व्यापक लेखन किया है।

काम्बोज जी न सिर्फ़ लेखक हैं; बल्कि सेवानिवृत्त प्राचार्य होने के नाते शिक्षक की तरह हम लोगों को भाषा और लेखन के गुर सिखाते हैं। जापानी काव्य विधाओं को हिन्दी में लेखन का प्रसार और विस्तार कर न जाने कितने लेखकों को इन्होंने पारंगत बनाया है। काम्बोज जी द्वारा लिखित हिन्दी व्याकरण की पुस्तक पाठ्यक्रम में शामिल है। इन्होंने अनेकों पुस्तकों का सम्पादन किया है, जिसमें गद्य और पद्य दोनों शामिल हैं। काम्बोज जी के लेखन और कार्य का इतना विविध और विस्तृत आयाम है कि सभी पर एक साथ चर्चा करना संभव नहीं है।

लघुकथा और लघुकथा की विकास–यात्रा में रामेश्वर काम्बोज जी का अपरिमित योगदान है। काम्बोज जी द्वारा लिखित पुस्तक 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' लघुकथा–समालोचना पर एक विशेष और उल्लेखनीय पुस्तक है। काम्बोज जी के लेख 'लघुकथा के विविध आयाम', 'लघुकथा : कुछ अनुत्तरित प्रश्न', 'लघुकथा और भाषिक प्रयोग', 'लघुकथा में समालोचना का भविष्य', 'लघुकथा में समीक्षा : वर्तमान चुनौतियाँ', 'लघुकथा की सृजनात्मक–प्रक्रिया', 'इन्टरनेट और लघुकथा', 'मेरी रचना–प्रक्रिया! लघुकथा के सन्दर्भ में' जिसे पढ़ना हर लघुकथाकार, विशेषकर नवोदित लेखकों के लिए ज़रूरी है।

रामेश्वर काम्बोज जी अपने लेख 'मेरी रचना–प्रक्रिया! लघुकथा के सन्दर्भ में' में लिखते हैं, ''जब तक कोई संवेदनशील क्षण, प्रसंग, या घटना मेरे सामने न रही हो, तब तक मैंने लिखने की मशक्कत नहीं की।'' जून 1972 में इन्होंने अपनी पहली लघुकथा 'इंतज़ार' लिखी थी। इसके बाद से लगातार न जाने कितने भाव, अनुभव और अनुभूतियों पर इन्होंने लघुकथा लिखी हैं। कुछ लघुकथाएँ संवेदनशील प्रसंगों पर आधारित हैं, जिनमें प्रमुख रूप से ऊँचाई, खुशबू, गंगा–स्नान, चक्र, ज़हरीली हवा आदि शामिल हैं। सामाजिक परिवेश पर भी बहुत उत्कृष्ट लघुकथाएँ काम्बोज जी ने लिखी हैं। काम्बोज जी की लघुकथाएँ आम लोगों के जीवन से जुड़ी होती हैं। भाषा के प्रति

लगाव, अनुभव, चिंतन, भाषा की सरलता व सहजता इनकी लघुकथाओं की विशेषता है। 'ऊँचाई' लघुकथा में पिता–पुत्र की आर्थिक और मानसिक अवस्था का बहुत उत्तम चित्रण है। परिस्थिति इंसान को किस तरह सोचने को विवश करती है, इसका बहुत उत्कृष्ट उदहारण इस लघुकथा में दिखता है। 'ऊँचाई' लघुकथा इण्टरनेट पर बहुत वायरल हुई। इस पर हिंदी और पंजाबी में लघु फिल्म भी बन चुकी है।

लघुकथा से मेरा प्रथम परिचय जब मैं बी.ए. में पढ़ती थी तब हुआ। अँगरेज़ी के पाठ्यपुस्तक में 'शॉर्ट स्टोरीज' शामिल थी। उसमें 'ओ हेनरी' की लघुकथा 'द लास्ट लीफ़' मैंने पढ़ी, जो अब तक याद है। वह बेहद मर्मस्पर्शी कथा है। इसके बाद हिन्दी लघुकथा पढ़ना मेरे शौक में शामिल हुआ और पत्रिकाओं में खूब पढ़ी। जब काम्बोज जी से परिचय हुआ तब उनकी लघुकथाओं को पढ़ने का अवसर मिला और फिर मेरी लघुकथाओं का प्रकाशन हुआ। काम्बोज जी को पढ़कर लघुकथा के बारे में न सिर्फ़ ज़रूरी जानकारी मिली बल्कि लेखन का गुर भी आया।

काम्बोज जी लघुकथा के विषय में कहते हैं, 'श्रेष्ठ लघुकथा वह है जो पाठक को बाँध ले', पात्र, कथावस्तु, भाषा–शैली, उद्देश्य, वातावरण, संवाद, अंतरद्वंद्व आदि आवश्यक तत्त्व संश्लिष्ट रूप में उपस्थित हों', 'लघुकथा की भाषा सरल हो', 'पांडित्यपूर्ण भाषा लघुकथा के लिए घातक है', 'शीर्षक को सिद्ध करने के लिए न लिखी जाए'। लघुकथा और लघुकथा पर लिखे काम्बोज जी के हर लेख को पढ़कर पाठक चकित हुए बिना नहीं रह सकता।

लघुकथा की विकास–यात्रा में 'लघुकथा डॉट कॉम' का विशेष योगदान है। लघुकथा की एकमात्र वेबसाइट 'लघुकथा डॉट कॉम' जिसे सुकेश साहनी जी ने शुरू किया तथा 2007 में काम्बोज जी इससे जुड़े और इसके सह सम्पादक बनकर इसे नियमित मासिक का रूप दिया। तब से यह 40 देशों की यात्रा कर चुकी है।

काम्बोज जी लघुकथा के विकास के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। विशेष बात यह है कि काम्बोज जी न सिर्फ़ लघुकथा के लिए बल्कि सम्पूर्ण साहित्य–जगत् के लिए प्रेरणा स्वरुप हैं, जिनके लेखन–कार्य से बहुत सीखने को मिलता है। लघुकथा के क्षेत्र में काम्बोज जी का कार्य अतुलनीय है। निःसंदेह काम्बोज जी का कार्य लघुकथा की विकास–यात्रा में मील का पत्थर है।

■ द्वारा श्री राजेश श्रीवास्तव, द्वितीय तल, 5/7, सर्वप्रिय विहार, नई दिल्ली–16

सन्तोष सुपेकर

मूल्यजनित पात्रों की
नई मर्यादाएँ गढ़ते काम्बोज जी

डॉ. सुरेंद्र मन्थन ने कभी कहा था– ''लघुकथा मंद–मंद बहती सरिता नहीं, पहाड़ी झरना है।'' अतिशयोक्ति न होगी यदि कहा जाए कि उस पहाड़ी झरने के स्रोतों में से एक हैं श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी। लघुकथा विधा के तो वे सिरमौर हैं ही, पर इसके साथ ही व्यंग्य, कविता, कहानी, बाल साहित्य के भी वे सशक्त हस्ताक्षर हैं। इसके अलावा वे एक अध्ययनशील अध्यापक, सफल

शिक्षाविद भी हैं। विधा वैविध्य युक्त एक अनुभवी साहित्यकार आदरणीय श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' पर मेरा कुछ लिखना, हालाँकि सूरज को दीपक ...भी नहीं, अगरबत्ती दिखाने के समान होगा; पर क्योंकि डॉ. उमेश महादोषी जी का आदेश था, तो कुछ लिखने का साहस कर रहा हूँ। साम्प्रदायिकता, पारिवारिक प्रेम, वात्सल्य, लैंगिक भेदभाव जैसे गूढ़ विषयों पर अपने लेखकीय दायित्व को सम्पूर्णता से निभाते हुए वे भावों का सफल निवर्हन अपनी रचनाओं में करते हैं। उनके लेखन में अपने समय और व्यक्तिगत संघर्षों के आहत स्वर तो हैं ही, बुरी स्थितियों के करवट लेने की आशा भी सदैव आलोकित होती दिखाई पड़ती है। लघुकथाओं में उनकी भाषा बहुत कसी हुई रहती है और संवाद सशक्त। विभिन्न गलियों से घुमाते हुए वे पाठक को एक ऐसे चौराहे पर लाकर छोड़ते हैं जहाँ वह मंत्रमुग्ध होकर खो जाता है, लघुकथा को लंबे समय तक स्मरण रखता है और यही एक लघुकथा की सबसे बड़ी सफलता है। उनकी लघुकथा 'ऊँचाई' मेरी पसंदीदा रचनाओं में से है लेकिन हमेशा सोचता हूँ कि इस रचना को ''ले लो बहुत बड़े हो गए हो क्या?'' पर खत्म हो जाना था।

बहरहाल, सकारात्मक सोच काम्बोज जी की एक प्रमुख विशेषता है। लघुकथा के प्रारम्भ में निराशा के घटाटोप से गुजरता हुआ पाठक जब दुःखी होने लगता है तभी वे पंच लाइन के रूप में आशा की चमकदार किरण ले आते हैं और पाठक/आलोचक को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। उनकी लघुकथाओं की पंच लाइन देखिए– ''तुम पाठशाला बनवाओ। इससे बड़ा गंगा–स्नान और क्या होगा?'' (गंगा–स्नान)। ''कुत्ते ने पास आकर दोनों को सूँघा और फिर सूखी हड्डी चबाने में लग गया।'' (धर्मनिरपेक्ष)। ''पिताजी ने प्यार से डाँटा, ले लो, बहुत बड़े हो गए हो क्या?'' (ऊँचाई)।

काम्बोज जी की 'नवजन्मा' मेरी सर्वाधिक पसंदीदा लघुकथाओं में से है, जिस पर मैंने लघुकथा डॉट. कॉम के अप्रैल 2015 अंक में 'मेरी पसंद' के अंतर्गत लिखा भी था और जिस पर मैं यहाँ भी बात करना चाहूँगा। हमारे कथित आधुनिक, पश्चिमी देशों से बुरी तरह प्रभावित समाज के दो मुँहे चेहरे का सबसे बड़ा उदाहरण है– घर में बालिका पैदा होने के बाद की परिस्थितियाँ! दुःख, अपराधबोध, सन्नाटा और फिर एकाएक स्थिति पलटना जैसी परिस्थितियों को 'नवजन्मा' में चित्रित करने में लेखक ने बहुत श्रम किया है और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग कर सीधे–सीधे सम्प्रेषण किया है। इस लघुकथा में दोहरे मापदंडों, संकुचित मनों, कुरीतियों के जंजाल, निराशा में पाठक को झूलते–झुलाते काम्बोज जी का अंत में उसे सकारात्मकता के सुखद मोड़ पर ला खड़ा करना वाकई एक चमत्कार–सा लगता है। रचना में ढोल की आवाज़– 'तिड़क–तिड़–तिड़–तिड़ धुम्म, तिड़क धुम्म्म' दर्शाकर फोनेटिक्स (ध्वन्यात्मकता) का प्रयोग करने वाले वे बिरले लघुकथाकार हैं।

लघुकथा और चुटकुले में फर्क पर सबसे सही कथन उनका ही है, जो पाठक की सारी उलझन समाप्त कर देता है– ''हमें व्यंजनावृत्ति द्वारा बोधित अर्थ और चुटकुले में अंतर करना होगा। जो सांकेतिकतार्थ को नही पकड़ पाते, उन्हें कोई लघुकथा चुटकुला लगे तो क्या किया जा सकता है?''

काम्बोज जी 1989 की बरेली लघुकथा विमर्श गोष्ठी के आयोजकों में रहे हैं, लघुकथा के अलावा उन्होंने व्यंग्य, कविता, हाइकु पर भी साधिकार, सफल लेखन किया

है। एक कुशल शब्दशिल्पी, मूल्यों के क्षरण पर सर्वाधिक चिंतित काम्बोज जी वैश्विक चेतना के समर्थ लघुकथाकार हैं। शिल्प, भाषा, संवाद और कथानक के स्तर पर उनकी हर रचना सार्थक सन्देश देती है। अपने लेखन से उन्होंने मूल्यजनित पात्रों की नई मर्यादाएँ गढ़ीं हैं। उनके दीर्घ, स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन हेतु मेरी समस्त शुभकामनाएँ।

■ 31, सुदामा नगर, उज्जैन–456001, म.प्र./मो. 09424816096

डॉ. नितिन सेठी

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथाएँ

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथाएँ अपने कथ्य और प्रस्तुति में सदैव पठनीय रही हैं। मुझे व्यक्तिगत रूप से उनकी कुछ लघुकथाएँ बहुत पसंद हैं, जिनका विवरण मैं यहाँ दे रहा हूँ।

'धर्मनिरपेक्ष' लघुकथा मनुष्य और उसकी मनुष्यता पर एक प्रकार से व्यंग्य करती है। शहर में दंगा हो रहा है। चारों ओर भीषण मारकाट मची है। दो व्यक्ति आपस में धर्म के नाम पर लड़ते हुए एक–दूसरे पर छुरे का वार करते हैं और छटपटा कर जमीन पर गिर पड़ते हैं। सड़क पर हड्डी चूसता हुआ कुत्ता बारी–बारी से दोनों के खून के ऊपर आकर पेशाब करता है और फिर सूखी हड्डी चबाने में लग जाता है। धर्मनिरपेक्षता, जो मनुष्यता का एक गहना है, उसे इस लघुकथा में एक बेजुबान जानवर कुत्ता कहीं अधिक समझ पाता है। 'ऊँचाई' लघुकथा एक पिता की ऊँचाई दर्शाती है। घर पर पिताजी के अचानक आ जाने से पत्नी नाराज़ हो जाती है। बेटा भी अपनी तंगहाली के बारे में मन ही मन सोचने लगता है। तभी पिताजी जेब से सौ–सौ के दस नोट निकालकर बेटे की तरफ बढ़ा देते हैं। बेटे को याद आता है कि पिताजी उसे स्कूल भेजते समय इसी तरह से पैसे उसकी हथेली पर टिका देते थे पर तब उसकी नज़रें आज की तरह झुकी नहीं होती थीं। पिता के निष्काम त्याग, प्रेम और समर्पण की ऊँचाई की थाह पाना मुश्किल होता है, इस लघुकथा में दर्शाया गया है। 'दूसरा सरोवर' लघुकथा प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कहती है। गाँव में एक सफेदपोश आदमी आता है और अपना चमत्कार दर्शाता हुआ कहता है कि वह गाँव वालों की सुविधा के लिए सरोवर को गाँव के बीच में ले आएगा। परंतु सरोवर तक पहुँचकर वह एक खौफनाक मगरमच्छ बन जाता है। लघुकथा इस वाक्य से खत्म होती है, "आज वह मगरमच्छ जगह–जगह नंगा घूम रहा है।" प्रस्तुत लघुकथा वर्तमान संदर्भों में पूर्णतया लागू होती है। यहाँ मगरमच्छ प्रतीक है झूठे आश्वासन देने वाले ऐसे सफेदपोश का, जिसके झाँसे में भोली–भाली जनता अक्सर ही आ जाया करती है। सरोवर पर लोग पानी पीने जाते थे और खुशहाल थे। ऐसे वैभवशाली और उपयोगी सरोवरों पर ही भ्रष्टाचारी मगरमच्छ आज कुंडली मारकर बैठे हुए हैं, जिससे भोली–भाली जनता सभी प्रकार के संसाधनों और विकास कार्यों से दूर रह जाती है। 'आज वह मगरमच्छ जगह–जगह नंगा घूम रहा है', इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि पहले ऐसे कुकर्मी और छली व्यक्ति अपने असली रूप को समाज से छुपाए रहते थे और बनावटी

रूप में सामने आते थे सफेदपोश बनकर, लेकिन छल, कपट, धोखा, बेईमानी– ये सब आज एक खुला खेल बन चुका है। आज के समाज का कड़वा सच दिखाती है यह लघुकथा। अपनी विभिन्न जिम्मेदारियाँ उठाते–उठाते वक्त कैसे निकल जाता है, यह हम खुद भी नहीं पहचान पाते। शाहीन दोनों भाइयों की जिम्मेदारी निभाते–निभाते तीस वर्ष की हो गई है। बीते समय को याद कर वह अक्सर उदास हो जाती है। स्कूल पहुँचकर दूसरी कक्षा की एक छोटी–सी लड़की उसके हाथ में गुलाब का फूल पकड़ा देती है, जिसकी खुशबू से वह अपने सारे दुःख भूल जाती है। उसके सारे दुःख गुलाब की खुशबू के सामने फीके पड़ जाते हैं। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की परीक्षाएँ आती हैं; परंतु हमारे नेक कामों की खुशबुओं का सफ़र सदैव हमारे साथ–साथ चलता है और हमें निरंतर नवीन ऊर्जा से आप्लावित भी करता है। इस लघुकथा का यही मूल कथ्य है। 'उड़ान' लघुकथा में बूढ़ा आत्माराम अपने बेटे के मनीऑर्डर के इंतजार में उदास बैठा है। तीन महीने से उसका मनीऑर्डर नहीं आ पाया है। आत्माराम के घर में कबूतर–कबूतरी और उसका बच्चा सुबह अपने घोंसले में थे। शाम हो गई है। कबूतर–कबूतरी तो लौट आए हैं; लेकिन उनका बच्चा अभी तक नहीं लौटा। आत्माराम स्वयं को भी कबूतर के स्थान पर रखकर महसूस करते हैं। कबूतर के बच्चे के दूर जाने की साम्यता आत्माराम के बेटे से दर्शाई गई है। उड़ान इतनी भी अधिक अच्छी नहीं कि अपनों का साथ ही तिरोहित कर दे।

भारतीय समाज में परम्परागत रूप से आज भी लड़की के विवाह के समय उसकी सुंदरता को सबसे बड़ा गुण माना जाता है। उसका शिक्षित होना, उसका सभ्य आचरण आदि इतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं जितना उसके नैन–नक्श सुंदर होना। 'कालचिड़ी' लघुकथा इसी बिंदु को सामने लाती है। शुचिता को देखने दिल्ली का एक परिवार आता है। उसके पिता उसकी पढ़ाई–लिखाई और योग्यता का भरपूर बखान करते हैं; परन्तु उनके शब्द हवा में ही खो जाते हैं। लड़की की माँ उबासी लेते हुए बोलती है, "हमारे लड़के को खूबसूरत लड़की चाहिए, सांवली लड़की इसे पसंद नहीं।" लेखक इस लघुकथा में काली चिड़िया का ज़िक्र भी करता है जो सुबह–सवेरे रोज़ बरामदे में लगे आईने पर चोंच मारने के लिए आती है। लेकिन शुचिता उसे रोज उड़ा देती है। लड़के की माँ की बात सुनकर अब वह इस काली चिड़ी को उड़ाने की कोई चेष्टा नहीं करती। काली चिड़िया का आईने पर चोट मारने का संदेश यही है कि इस दुनिया में केवल बाहरी चमकता रंग–रूप ही देखा जाता है, न कि किसी की अच्छाई। अगर हमें आगे बढ़ना है, तो आईने पर ध्यान न देकर अपनी हक़ीक़त को समझना होगा और उसे ही मजबूत हथियार बनाना होगा। 'कमीज़' लघुकथा एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार को दर्शाती है। महीने की आखिरी तारीखों में हरीश की ज़ेब में केवल 160 रुपये ही बचते हैं, जिसमें से 150 रुपये किसी ने निकाल लिए हैं। पति–पत्नी दोनों इस बात पर परेशान होकर बहस करते हैं। तभी उनका बेटा नीतेश एक पैकेट में पैक शर्ट लेकर आता है और पिता को भेंट करते हुए कहता है, "पंचशील में सेल लगी है। आपके लिए एक शर्ट लेकर आया हूँ। कहीं बाहर जाने के लिए आपके पास कोई अच्छी शर्ट नहीं है।" यह सुनकर पिता की आवाज़ की तल्खी न जाने कहाँ गुम हो जाती है। यहाँ एक कमीज़ के बहाने एक परिवार की आर्थिक समस्याओं, भावी जीवन

के सपनों के साथ–साथ एक पुत्र की अपने पिता के प्रति प्रेम और प्रतिबद्धता भी दर्शाई गई है। तंगहाली में मीठी–सी महसूस होने वाली एक चुभन पुत्र अपने पिता को कमीज़ के बहाने देता है। कमीज जहाँ एक ओर पैसों का अभाव दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर कमीज ही यहाँ पारिवारिकता और प्रेम का प्रदर्शन भी है।

'स्त्री पुरुष' लघुकथा में तंगनज़र का चित्रांकन है। नीलम को उसका अध्यापक एक रिक्शेवाले से घुल–मिलकर बात करते हुए देख लेता है और इस बात पर उसे टोकता है। छुट्टी के समय स्कूल के गेट पर वह देखता है कि उस रिक्शेवाले के सिर से खून बह रहा है और नीलम टुपट्टे का छोर फाड़कर उसे पट्टी बाँध रही है। लेखक के पूछने पर नीलम का उत्तर होता है, "एक स्कूटर वाला पिताजी को टक्कर मारकर भाग गया।" सम्बन्धों की आत्मीयता का सार्थक आख्यान 'स्त्री–पुरुष' लघुकथा है। किसी की निर्धनता सम्बंधों में संदेह की दृष्टि किस प्रकार उत्पन्न कर देती है, यहाँ द्रष्टव्य है। पुरुष पात्र अपनी संकुचित सोच के कारण उन दोनों ही पात्रों से अपने आप को अधिक महत्त्वपूर्ण समझता है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि सारे तीरथ–धाम हमारे शरीर में ही बसते हैं। जिन्हें अपने कर्मों द्वारा हम जागृत अवस्था में ला सकते हैं। लघुकथा 'गंगा–स्नान' इसी बात की अभिव्यक्ति है। सत्तर साल की बूढ़ी पारो आज नितांत अकेली है। गाँव भर के कपड़े सिलकर वह अपना जीवन काट रही है। लेकिन उसका स्वाभिमान उसे किसी के सामने हाथ फैलाने नहीं देता। गाँव का प्रधान कन्या पाठशाला बनवाने के लिए उसके यहाँ भी चंदा लेने आता है लेकिन पारो की हालत देखकर उसे बुढ़ापा पेंशन दिलवाने की बात करता है। स्वाभिमानी पारो इसके लिए मना कर देती है और अपने पुराने जंग लगे संदूक से तीन सौ रुपए निकालकर प्रधान जी की हथेली पर रखती है, "बेटे, सोचा था मरने से पहले गंगा नहाने जाऊँगी। उसी के लिए जोड़कर यह पैसे रखे थे।" प्रधान के गंगा–स्नान के बारे में पूछने पर उसका उत्तर है, "बेटे, तुम पाठशाला बनवाओ। इससे बड़ा गंगा–स्नान और क्या होगा।" एक अकेली बूढ़ी स्त्री की कन्याओं की शिक्षा और उनके सामाजिक विकास के प्रति कितनी सुंदर सोच दर्शाई गई है इस लघुकथा में। किसी को विद्यादान देना भी गंगा–स्नान के ही बराबर पुण्य देने वाला है। शिक्षा की शाश्वत शक्ति को वृद्धा पारो यहाँ गहराई से पहचानती है। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की अधिकांश लघुकथाओं के पात्र मध्यमवर्गीय परिवारों से आते हैं जो अपनी परिस्थितियों के जाल में उलझे हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं। मध्यमवर्गीय मानसिकता और विसंगतियाँ उनकी लघुकथाओं का कथ्य बुनती हैं। इन्हीं परिस्थितियों में से 'हिमांशु' जी कोई छोटा–सा कथ्यबिंदु ढूँढते हैं, जिसमें लघुकथा धीरे–धीरे अपना आकार लेती है। अपनी तराशी हुई भाषा में 'हिमांशु' जी लघुकथा को सार्थक और मारक बना देते हैं। स्वयं 'हिमांशु' जी के विचार उल्लेखनीय हैं, "साहित्य की इस विधा–विशेष की चाहे जितनी परिभाषाएँ दी जाएँ, अन्ततः सबका केंद्रबिंदु एक ही है– जनसामान्य की आशा, आकांक्षा को प्रस्तुत करना, दुःख के पलों में उनके आँसू पोंछना, उमंग के क्षणों में उनके अधरों की मुस्कान बनना तथा संघर्ष के अवसर पर उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना। लघुकथाकार अपनी उपस्थिति दर्ज कराए बिना अपनी बात कह जाए या इंगित कर जाए, यही उसकी रचनात्मक शक्ति है।" हिमांशु जी की लघुकथा की

रचनात्मक शक्ति वस्तुतः उनके इन शब्दों को ही प्रामाणिक रुप से प्रस्तुत करती है।

'और सुबह हो गई' एक अलग प्रकार की लघुकथा है, जिसमें शालू, परेश और लाल सिंह पात्र हैं। लाल सिंह जहाँ सामंतवादी मानसिकता का और शोषण का प्रतीक है, वहीं शालू एक समर्पित और करुणामयी नारी के रूप में सामने आती है। सामाजिक मर्यादाओं को मानने वाली शालीनता की प्रतिमूर्ति शालू अगली सुबह जब परेश के सामने भर्राए गले से कहती है, "आज चाय मैं बनाऊँगी", तब उसका नारी सुलभ त्याग और समर्पण हमारे सामने आता है। इन सबसे अलग परेश का व्यक्तित्व अपने आप में एक पुरुषोचित गरिमा लिए हुए है जो शालू से कहता है, "मैं तुमसे शादी करूँगा, सिर्फ़ तुमसे और किसी से नहीं।" लाल सिंह के चरित्र के सामने परेश का चरित्र शालू के प्रति एक विश्वास का संचार करता है। 'लौटते हुए' लघुकथा में भी स्त्री सशक्तिकरण का ही एक अलहदा रूप मिलता है। नीरज को अपनी पत्नी पर शक है और इसलिए वह कोठे पर पहुँच जाता है ताकि वहाँ के अनुभव उसके काम आ सकें। उस स्त्री का उत्तर अपने आप में दार्शनिकता का पुट लिए हुए है, "तुम्हारी पत्नी अगर तुमको इस कोठे से उतरते हुए देख ले तो क्या सोचेगी? सुनो, पत्नी पर विश्वास करना सीखो। मुझे देखो, उसकी आँखें भर आईं। पति के शक ने मुझे इस कोठे पर पहुँचा दिया। अगर तुम्हारा शक झूठा हुआ तो क्या करोगे?" 'हिमांशु' जी की एक मार्मिक लघुकथा है 'सपने और सपने'। तीन अलग–अलग आर्थिक स्तर के बच्चों को लेकर बुनी गई यह लघुकथा एक ओर जहाँ बच्चों के सच्चे–सजीले सपनों का शब्दाँकन है, वहीं दूसरी ओर समाज के निर्मम सत्य का मार्मिक उद्घाटन भी है। सेठ गणेशीलाल, नारायण बाबू और जोखू रिक्शे वाले के बच्चे खेलते समय अपने–अपने सपनों का ज़िक्र करते हैं। सेठ का बच्चा पहाड़ों–नदियों के पार जाता है। नारायण बाबू का बेटा सपने में बहुत तेज स्कूटर चलाने में ही खुश है। तीसरा बच्चा, जो जोखू रिक्शे वाले का बेटा है, सपने में खूब डटकर कई रोटियों की दावत उड़ाता है; वो भी नमक और प्याज के साथ। लघुकथा का अंत और भी मार्मिक शब्दों से हुआ है। जोखू का बेटा बताता है कि उसे अभी तक भूख लगी है। इतनी वैज्ञानिक प्रगति और 'ग्लोबल वर्ल्ड' के ज़माने में भी ऐसे लोग हैं, जिनके सपने आज भी दो वक्त की रोटी के निज़ाम के गुलाम हैं। वास्तव में स्वप्नदर्शी दुनिया का दूसरा पक्ष कहीं अधिक कड़वा और कठोर है। लघुकथा का विस्तार भी बहुत अधिक नहीं है। मात्र तीन पात्रों के छः कथनों में यह लघुकथा समाप्त हो जाती है। प्रस्तुत लघुकथा का शीर्षक भी अनेकार्थगर्भी है। सपने या अधूरे सपने या अन्य किसी शीर्षक में वो बात नहीं आ पाती जो 'सपने और सपने' में महसूस होती है। किसी भी साधक या कलाकार का सौन्दर्यबोध और उसका आत्मबल उस साधक और उसकी कला को सच्चा मार्ग दिखलाने वाला होता है। परंतु कभी–कभी बहुत अधिक प्रसिद्धि या सम्मान की चाह में व्यक्ति अन्य लोगों से अपनी तुलनाएँ करने लगता है और बेवजह कुण्ठा का शिकार हो जाता है। यह कुण्ठा सच पूछिए तो किसी भी साधक की 'चिरसंगिनी' ही है परन्तु अपनी कर्मठता और योगदान से साधक कुण्ठा की काली–अँधेरी कोठरी को पीछे छोड़कर उत्तरोत्तर आगे बढ़ता जाता है। 'चिरसंगिनी' लघुकथा में दिगम्बर नाम का चरित्र है जिसके सामने चार छुरा घोंपी

आत्माएँ आती हैं और उसको पुराने दिन याद करवाती हैं। दिगम्बर डर जाता है। बारी–बारी से उन चारों सायों को दिगम्बर पहचान लेता है और अपनी प्रसिद्धि के दिन उसके सामने आ जाते हैं। तभी एक आबनूसी रंग की छाया उभरती है। दिगम्बर उससे डरते हुए पूछता है कि तुम कौन हो। छाया कहती है, "डरो नहीं, मैं गैर नहीं हूँ। मैं तुम्हारी चिरसंगिनी कुण्ठा हूँ। हमेशा तुम्हारे साथ रही हूँ। तुम्हारे काले दिल में रहते–रहते मेरा रंग एकदम आबनूसी काला हो गया।" यह लघुकथा स्वयं में एक बहुत बड़ा जीवन दर्शन समेटे हुए है और अपने चरित्रों के माध्यम से जीवन का वास्तविक लक्ष्य, उसकी सम्प्राप्ति और उसके सहायक उपकरणों को सूत्ररूप में परिभाषित कर देती है।

■ सी–231, शाहदाना कॉलोनी, बरेली–243005 / मो. 09027422306

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

शीतल–निर्मल–प्रकाशवत्ता – हिमांशु

"अगर घटनाओं को ही लघुकथा मानने लग जाएँ, तो पुलिस का रोज़नामचा हफ्तेभर में लघुकथा–संग्रह में तब्दील हो जाएगा।"

कुछ वाक्य छाते की तरह साहित्यकारों को दिशाहीन सर्जन की बारिश से रोकने में न केवल सहायक होते हैं, बल्कि स्वयं छाते से छत में तब्दील हो जाने का सामर्थ्य रखते हैं। उपरोक्त वाक्य भी कुछ ऐसा ही है, जिसे कहा है देश के लब्धप्रतिष्ठित लघुकथाकारों में से एक श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ने।

19 जनवरी 2011 को, जब मुझे लघुकथा के ककहरे तक का ज्ञान नहीं था, मैंने इन्टरनेट पर एक लघुकथा पढ़ी। वह लघुकथा इतनी अच्छी थी कि मैंने फेसबुक के एक समूह में उस रचना को साझा कर दिया (मूल लेखक का नाम रचना के नीचे आखिरी में लिखकर)। रचना के लेखक श्री काम्बोज ही थे। उन दिनों यह रचना इतनी प्रसिद्ध हुई थी कि इन्टरनेट में कई स्थानों पर कॉपी–पेस्ट कर ली गयी, यहाँ तक कि एक–दो प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में भी कुछ व्यक्तियों ने अपने नाम से प्रकाशित करवा ली। इसके लगभग पाँच वर्षों बाद, अप्रेल 2016 में किसी स्रोत के जरिये श्री रामेश्वर काम्बोज को मेरी शेयर की हुई रचना ज्ञात हुई। किसी ने उन्हें यह भी कह दिया था कि उस पोस्ट में उनका नाम ही नहीं लिखा है। वे कुछ नाराज़ ज़रूर थे लेकिन मुझे यह लाभ हुआ कि उनसे फोन पर बात हो गई। बहरहाल, उनकी नाराज़गी तो कुछ क्षणों में ही दूर हो गई थी और बाद में उनके कहे अनुसार उनका नाम शेयर की हुई रचना के शीर्षक के साथ भी लिख दिया।

वह रचना एक ऐसी रचना है जो निःसंदेह ही सभी लघुकथाकारों ने पढ़ी होगी। 'ऊँचाई', जिसे श्री काम्बोज ने लगभग एक वर्ष तक अपने विचारों और सर्जन में तपाकर अक्टूबर 1989 में पूर्ण की थी। पिता के अतुल्य त्याग और सुसमर्पण की महती भावना को दर्शाती इस रचना से मैं लघुकथा लेखन प्रारम्भ करने से पूर्व ही परिचित हुआ। मेरे अनुसार यह श्री काम्बोज के सर्जन की सफलता है कि उनकी रचनाएँ उनके नाम से नहीं, बल्कि वे अपनी रचनाओं से जाने जाते हैं। आपकी लघुकथाओं में शीर्षक से लेकर अंत

तक विवेकी, गूढ़ और प्रबुद्ध सोच का प्रतिफल सहज ही प्रतिलक्षित होता है।

लघुकथाओं में फिलवक्त उत्तम लघुकथाओं के अतिरिक्त दो अन्य कार्यों की महती आवश्यकता है। एक तो सही दिशा में शोध की और दूसरे सही आलोचना की। कई सिद्धहस्त आलोचक भी लघुकथा को कितनी ही बार कहानी की दृष्टि से देख लेते हैं या फिर अपने स्वयं के मतानुसार ही लघुकथा को समझते हैं। लघुकथा के आलोचनात्मक लेखन में चुनिंदा व्यक्तियों में से एक नाम श्री काम्बोज की कृति 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' लघुकथा के समालोचनात्मक स्वरूप को स्थापित करने व इसकी सही समझ का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। अपनी बात उनके ही एक अन्य उद्धरण से समाप्त करना चाहूँगा, ''प्रवचन देने वालों के दृष्टान्तों, किसी चुभते कथन या आन्दोलित करने वाले विचारों को लघुकथा मानने लगें तो साहित्य–जगत में वैचारिक कोहरा और अधिक घना हो उठेगा।''

■ 3 प 46, प्रभात नगर, सेक्टर–5, हिरण मगरी, उदयपुर–313002, राज./मो. 09928544749

डॉ. खेमकरण सोमन

'हिमांशु' जी की लघुकथा में सन्दर्भ–प्रसंग

...हिंदी लघुकथा के साथ एक समस्या संदर्भ–प्रसंग की है। प्रायः उसके पाठ के समय न उसके संदर्भ का पता चलता है न प्रसंग का। पत्र–पत्रिकाओं, सोशल मीडिया, ब्लॉग और ई–पत्रिकाओं में प्रकाशित लघुकथाओं में यह समस्या प्रायः दृष्टिगोचर होती है। ऐसी लघुकथाएँ यदि संदर्भ–प्रसंग दरकिनार कर या घालमेल के साथ अस्तित्व में आती हैं तो निसंदेह पाठक की आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतरतीं। लघुकथा के आस्वाद के पश्चात भी पाठकगण उसकी विषय–वस्तु से कनेक्ट नहीं हो पाते। कहने का तात्पर्य है कि सन्दर्भ जहाँ विधा से सम्बद्ध है और रचना को विधागत अतिक्रमण करने से रोकता है, वहीं प्रसंग, विषयवस्तु–घटनाओं और उसके समुचित निर्वहन से सम्बद्ध है। ये दोनों शब्द हिन्दी लघुकथा–शिल्प विधान हेतु महत्त्वपूर्ण हैं। हिमांशु जी की लघुकथाएँ अपने स्तर से इसी कमी को पूरा करती हैं। उनमें संदर्भ भी है और प्रसंग भी। दोनों का सार्थक निर्वाह भी। उदाहरणार्थ– 'उड़ान' और 'अच्छे पड़ोसी'। दोनों लघुकथाओं के दो दृश्य सहृदयों के हृदय को भिगो देते हैं। दोनों में संदर्भ भी हैं और प्रसंग भी। 'अच्छे पड़ोसी' के पात्रों के मन–मस्तिष्क में लड़ाई–झगड़े के बाद ईष्या–जलन, पूर्वाग्रह आदि सब कुछ हैं; पर मनुष्य के रूप में मनुष्यता भी है। 'अच्छे पड़ोसी' के पाठ के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि दो पक्षों की पंगत में यदि किसी भी एक पक्ष के मन में सहयोग की भावनाएँ उपज रही हैं तो लाख लड़ाई–झगड़े के बाद द्वितीय पक्ष का हृदय परिवर्तन स्वतः हो जाएगा। आवश्यकता सिर्फ पहल करने की है। इसी प्रकार से 'ऊँचाई' शीर्षक लघुकथा। संदर्भ और प्रसंग, दोनों में अबाधित। बहू–बेटा, सादगी, शर्मिंदगी, संकीर्ण दृष्टि और पिता की आसमानी सोच पर क्या गजब की प्रस्तुति है। ऐसी लघुकथाएँ ही पाठकों को विश्वास में लेकर उन्हें पूर्ण कथा का आस्वाद देती हैं।

रामेश्वर काम्बोज हिमांशु की लघुकथाओं की विशेषता है कि उन्हें अलग–अलग अनुच्छेदों में रखा जा सकता है। हिंदी लघुकथा संसार में इस रंग–रूप, तेवर की लघुकथाएँ कम ही दृष्टिगोचर होती हैं, जो बार–बार परखने पर बार–बार और भिन्न–भिन्न अर्थ प्रदान करें। इस दृष्टि से उनकी प्रतीकात्मक शैली की लघुकथा 'कालचिड़ी' का उल्लेख प्रासंगिक प्रतीत होता है। पर उससे पूर्व थोड़ी चर्चा अभी पुनः 'नवजन्मा' पर, जो क्रांतिकारी भी है और हिंदी लघुकथा विधा की स्वर्णिम धरोहर भी है। बहरहाल 'नवजन्मा' के दो दृश्य निम्नवत् हैं–

1. जिले सिंह शहर से वापस आया तो आँगन में पैर रखते ही उसे अजीब–सा सन्नाटा पसरा हुआ मिला। दादी ने ऐनक नाक पर ठीक से रखते हुए उदासी–भरी आवाज में कहा, ''जिल्ले! तेरा तो इभी से सिर बँध ग्या रे! छोरी हुई है!''

2. संतु और जोर से ढोल बजाने लगा– तिड़–तिड़–तिड़, तिड़क धुम्म, तिड़क धुम्म, तिड़क धुम्म, तिड़क धुम्म!

उपर्युक्त दोनों दृश्यों में, एक दृश्य लघुकथा के प्रारंभ का है दूसरा अंत का। दोनों दृश्यों के मध्य लड़की की पैदाइश पर घर–समाज में क्या–क्या कोहराम मच रहा है, वह सब कुछ विचित्र है, पर जिले सिंह कुछ बोलता नहीं है बल्कि सभी की सुनकर, मन की करता है। वह अपने मन की ओर बहता है और साथ–साथ पाठकों को भी बहाकर ले जाता है। इस लघुकथा को अब तक लाखों पाठक पढ़ चुके होंगे, जिनके घरों में स्त्रियों–लड़कियों की स्थिति दोयम दर्जे की या दबी–कुचली है। कहीं न कहीं उनके मन में खटका जरूर होगा कि वंशवृद्धि–लिंगभेद के नाम पर जो अन्याय लड़कियों के साथ हो रहा है, वह उचित नहीं। जिले सिंह जैसा पिता इस 'खटके' को सूद सहित खत्म कर देते हैं। सूद क्या है लड़की अर्थात नवजन्मा के जन्म पर ढोल बजवाना। इतना नाचना कि जो देखे–सुने, वही हैरत में पड़ जाए!

'नवजन्मा' के सहृदय पाठकों को स्मरण होगा, जिलेसिंह की पत्नी मनदीप, जो लड़की के जन्म के कारण अपराधबोध से ग्रस्त है, बिना कोई अपराध किए ही अपराधबोध। बहुत अजीब मामला है यह! क्या लड़की का जन्मना इतना भयानक अपराध? भारत की भूमि पर लगा हुआ यह ऐसा कलंक है जिसे जिले सिंह जैसे पिता ही धो सकते हैं। तभी तो कुछ क्षण पहले तक जो मनदीप स्वयं को कोस रही थी! अपने पति को ढोलकिए के सुर, लय–ताल, पर नाचते पाकर ऐसा लगा जैसे उसके सामने ''उजाले का सैलाब उमड़ पड़ा हो।'' पूरे मौहल्ले वाले भी चौंक पड़े। ऐसा महान व्यवहार किया जिले सिंह ने अपनी पत्नी, घर–परिवार और समाज के साथ। उसकी 'नवजन्मा' जब बड़ी होगी और अपने पिता की महान दास्तान सुनेगी कि लड़कियों के जन्म पर जब घर–समाज में चहुँ दिशा अंधकार छा जाता था तब उसके पिता जिले सिंह ने किस प्रकार एक सुखद आयोजन कर चारों ओर उजाला किया, तब यकीनन यह अनुभूतिगम्य क्षण उस नवजन्मा को कितना सुख पहुँचाएगा।

परंपरा से असहमति होने के बाद ही प्रतिरोध की भूमि तैयार होती है। क्या किसी में इतना प्रतिरोध है जो अंगद की तरह पैर पटककर सीना ठोंककर कह सके–

ओए जिल्ले! मैं भी हूँ तेरे जैसा पिता, देवर या भाई! कारण लड़कियों के सामने 'नवजन्मा' जैसी ही नहीं अपितु 'कालचिड़ी' जैसी समस्याएँ भी हैं। इसी प्रकार की सैकड़ों समस्याएँ हैं, जो उनके मार्ग में आकर उन्हें असमय लील जाती हैं।

समाज का विमर्श, साहित्य का विमर्श बने, इस हेतु आवश्यक है कि लघुकथाओं में समाज की सभी समस्याएँ सूक्ष्म रूप में चिह्नित हों। इन समस्याओं में एक रंगभेद भी है। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथा 'कालचिड़ी' में यह स्थिति बहुत गंभीरता और सूक्ष्मता से चित्रित है। विचारणीय है कि यह कोई समस्या नहीं; पर गोरी चमड़ी–काली चमड़ी की मानसिकता के कीड़े जब निशदिन काटें, तब कौन–सी दवाई दी जाए, जिससे इन कीड़ों का नाश हो। आधुनिक शिक्षा नामक दवाई तो असफल रही! पर आस–विश्वास भी अंततः उसी से है। बहरहाल, अपने पात्रों एवं समस्याओं को लेकर 'कालचिड़ी' की कथावस्तु जिन बिंदुओं पर समाप्त होती है, संभव है कि घर परिवार में बहुत छोटा प्रतीत हो; परंतु ऐसा है नहीं! यह लघुकथा घर परिवार समाज और संपूर्ण विश्व में व्याप्त रंगभेद की समस्या की ओर संकेत करती है। रंगभेद अर्थात रंग–वर्ण को लेकर भेद करने की मानसिकता! विश्व के कई देश इससे पीड़ित हैं। भारतीय समाज का संदर्भ ग्रहण करें तो यहाँ की मन–मिट्टी में भी यह मानसिकता सदियों से उगी बैठी है। इसी कारण 'कालचिड़ी' की शुचिता की प्रतिभा, पढ़ाई, समझदारी और खूबसूरती के समक्ष भी उसका साँवला रंग अत्यधिक भारी पड़ रहा है। इसी वजह से घर आए लड़के वाले उसे नापसंद कर देते हैं। 'कालचिड़ी' की नायिका के बहाने यह लघुकथा उन लाखों–करोड़ों लड़कियों की कथा–व्यथा है जो रंग–रूप से साँवली हैं। प्रतीकात्मक शैली में प्रस्तुत की गई यह ऐसी उत्कृष्ट लघुकथा है जो कई मायनों में महत्वपूर्ण है। इसमें एक कथा काली चिड़िया की है और दूसरी कथा शुचिता की। अंत में यह बात शुचिता सहित पाठकों की समझ में आ जाती है कि काली चिड़िया बरामदे में लगे आईने पर प्रतिदिन चोंच क्यों मारती है। निसंदेह लघुकथा पूर्ण होने तक रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की कथावस्तु, भाषा–शैली और शिल्प पर कई कोणों से विचार किया है, तब यह लघुकथा अस्तित्व में आई होगी।

'कालचिड़ी' की कथावस्तु का पहला स्तर यही है कि शुचिता उस काली चिड़िया को रोज–रोज भगा देती है। उसके मन में खीझ भी उत्पन्न होती है कि इसे आईने से इतनी चिढ़ क्यों है? एक दिवस हँसते–मुस्कुराते हुए घर में लड़के वाले आते हैं और चंद क्षणों में उदासी की वर्षा करके चले जाते हैं। फिर अंत में कथावस्तु का दूसरा स्तर प्रारंभ होता है। वह स्तर क्या है? इसे लघुकथाकार के शब्दों में इस प्रकार देखें– ''काली चिड़िया बरामदे में लगे दर्पण पर अब भी चोंच मार रही थी। शुचिता ने इस बार उसको उड़ाने की चेष्टा नहीं की।'' दुःख के समय दुःखी व्यक्ति की दृष्टि प्रत्येक उस व्यक्ति–वस्तु को पहचान लेती है, जो किसी कारण दुःख के रंग में रँगा है। जितना सुख नहीं जोड़ता, उतना दुःख जोड़ता है। 'कालचिड़ी' इस विचार की पूर्ति करती है। लघुकथा में समस्या–मुक्ति की बेचैनी और असमंजस की छाया, स्पष्ट चित्रित है।

समस्याओं का हल करने की सबसे अधिक बेचैनी साहित्य में समाहित होती है। यह मनुष्य से मनुष्यता और संवेदना की अपेक्षा रखता है। इसलिए उसकी दृष्टि उन सभी क्षेत्रों पर है, जिनमें मनुष्यों की घुसपैठ है। एक लेखक अपने समाज का बड़ा

बुद्धिजीवी होता है। उसे विश्वास है कि वह कठिन से कठिन विषयों को, मौखिक वार्तालाप की अपेक्षा साहित्य द्वारा प्रस्तुत करके उसका समाधान प्रस्तुत कर देगा; क्योंकि कला–साहित्य, संगीत का विषय में संवेदना और प्रतिरोध से जुड़ा हुआ है। बुद्धिजीवी के संदर्भ में साहित्य के प्रोफेसर एडवर्ड सईद का मानना है, ''बुद्धिजीवी की भूमिका जड़ता को तोड़ने, सवाल उठाने और बातें कहने की होती है, जिसे लोग नहीं कहेंगे तथा जो स्थितियाँ हैं, जानी, समझी; जिनके साथ तालमेल बैठाकर हममें से ज्यादातर लोग जीते हैं, उनके आगे जाने की हिम्मत बुद्धिजीवी दिखाते हैं।''

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' इसी प्रकार के बुद्धिजीवी और लघुकथा के द्वारा जड़ता तोड़ने वाले। सवाल उठाने वाले। इस संदर्भ में उनकी लघुकथा 'कटे हुए पंख' का पाठ कर, देश की सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक संरचना को समझने का प्रयत्न उचित होगा। आपातकाल में लिखी यह लघुकथा तोते के माध्यम से सारी स्थिति बयान कर देती है। इसका निम्न संवाद बहुत महत्त्वपूर्ण है– ''बेटा, प्रजा शेर होती है। बादशाह की कुशलता इसी में है कि शेर पर सवार रहे। नीचे उतरने का मतलब है मौत।'' यह एक निरंकुश बादशाह को उसके मरते हुए बाप से तकनीकी सीख थी। फिर निरंकुश बादशाह ने यही किया भी। ऐसे में एक तोता ने उड़–उड़कर चहुँदिशा चेतना जगाने का कार्य किया, तब बादशाह ने बहुत चालाकी से तोते के पर काटकर उसे सदैव के लिए एक जगह पर स्थिर–खामोश भी कर दिया। बादशाह ने ऐसी कथा रची कि जनता भी मूर्ख बन गई।

मानव और मानवेतर पात्रों का आधार बनाकर 'कटे हुए पंख' विस्तृत फलक की लघुकथा है। इसके आलोक में कहना उचित होगा कि आज का समय भी ऐसा है। जिसने चेतना का प्रसार किया, वह मार दिया गया।...

शंकर शैलेंद्र के गीत का मुखड़ा है– ''तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत में यकीन कर,/अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर।'' स्वर्ग को जमीन पर उतार लाने का कार्य जिसने भी किया, संकीर्ण समाज और लंपटधारियों ने उस व्यक्ति या बुद्धिजीवी के प्राण हर लिये। सर्वप्रथम इसके शिकार बने सुकरात। वर्तमान कालावधि में भी मरने वालों की गणना नहीं! दुनिया को स्वर्ग बनाने का सपना देख रहे बुद्धिजीवियों का अपराध यही है कि उनका कोई अपराध नहीं। फिर भी वे मार दिए जाते हैं। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथा 'अपराधी' में भी यही सब कुछ है। लघुकथा के समतल परिदृश्य पर एक ऐसा व्यक्ति, जिसका टूटा–बिखरना ही उसकी नियति है। इसमें दो बिंदु महत्वपूर्ण हैं। एक मनुष्य का स्वाभाविक चाल–ढाल, रंग–रूप। दूसरा, लंपट टाइप मनुष्य चरित्र का यथार्थ। ऐसे में फिर सदा हँसाने–खिलखिलाने वाला एक व्यक्ति, विसंगतियों–विडंबनाओं और बुरे चरित्रों का शिकार होकर इस दुनिया से असमय रुखसत हो जाता है, पर मृत्यु से पूर्व उसने कई अच्छे कार्य किए। ये कार्य ही उसके शत्रु बन गए। लघुकथा की अंतिम पंक्ति द्रष्टव्य है, ''लोग कह रहे थे, उसने आत्महत्या की है।''

यह है इस दुनिया की वास्तविकता... चेतनाशील व्यक्तियों को मारकर जस्टिफाई भी कर देती है, पर अपनी गलती नहीं स्वीकारती। यह अंधभक्ति, धार्मिक कट्टरता को शय देने के कारण अधिक होता है कि धर्म–संप्रदाय के खिलाफ बोलने पर यह हुआ। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की इस विषयक 'पागल', 'कट्टरपंथी' और 'धर्मनिरपेक्ष' आदि लघुकथाओं

की अनुगूँज, क्षण–क्षण सोचने–विचारने को विवश करती है।

यहाँ एक प्रश्न है कि क्या वास्तव में साम्प्रदायिकता और धर्म का आपस में कोई सम्बन्ध है या सांप्रदायिकता का प्रश्न अलग है और धर्म का भी अलग! या इन दोनों नामों के आधार पर साम–दाम–दंड–भेद के पोषक तत्वों द्वारा कोई खूनी खेल खेलने का खेला चल रहा है। इस सम्बन्ध में हिंदी के शीर्षस्थ कवि नरेश सक्सेना की उक्ति बहुत महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती है, ''सांप्रदायिकता का धर्म से कुछ लेना–देना नहीं है। यह मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियाँ हैं, जो तरह–तरह से अपना खेल खेलती हैं। विडंबना यह है कि पशु संगठित हैं और तथाकथित मनुष्य असंगठित।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथाओं के विषय में निष्कर्ष निकालना अधिक कठिन नहीं। लघुकथाओं के आस्वादनोपरांत उनके पाठकगण भी भली–भाँति परिचित हैं कि वह सरल ह्रदय के सरल–शांत, सक्रिय लघुकथाकार हैं। उनकी लघुकथाओं की जमीन इतनी साफ–सुथरी होती है कि उसे देखकर नई पीढ़ी में भी अपनी जड़–जमीन साफ–सुथरी करने की इच्छा बलवती हो उठती है। उनकी लघुकथाएँ जीवन, समाज, मनोविज्ञान और अपने पर्यावरण की सूक्ष्म एवं सुंदरतम अभिव्यक्ति हैं, जो थोड़ा रुक–ठहरकर सोचने पर विवश करती हैं। एक प्रकार से वह लेखनी द्वारा सर्वप्रथम अपनी लघुकथाओं से, तदुपरान्त लघुकथाओं द्वारा सहृदयों से संवाद करते हैं। इस प्रकार उनकी लघुकथाएँ संवाद की प्रक्रिया में गहरे रूप से संवादी होती हैं। इस क्रम में आदर्श प्रस्तुति 'ऊँचाई' का बिम्ब मन–मस्तिष्क में रखना होगा। प्रेमचंद साहित्य के मर्मज्ञ कमल किशोर गोयनका का कथन है, ''लघुकथा एक लेखकविहीन विधा है''। यह कथन रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' के संदर्भ में पूर्णतः औचित्यपूर्ण है। वह कभी भी कथा के अंतःपुर में खड़े नहीं होते। न इस पक्ष में, न उस विपक्ष में। न बीच में; पर कथावस्तु की स्वाभाविक प्रवाह की दिशा में अवश्य होते हैं। तभी उनकी लेखनी से स्मरणीय लघुकथाएँ निकलती हैं। इन्हीं कारणों से वह हिंदी लघुकथा के क्षेत्र में ऊँचाई के उच्च पायदान पर खड़े हैं कि उन्हें न देखना कभी संभव नहीं।

{प्रस्तुत आलेख श्री योगराज प्रभाकर संपादित 'लघुकथा कलश' (जुलाई–दिसम्बर 2021 अंक) एवं प्रो. स्मृति शुक्ल संपादित 'रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' (अभिनन्दन ग्रंथ)' में प्रकाशित डॉ. खेमकरण सोमन जी के आलेख 'हिन्दी लघुकथा के क्षेत्र में रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की ऊँचाई' का अंश है।}

■ द्वारा श्री बुलकी साहनी, प्रथम कुंज, अम्बिका विहार, ग्राम व पो. भूरारानी, रुद्रपुर, जिला उधम सिंह नगर, उ.खंड–263153 / मो. 090450 22156

डॉ. संध्या तिवारी

अकुंठ भावोद्रेक का दूसरा नाम
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

लघुकथा वर्तमान काल की ऐसी विधा है जो अपने रूप में अर्वाचीन और प्राचीन दोनों है। लघुकथा को वर्तमान के लब्धप्रतिष्ठित कई वरिष्ठ दिग्गज लेखकों का वरदहस्त प्राप्त है। ऐसा ही एक ख्यातनाम है

'रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी' का। हिमांशु जी अध्यापन क्षेत्र से जुड़े रहे हैं। वह केन्द्रीय विद्यालय संगठन में प्रिंसिपल के पद से अवकाश प्राप्त हैं। यों अध्यापक ऊपर से प्रिंसिपल साथ में कवि हृदय। इसलिए उनके लेखन में एक सधी हुई या यों कहा जाय कि परिष्कृत लेखनी के दर्शन होते हैं। उनकी लघुकथाओं में अकुंठ भावोद्रेक, अप्रस्तुतों के भावोव्यंजकता, सजीव बिंबात्मकता और आयासहीन भाषाशैली मिलती है। रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी ने लगभग सभी विधाओं में कलम चलाई है लेकिन लघुकथा को उनका विशेष स्नेह प्राप्त है। लघुकथा में उनकी कलम सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक, धार्मिक उन्माद आदि सभी विषयों पर खूब चली है। और बड़ी बारीकी से सभी पक्षों को उकेरा गया है। मैं यहाँ उनकी दो लघुकथाओं की चर्चा विशेष रूप से करना चाहूँगी– 'अपराधी' और 'ऊँचाई'।

'अपराधी' लघुकथा समाज के चेहरे पर एक करारा तमाचा है। समाज कब किसको क्या कह दे, कुछ पता ही नहीं चलता। समाज की मान्यताएँ समाज के लोग ही तय करते हैं और भीड़ की कही बातों को लोग सच मानकर व्यक्ति विशेष का वर्तमान और भविष्य तय कर देते हैं। इस लघुकथा में एक सुंदर निर्मल मन वाला व्यक्ति अपनी धरती को, अपने परिवेश को खूबसूरत बनाने के लिए क्या नहीं करता परन्तु अंततोगत्वा उसके हिस्से आती है जीवन भर की टीस या कि फिर जीवन से ही हाथ धो बैठने की नियति। यह लघुकथा समाज का मनोविज्ञान दिखाने के साथ–साथ एक साधु मन का दार्शनिक पक्ष भी पाठक के सामने रखता है। 'अपराधी' दार्शनिक लघुकथा का सुंदर उदाहरण है।

'ऊँचाई' हिमांशु जी की एक और सुन्दर लघुकथा है। पिता और पुत्र एक–दूसरे का आधार होते हैं लेकिन कभी परिस्थितिवश अथवा स्वार्थवश पुत्र पिता को अपने पर आश्रित समझने लगता है, और पराधीन व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं। उसे तो सभी बोझ ही समझते हैं। परन्तु बेटा जब तक पिता पर आश्रित रहता तब तक पिता न उससे कन्नी काटता और न उसे बोझ समझता है। 'ऊँचाई' लघुकथा में जो तानाबाना बुना गया है, वह रिश्तों के अन्दर छुपे स्वार्थों और सरलता को ध्वनित करता है। पढ़ने में यह लघुकथा एक आम घर की घटना है लेकिन बूढ़े पिता का बेटे के हाथ पर पैसे रखते ही लघुकथा अपनी ऊँचाई पा लेती है। लघुकथा का 'ऊँचाई' शीर्षक तो बहुत सार्थक है ही, साथ ही सरल भाषा–शैली और भाव प्रवणता ने इस कथा में चार चाँद लगा दिए हैं।

काम्बोज जी, सुकेश साहनी जी के साथ मिलकर पिछले दो दशकों से लघुकथा से संबंधित ऑनलाइन पत्रिका निकाल रहे हैं। उस पत्रिका में हर माह नवीन और श्रेष्ठ सामग्री होती है। देश, देशान्तर, ऑडियो, अनुवाद से लेकर लेख, प्रतियोगिता, मेरी पसन्द अथवा कि लघुकथा जगत से जुड़े समाचार सभी कुछ एक ही फलक पर देखने को मिल जाते हैं। पूरे महीने अथक परिश्रम कर लघुकथा डॉट कॉम का संचालन करना कोई आसान काम नहीं। गुणवत्ता और तकनीक काम्बोज जी से सीखना चाहिए।

यों मैंने पहले भी कहा कि हिमांशु जी ने लगभग सभी विधाओं में लिखा है फिर भी लघुकथा पर आपका स्नेह निःसंदेह ज्यादा है। इसीलिए लघुकथा प्रतियोगिताओं में बहुधा आपको निर्णायक बनाया जाता है। कनाडा से निकलने वाली त्रैमासिक पत्रिका हिन्दी चेतना के भी आप कर्णधार हैं और लघुकथा से संबंधित पुस्तकों का सम्पादन तथा

पत्रिकाओं का अतिथि सम्पादन भी आपने बखूबी किया है।

आपका व्यक्तित्व सरल एवं संकोची है परन्तु बेहद नम्र मितभाषी एवं कर्मठ है। लघुकथा–जगत् आने वाले समय में आपकी उपलब्धियों पर न केवल इतराएगा अपितु इतिहास आपका नाम भी बार–बार दोहराएगा। लघुकथा से जुड़े लोगों को हिमांशु जी का स्नेहाशीष सदैव मिलता रहे, यही शुभकामना है...

■महिला पुलिस चौकी के सामने, निकट सलोनी हॉस्पीटल, यशवंतरी रोड, पीलीभीत, उ.प्र./मो. 07017824491

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

विनम्रता काम्बोज जी का प्रमुख गुण है

लघुकथा ही जिन अग्रजों के नाम की पहचान बन गई, उनमें एक नाम है आदरणीय रामेश्वर काम्बोज जी का। यद्यपि क्षणिका और हाइकु भी आपकी पहचान रहे हैं; किन्तु लघुकथा की बात करूँ, तो आपको लघुकथा के सैद्धांतिक पक्ष में महारत हासिल है। विषय का चयन, उसकी गहराई के साथ उसका प्रस्तुतीकरण कैसे हो, यह आपकी लघुकथा में देखा जा सकता है। गंगा–स्नान, कट्टरपंथी, घुटन, ऊँचाई, छोटे–बड़े सपने, चक्र, चट्टे–बट्टे, कमीज आदि लघुकथाएँ पाठकों को प्रभावित करती हैं। लघुकथा की भाषा तथा उसकी रचना–प्रक्रिया को लेकर आपके कई आलेख नई पीढ़ी को नवीन संज्ञान देते हैं।

उनकी कई लघुकथाओं का फिल्मांकन इस बात का प्रमाण है कि उनकी लघुकथाएँ कितनी प्रभावशाली होती हैं। लघुकथा डॉट काम के माध्यम से आप देश–विदेश में इस विधा का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। इन सबसे बढ़कर आपका विनम्र व्यवहार है। अविराम साहित्यिकी के इस अंक हेतु आपको हार्दिक शुभकामनाएँ।

■ 30, सीनियर एम.आई.जी., अप्सरा काम्प्लेक्स, इन्द्रपुरी, भेल क्षेत्र, भोपाल–462021,म.प्र.

अनिता मंडा

हिमांशु जी की लघुकथाएँ विशिष्ट हैं

...हिमांशु जी की लघुकथाओं का साहित्य–जगत् में विशेष स्थान है। कई बार गहरा संदेश, कई बार व्यवस्था पर व्यंग्य करती लघुकथाएँ पैनी धार लिये होती हैं। 'असभ्य नगर' लघुकथा–संग्रह की सभी लघुकथाएँ एक से बढ़कर एक हैं। सामाजिक–राजनीतिक विद्रूपताओं को उजागर करतीं, सामाजिक–नैतिक मूल्यों के पतन को लक्ष्य करती लघुकथाएँ मन की संवेदना को जगाती हैं। यही सच्चे साहित्यकार का धर्म भी है कि वह हमारी सुप्तता को समाप्त करे। बदलते समय में परिवर्तन तो आए ही हैं, कुछ सकारात्मक हैं, तो कुछ नकारात्मक भी। इंसानी रिश्तों की गरिमा अकथनीय रूप से रसातल में गई है। स्वार्थ–वशीभूत पात्रों की मनोदशा को लक्ष्य कर सुंदर लेखन किया गया है।...

हिमांशु जी की लघुकथाओं से गुजरते हुए मैंने शब्दों की गहराई को समझा।

शब्दों की कीमत जानी, जैसे रेगिस्तान से गुजरता यात्री पानी की एक–एक बूँद का बड़ी समझदारी से उपयोग करता है, वही बात लघुकथा के संदर्भ में भी है। इनकी एक लघुकथा 'ऊँचाई' की ऊँचाई का तो इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि बीसियों बार यह लघुकथा चुराई जा चुकी है। हिंदी और पंजाबी में इस पर लघु फिल्म बन चुकी हैं। 'धर्मनिरपेक्ष', 'गंगा–स्नान', 'अश्लीलता', 'नवजन्मा', 'दूसरा सरोवर', 'चक्रव्यूह', 'मुखौटा', 'जहरीली हवा', 'असभ्य नगर', 'कमीज', 'घुटन' आदि कई लघुकथाएँ शिक्षात्मक भी हैं, इनका शिल्प सीखने में सहायक है।

हिंदी की पाँच प्रमुख वेबसाइट में लघुकथा डॉट कॉम भी शुमार है, जिसका सह–संपादन हिमांशु जी कर रहे हैं।...

{प्रस्तुत आलेख प्रो. स्मृति शुक्ल संपादित 'रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' (अभिनन्दन ग्रंथ)' में प्रकाशित सुश्री अनिता मण्डा जी के आलेख ''साहित्य पथ के अनथक यात्री : श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु'' का अंश है।}

■ आई–137, द्वितीय तल, कीर्ति नगर, दिल्ली–110015

विरेंदर 'वीर' मेहता

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' :
लघुकथा के समर्पित व्यक्तित्व

साहित्य की निर्मल धारा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, किसी भी रूप से जुड़ा व्यक्ति साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' से परिचित न हो, ऐसी संभावना कम ही है। स्वभाव से शांत, संकोची किंतु गंभीर और कोमल हृदय के रामेश्वर काम्बोज गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में अपनी लेखनी का चमत्कार दिखा चुके हैं। उनके द्वारा सृजित लेखन में लघुकथा, समीक्षा, बाल साहित्य, सामाजिक आलेख, आदि के साथ काव्य विधा के कमोबेश सभी रूपों (कविता, मुक्तक, दोहे, हाइकु–ताँका आदि) में उनका श्रेष्ठ लेखन सामने आया है। उन्होंने बीते पाँच दशक से अधिक के अपने साहित्यिक कार्यकाल में अभी तक विभिन्न विधाओं में चालीस के क़रीब पुस्तकों और विभिन्न पत्रिकाओं के कई विशेषांकों का संपादन किया है। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में कई व्यंग्य, काव्य पुस्तकों के अनुवाद और समालोचना एवं व्याकरण से जुड़ी कई कृतियों का सृजन भी किया है।

जहाँ तक वर्तमान की चर्चित विधा 'लघुकथा' की बात है, इस विधा से काम्बोज जी का संबंध बहुत पुख़्ता रहा है। लघुकथा से उनका जुड़ाव सही मायनों में, 1972 में उनकी प्रथम लघुकथा के प्रकाशन (जगदीश कश्यप जी के संपादन में मिनियुग में प्रकाशित) से हुआ। तब से वर्तमान तक वे निरंतर अपना श्रेष्ठ 'लघुकथा' को देते आ रहे हैं।

ऊँचाई, गंगा–स्नान, संस्कार, दूसरा सरोवर, चिरसंगिनी और नवजन्मा जैसी जाने कितनी लघुकथाओं के ज़रिए उन्होंने विधा से जुड़े रचनाकारों को विधा में कथ्य और शैली के नए सूत्र दिए हैं। उन्होंने अपनी लघुकथाओं से न केवल विधा को सशक्त किया; बल्कि विधा के प्रति लोगों का, समाज का दृष्टिकोंण भी बदला। उनका लघुकथा संग्रह 'असभ्य नगर' लघुकथाओं का एक ऐसा दस्तावेज़ है, जो नई पीढ़ी के लिए एक

धरोहर के रूप में देखा जा सकता है। लघुकथा समालोचना के क्षेत्र में उनकी लिखी पुस्तक 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' सहज ही एक गंभीर प्रयास है, जो विधा के तात्कालिक दृश्य को सामने रखता है। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा संपादित अनेक संकलन एवं विशेषांक भी विधा को समृद्ध करने में सहायक रहे हैं। भाषा और व्याकरण के प्रकाण्ड जानकार काम्बोज जी का पंजाबी, उर्दू, गुजराती, नेपाली आदि कई राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में लघुकथा के लिए किया गया कार्य सहज ही अनुकरणीय है।

उन्होंने समय–समय पर विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों के द्वारा विधा को हर दृष्टि से समृद्ध करने का प्रयास किया है। इसका सबसे सशक्त उदाहरण, काम्बोज जी द्वारा सुकेश साहनी जी के साथ मिलकर पिछले डेढ़ दशक (2007 से) चलाई जा रही हिन्दी लघुकथा की पहली मासिक वेब साइट 'लघुकथा डॉट कॉम' है। उनके साझा प्रयास में ही पिछले कई वर्षों से चल रहे 'त्रिवेणी' 'सहज साहित्य' और 'हिन्दी चेतना डॉट कॉम' जैसे प्रयास उनके साहित्य के प्रति समर्पण के कुशल परिचायक हैं।

अपनी अनवरत साहित्यिक यात्रा में उन्होंने अपने अमूल्य अनुभव कोष से लघुकथा को हमेशा कुछ सार्थक देने का प्रयास किया है और जहाँ भी विधा को उनके मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ी, उन्होंने कभी निराश नहीं किया। अंततः मुझे लगता है कि 'लघुकथा' के लिए काम्बोज जी का योगदान ठीक उस फिल्म निर्देशक की तरह है, जिसके नज़रिए की एक–एक छाप फ़िल्म में दिखाई देते हुए भी वह निर्देशक प्रत्यक्ष में नज़र नहीं आता; लेकिन पर्दे के पीछे रहकर भी वह पूरी फ़िल्म पर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि जमाए रखता है।

■एफ–62, फ्लैट नं.8, गली–7, निकट मंगल बाज़ार, विकास मार्ग, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–92 / मो. 09818675207

ज्योत्स्ना कपिल

लघुकथा में
हिमांशु जी का योगदान अमूल्य है

वरिष्ठ पीढ़ी में श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' एक ऐसा नाम है, जिनकी ऊर्जा, कर्मठता, सक्रियता एवं सृजनशीलता देखकर हैरत होती है। लघुकथा, काव्य की हर विधा में अनवरत सृजनशील, हिमांशु जी ने अपना जीवन साहित्य को ही समर्पित कर दिया है। पिछले लगभग डेढ़ दशक से आप सुकेश साहनी जी के साथ लघुकथा को समर्पित वेबसाइट लघुकथा डॉट कॉम का संचालन कर रहे हैं। न जाने कितने ही संकलनों एवं पत्रिकाओं का आपने सम्पादन किया है। काव्य की तो शायद ही कोई विधा आपसे अछूती रही होगी। फिर चाहे वह दोहा हो या हाइकु, माहिया हो या सेदोका, ताँका हो या कोई छंद। हर क्षेत्र में आपको महारत है।

इतनी विधाओं में आपकी दक्षता एवं साधना देखकर आपके लिए आदर का भाव जागता है। आपकी कई लघुकथाएँ बहुत चर्चित एवं तीक्ष्ण प्रभाव छोड़ने वाली हैं। इनमें से एक लघुकथा है 'ऊँचाई', जो बहुत चर्चित रही एवं इस पर शॉर्ट फ़िल्म भी बनी है। इस कथा में मुख्य पात्र के पिता बिना किसी पूर्वसूचना के, उसके घर आते हैं। वह पति–पत्नी यह सोचकर घबरा जाते हैं कि अवश्य ही वह धन की आवश्यकता हेतु आए

हैं, जबकि उनके स्वयं के खर्चे पूरे नहीं पड़ते हैं। परन्तु जब पिता उसकी सेहत की चिंता करते हुए हजार रुपये उसके हाथ पर रखते हैं, तो वह अपनी छोटी सोच व पिता के लिए कुछ न कर पाने की शर्मिंदगी से भर उठता है। भावनाओं का तूफ़ान–सा आता है। वह स्वयं को उनके सम्मुख बहुत छोटा महसूस करता है। इसी प्रकार एक लघुकथा है– 'नवजन्मा', जिसमें पुरुष पात्र (जिले सिंह) घर आता है, तो उसे सूचना मिलती है कि उसकी पत्नी ने पुत्री को जन्म दिया है। दादी सोचती है कि अब न जाने किस–किस के आगे सर झुकाना पड़ेगा, जिले सिंह की जिंदगी बेटी के लिए दहेज जुटाते गुज़र जाएगी। जिले सिंह की बहिन और माँ भी परेशान हैं। जब वह पत्नी के पास जाता है तो वह भी शर्मिंदा हो उठती है कि अब पति उसकी लानत–मलामत करेगा। पत्नी को लग रहा है जैसे पुत्री को जन्म देकर, उससे कोई बड़ा गुनाह हो गया है। तब पात्र (जिले सिंह) बिना कुछ कहे घर से निकल जाता है। कुछ देर बाद जब वह घर लौटता है, तो उसके साथ एक ढोल बजाने वाला है। पात्र ढोल के स्वर पर ताल मिलाकर नाचने लगता है और अचानक वातावरण में छाया तनाव एकदम धुल जाता है तथा हर्ष की लहर दौड़ जाती है।

इसी प्रकार 'धर्म निरपेक्ष' उनकी एक बहुत तीखी कथा है। जिसमें धार्मिक उन्माद के कारण शहर में दंगा फैला हुआ है। लोग एक–दूसरे का क़त्ल कर रहे हैं और मासूम बच्चों तक पर भी रहम नहीं किया जा रहा है। जिन लोगों ने पहले कभी एक–दूसरे को देखा तक नहीं है, वह भी एक–दूसरे की जान के गाहक बने हुए हैं। वे आपस में माँ–बहन की गालियाँ देते हैं तथा एक–दूसरे को छुरा घोंप देते हैं। ऐसे में पास में ही सूखी हड्डी चिचोड़ रहा एक कुत्ता, उनकी लाशों के पास आता है, उन्हें सूँघता है और समान भाव से दोनों पर पेशाब करके पुनः हड्डी चिचोड़ने में मशगूल हो जाता है। इस प्रकार एक निकृष्ट पशु तक अपने धर्मनिरपेक्ष होने का सबूत देने में सक्षम होता है।

हिमांशु जी की इसी प्रकार कई अन्य कथाएँ हैं जो पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ने में सक्षम रही हैं तथा उसे आत्मचिंतन करने पर विवश करती हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक विद्रूपता, कुरीतियों पर करारी चोट तथा राजनीति पर तीखा कटाक्ष है। कितने ही नव रचनाकारों को आप प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाने में योगदान भी दे रहे हैं। हिमांशु जी का साहित्य के प्रति योगदान अमूल्य है।

■ 18– ए, विक्रमादित्य पुरी, स्टेट बैंक कॉलोनी, बरेली–243005, उ.प्र./मो. 09412291372

प्राप्त पत्रिकाएँ : सूची–02

दिवान मेरा : साहित्यिक द्विमासिकी। सम्पादक : नरेन्द्र सिंह परिहार। वार्षिक सहयोग : रु0 120/–। सम्पर्क : सी–004, उत्कर्ष अनुराधा, सिविल लाईन, नागपुर–440001 (महाराष्ट्र)।

न्यू इण्डिया समाचार : समाचार पाक्षिक। सम्पादक : जयदीप भटनागर। मूल्य : निःशुल्क। सम्पर्क : कमरा संख्या–278, ब्यूरो ऑफ आउटरीच एंड कम्यूनिकेशन, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली–03।

शिष्ट विनोद : हास्य–व्यंग्य पत्रिका। संपादक : अमरेन्द्र कुमार सिंह। मूल्य : अंकित नहीं। पता : रधुरामपुर (खाद फैक्ट्री के पास), पो. चाँदमारी, दानापुर कैंट–801503, जिला पटना, बिहार।

पुष्पक साहित्यिकी : साहित्यिक पत्रिका। सम्पादक : डॉ.अहिल्या मिश्र/आशा मिश्र 'मुक्ता'। वार्षिक मूल्य : रु0 300/–। सम्पर्क : 93/सी, राजसदन, वेंगलराव नगर, हैदराबाद–500038 (आं. प्र.)। ■

पत्रिकाओं की मुख्य सूची आवरण पृष्ठ 03 पर

।।'असभ्य नगर और अन्य लघुकथाएँ' संग्रह पर चर्चा।।

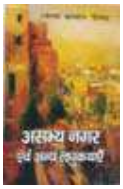

{श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी का एक मात्र लघुकथा संग्रह 'असभ्य नगर' (परिवर्द्धित संस्करण– 'असभ्य नगर एवं अन्य लघुकथाएँ) काफी चर्चित हुआ है। अनेक मित्रों ने समीक्षात्मक–समालोचनात्मक आलेखों के रूप में संग्रह पर अपने विचार रखे हैं। इनमें से कुछ मित्रों के संपादित आलेख हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। ये सभी आलेख 'गद्य–तरंग (गद्य अनुशीलन) पुस्तक से साभार लिए हैं। इन्हें संपादित करते हुए कहीं–कहीं कुछेक अंशों को छोड़ दिया गया है। छोड़े गये अंशों के स्थान पर तीन डॉट्स का उपयोग किया गया है।}

गोविन्द राव मराठे

असभ्य नगर : असंगतियों पर नजर

आलोच्य पुस्तक (असभ्य नगर) में जाने–माने लघुकथा लेखक, रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी की छोटी–बड़ी 62 लघुकथाएँ संगृहीत हैं, जो लघुकथा की परिभाषा की चौखट में भली प्रकार समाई हुई हैं, किसी भी विषय को कम से कम शब्दों के ढाँचे में ढालकर इसे पाठकों के अंतःकरण में गहराई तक उतार देने की प्रतिभा एक अनोखी कला निरूपित हो सकती है, इस पुस्तक के लेखक इस कला में पर्याप्त रूप से पारंगत हो चुके हैं, ऐसा मानना उनकी कृतियों के परिप्रेक्ष्य में ग़लत नहीं होगा।

कहानी तथा लघुकथा के लेखन–तंत्र में यही तो मूलभूत अंतर है कि जहाँ कहानी में कहानीकार अपने आशय को कुछ अधिक व्यापकता दे सकता है, वहीं लघुकथा अपने रचयिता को वैसा करने की अनुमति नहीं देती। उसमें तो इस आशय को एक सीमित दायरे के भीतर रखकर ही उसे विशद करना पड़ता है। यही एक अनिवार्यता है और इस अनिवार्यता के मद्देनजर इस संग्रह के लेखक लघुकथा के सृजन को कसौटी पर सोलहों आने खरे उतरे हैं। इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए इस संग्रह की केवल मात्र सात पंक्तियों की 'वफादारी– शीर्षक लघुकथा का जायजा लेना समुचित होगा, जिसमें मनुष्येतर प्राणियों की वफादारी की तुलना में सभ्यता के शिखर तक पहुँचने का दावा करने वाली मानव जाति की वफादारी कितनी तुच्छ है, इस असलियत का संकेत बखूबी किया गया है। लघुतम होने के बावजूद उसकी यथार्थ विषय वस्तु अपने आप में परिपूर्ण कही जा सकती है।

इस प्रकार इस पुस्तक की ग्यारह पंक्तियों तक ही सीमित कुछ लोगों में भी उनके विषयों को आवश्यक विशिष्टता प्रदान करने में लेखक सफल हो सके हैं। इनकी इस उपलब्धि का श्रेय उनकी धड़कन को जाता है, जो उन्हीं के कथनानुसार रचनाओं के साथ जुड़ी हुई है।

इस संग्रह की प्रायः सभी लघुकथाएँ जहाँ एक ओर देश तथा समाज में व्याप्त

दहेज आदि कुरीतियों की खबर लेती हैं, वहीं दूसरी ओर सर्वत्र फैले व्यापक भ्रष्टाचार पर भी गहरी चिन्ता व्यक्त करती हैं। इनके अलावा अभिशाप के रूप में देशवासियों के पल्ले पड़ी हुई गरीबी, कुण्ठा, वेदना तथा निराशा के ज्वलंत प्रश्नों पर भी प्रेरक ढंग से प्रकाश डाला गया है। अनीति के फैलाव की समस्या भी अछूती नहीं छोड़ी गई है।

'चक्रव्यूह' लघुकथा में मध्यम परिवारों की आर्थिक तथा अन्य भी परेशानियों और मजबूरियों का व्यापक वर्णन करते हुए लेखक ने आगे चलकर 'आँख का तिल' में दहेज की कुप्रथा की विभीषिका चित्रित की है। 'गंगा–स्नान' कथा में विद्यादान को गंगा में डुबकी लगाने से भी अधिक पुण्यदायक निरूपित किया गया है। 'खुशबू' में एक जागरूक नारी का अपने परिवार के प्रति प्रेम और कर्तव्य का बखूबी चित्रण किया गया है। इसके ठीक विपरीत पुत्रों द्वारा अपने अभिभावक माता–पिता के प्रति बरती जाने वाली लापरवाही 'अपने–अपने सन्दर्भ' में सामने लाई गई है।

लेखक ने राजनीति, पुलिस विभाग तथा नेताओं के काले कारनामों का चिट्ठा भी उजागर किया है। 'कालचिड़ी' में वधू–परीक्षण पर तीखा प्रहार किया है। 'स्क्रीन टेस्ट' में चलचित्र जगत की वासना का शिकार बनी महिलाओं की खेदजनक तस्वीर उतारी गई है। इस संग्रह के नामाभिधान वाली अंतिम कथा 'असभ्य नगर' में नगरों तथा वनों का अंतर बड़े व्यंग्यात्मक एवं रोचक ढंग से वर्णित किया गया है।

कथाओं की भाषा सरल, बोधगम्य तथा चुटीली भी है और कथन शैली आधुनिक तंत्र के अनुरूप है।...

■ संपर्क : अनुपलब्ध

शराफत अली खान

वर्तमान समाज की विसंगतियों का दर्पण

समाज की संरचना की अवधारणा का 'स्वप्न' विचारको में भले ही सुखद प्रतीत रहा होगा परंतु यह विडंबना रही कि समाज के उत्तरोत्तर विकास के साथ ही साथ उसमें नाना प्रकार की विसंगतियों, विद्रूपताओं ने जन्म लिया; जिससे जनमानस के साथ ही साथ संवेदनशील हृदयों को इसने झकझोरा है।

वर्तमान में लगभग सभी भारतीय भाषाओं में लघुकथा लेखन हो रहा है। यूँ तो लघुकथा सदियों से विश्व के लगभग सभी देशों में किसी न किसी रूप में लिखी जा रही थी किंतु स्वतंत्र विधा के रूप में उसका स्थान नहीं था। हिंदी में लघुकथा लेखन कई दशकों से हो रहा है और अब वह प्रयोग न होकर एक स्वतंत्र विधा के रूप में उभरी है तथा पाठकों में भी लोकप्रिय होती जा रही है। लघुकथा को गंभीरता से लिखने वाले लघुकथाकारों ने इसे आज इस मुकाम तक पहुँचा दिया है कि आज समीक्षक इसके अस्तित्व को स्वीकारते हुए इसे स्वतंत्र विधा मानने को विवश हैं। समर्थ लघुकथाकारों की यूँ तो एक लंबी श्रंखला है किंतु बकौल श्री सुकेश साहनी लघुकथा जगत में श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी का नाम बहुत आदर से लिया जाता है।

हिमांशु जी अपने लघुकथा संग्रह 'असभ्य नगर' में अपनी 62 लघकुथाओं में समाज की नाना विसंगतियों को लेकर पाठकों के समक्ष उपस्थित हुए हैं। इन लघुकथाओं में उन्होंने एक उपदेशक की नहीं, बल्कि एक दर्शक की भूमिका निभाही है, जो लघुकथाकार की लेखकीय ईमानदारी का प्रमाण है।

श्री हिमांशु जी ने समाज के लगभग सभी पक्षों पर अपनी कलम चलाई है। यथा– परिवार, राजनीति, दफ्तरी जीवन, धार्मिक उन्माद और सहिष्णुता आदि। 'असभ्य नगर' की अधिकतर लघुकथाएँ समाज के खोखलेपन की भयावहता के चित्र प्रस्तुत करती हैं। इस संकलन में ऊँचाई, चक्रव्यूह, पिघलती हुई बर्फ, कालचिड़ी, स्नेह की डोर, आँख का तिल, अपने–अपने संदर्भ, उड़ान आदि लघुकथाएँ परिवारों में हो रहे बदलावों पर कहीं निराशा को जन्म देती हैं, तो कुछेक परिवार में आशा और विश्वास को बल देती प्रतीत होती हैं।

'राजनीति' शब्द समाज में आज गाली के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता जा रहा है। राजनीति की विद्रूपता को लघुकथा– विजय–जुलूस, प्रवेश–निषेध, उपचार, मुखौटा, अर्थ–परिवर्तन, कटे हुए पंख, राजनीति, चोट में खलनायकनुमा चरित्रों के माध्यम से चित्रित किया गया है।

चूँकि हिमांशु जी शिक्षा–क्षेत्र से जुड़े हैं अतः उनके द्वारा शिक्षा–जगत् पर केन्द्रित, लिखी सभी लघुकथाएँ चाहें वे सच्चाई, शिक्षा–काल हों अथवा धन्यवाद, शाप सभी यथार्थ के निकट खड़ी हैं।...

अन्य लघुकथाकारों की तरह हिमाशुं जी ने भी धार्मिक उन्माद और सहिष्णुता पर अपनी पैनी कलम चलाई है, वहीं दूसरी ओर लेखन–क्षेत्र में घुस आए भेड़ियों को खलनायक और आत्महन्ता लघुकथाओं में बेनकाब किया है। लघुकथा महात्मा और डाकू तथा नई सीख में बोधकथा का भाव होता है।

समाज के खोखलेपन और गिरते मूल्यों पर लिखी छोटे–बड़े सपने, सुबह हो गई, जाला, परख, उड़ान, स्त्री–पुरुष लघुकथाएँ यथार्थ के दर्द को पूरी शिद्दत से प्रस्तुत करती हैं।

संग्रह की खुशबू, कट्टरपंथी, लौटते हुए लघुकथाएँ हमें आशान्वित करती हैं। संग्रह की एक अन्य श्रेष्ठ लघुकथा भग्नमूर्त्ति समाज के तथाकथित अहंवादी लेखक समाज के गाल पर करारा तमाचा है, जो लेखक होने का दंभ भरते हैं किन्तु शिष्टाचार का क, ख, ग भी नहीं जानते।

हिमांशु जी का यह पहला संग्रह 'असभ्य नगर' निःसन्देह लघुता में निरथर्कता के खतरे की चुनौती को पूरी तरह नकारता हुआ लघुकथा जगत् में मील का पत्थर साबित होगा।

■ 343,फ़ाइक इन्क्लेव, फेज–2, पो. रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, उ.प्र./मो. 07906849035

नवीन चतुर्वेदी

असभ्य नगर : मानवीय संवेदनाओं का स्वर

'असभ्य नगर' श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की बासठ

लघुकथाओं का संकलन है। लघकुथा को लेकर हिमाशुं जी के पास भावनात्मक आवेग के साथ मूल्यपरक जीवन–दृष्टि भी है। इन लघुकथाओं को पढ़ते हुए हम हृदय की उन धडकनों के साक्षी बन जाते हैं, जिन्हें हिमांशु जी ने अपनी लघुकथाओं की रक्तवाहिनी माना है।

वस्तुतः लघुकथा आकार की दृष्टि से ही लघु होती है, प्रभाव की दृष्टि से लघुकथाएँ स्थायी चिह्न छोड़ जाती हैं। लघुकथा का प्रारंभ और अंत दोनों ही रचना की मारक क्षमता को पैना बनाते हैं। लघुकथा यदि मन को विचलित कर दे, चेतना को झंकृत कर दे या विचार को उद्वेलित कर दे तो उसका सृजन सार्थक हो जाता है। लघुकथा में भावना का स्फोट तो होता ही है, शब्दों की मितव्ययता लघुकथा की प्रहार क्षमता को लक्ष्य केंद्रित करती है। यहीं लघुकथा शब्दभेदी (अंतर्भेदी) वाण बन जाती है। लघुकथा में शब्द मंत्रों की शक्ति पा जाते हैं, क्योंकि वे चेतना निर्झर से स्वतः बहकर आते हैं। सायास कलात्मकता की सृष्टि कभी–कभी लघुकथा की आत्मा को इतने बोझिल आवरण पहना देती है कि भावना का संस्पर्श हो ही नहीं पाता। इस संकलन में हिमांशु जी की अधिकतर लघुकथाएँ इस व्यर्थ के बोझ से मुक्त हैं।

इस संकलन की कुछ लघुकथाएँ मर्म को छू जाती हैं और कुछ लघुकथाएँ अपने संक्षिप्त कलेवर में भी किसी महागाथा का सार सौंप जाती हैं। गंगा–स्नान की पारो सामाजिक कल्याण को गंगा–स्नान से अधिक महत्त्वपूर्ण मानकर परिवर्तित मानसिकता का संदेश देती है, वहीं शाप में बिल्लू की माँ शाप के रूप में स्वार्थ आहत होने पर उपजी कटुता को आदर्शों पर वरीयता देकर एक विद्रूप को उजागर कर जाती है। लघुकथा 'संस्कार' संकलन की एक ऐसी लघुकथा है, जिसमें लघुकथा के समस्त गुण समाहित हैं। लघकुथा महात्मा और डाकू स्वर्ग–नरक की अवधारणा के माध्यम से वर्तमान न्याय व्यवस्था के कुरूप चेहरे पर लगे गंभीर मुखौटे को नोच लेने की एक ईमानदार कोशिश कही जा सकती है। वफादारी में कुत्ते के माध्यम से मनुष्य की कृतघ्नता को नकार के गहन स्वर दिये गए हैं। 'आरोप' में जहाँ राजनीति की आपराधिक प्रवृत्तियों का अनावरण है, वहीं स्त्री–पुरुष में तथाकथित शिक्षित वर्ग के मन का कलुष संदेहग्रस्त बौद्धिकता के पहाड़ पर जमी बर्फ की तरह एक बोझ भरा अवसाद छोड़ जाता है।

लघुकथा 'लौटते हुए' में आधुनिक समाज में नारी–पुरुष समानता की तमाम लफ़्फाजी के बाद भी पुरुष मानसिकता में बसे श्रेष्ठता के भाव को उजागर कर हिमांशु जी ने पति–पत्नी के सम्बन्धों में संदेह के कारण आने वाले भूचाल और पारस्परिक विश्वास की आधारशिला को गहरी मार्मिकता के साथ उद्घाटित किया है। संकलन की अंतिम लघुकथा 'असभ्य नगर', जो संकलन की शीर्षक कथा भी है, नागरी सभ्यता के बड़बोलेपन को जंगली कबूतर और उल्लू के बीच संवाद के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। लघकुथा का अंतिम वाक्य ''मेरे भाई, जंगल हमेशा नगरों से अधिक सभ्य रहे हैं, तभी तो ऋषि–मुनि यहाँ आकर तपस्या करते थे।'' असभ्य नगर को एक तार्किक परिणिति तक पहुँचा देता है।

लघुकथा ऊँचाई, चट्टे बट्टे, मुखौटा और मसीहा मानवीय मन की भावुक तरलता

तथा सामाजिक एवं राजनैतिक विसंगतियों को उजागर करने वाली अन्य उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। असभ्य नगर की लघुकथाएँ एक ओर मानवीय संवेदनाओं को स्वर देतीं हैं वहीं दूसरी ओर सामाजिक विद्रूपों को पूरे घिनौनेपन के साथ प्रदर्शित कर लेखक के दायित्व बोध की सजगता भी उद्घाटित करतीं हैं। हिमांशु जी की भावुक संवेदना और बेचैनी आशा जगाती है कि भविष्य में वे कुछ और मर्मस्पर्शी लघुकथा संकलन हिन्दी जगत को अवश्य देंगे।

■ जी–1, सार्थक एनक्लेव, 113, साउथ सिविल लाइंस, जबलपुर–482001, म.प्र.

डॉ. हृदय नारायण उपाध्याय

असभ्य नगर : सहज कलात्मक अभिव्यक्ति

कथा साहित्य के शैलीगत क्रमिक विकास का महत्त्वपूर्ण सोपान 'लघुकथा' आज लोकप्रिय प्रतिष्ठित विधा बन चुकी है। इस विधा को गति एवं दिशा देने में जिन महत्त्वपूर्ण लघुकथाकारों का नाम लिया जा सकता; उनमें रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' उल्लेखनीय हैं। शास्त्रीयता के आडम्बरों से निरपेक्ष इनकी लघुकथाओं में परिमार्जित दृष्टि एवं सहज अभिव्यक्ति का आभास मिलता है। आम मध्यमवर्गीय संवेदनशील मानव की वर्तमान जीवन की भागदौड़ एवं कशमकश से दो–चार होने की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति ही 'हिमांशु' जी की लघुकथाओं की पहचान है।

'असभ्य नगर' हिमांशु जी की 62 लघुकथाओं का एक ऐसा ही संग्रह है, जिसमें जीवन और समाज के उन समग्र पक्षों का उद्घाटन किया गया है; जिनसे एक जागरूक मनुष्य दो–चार होता रहता है। रचनाकार ने अनुभूति की सच्चाई को पूर्ण जिम्मेदारी के साथ उसके सही सन्दर्भों में कलात्मक अभिव्यक्ति देने की कोशिश की है; जो पाठकों को सोचने और विचारने पर मजबूर करती हैं। इस संग्रह की कुछ लघुकथाएँ तो कालजयी हैं, जैसे– ऊँचाई, खुशबू, धर्मनिरपेक्ष, गंगा–स्नान, वफादारी, चक्रव्यूह, असभ्यनगर आदि। भाव एवं विचार का सही सन्तुलन एवं कलात्मक गठन की उत्कृष्टता ने इन लघुकथाओं को विश्व की किसी भी भाषा की उत्कृष्ट लघुकथाओं की कोटि में ला खड़ा किया है।

इस संग्रह में जीवन और समाज के हर पक्ष को बड़ी बारीकी से देखा और परखा गया है। जीवन और समाज की विसंगतियों एवं समय के कटु यथार्थ से साक्षात्कार कराती ये लघुकथाएँ लगता है हम, आप, सबका देखा एवं महसूस किया सच हैं। धर्म के नाम पर की गई ठगी राजनैतिक भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक उन्माद फैलाने की साजिश हो अथवा समाज सुधार के नाम पर धोखा, विवेकहीन स्वार्थान्धता की दौड़ हो अथवा रिश्तों के नाम पर पहुँचाने वाली आत्मीय चोट, हर कदम पर एक सहज और संवेदनशील मनुष्य ही आहत होता है। यह दर्द इस संग्रह की तमाम लघुकथाओं में महसूस किया जा सकता है। आश्चर्य है 'सृष्टि की सर्वोत्तम रचना (?) कहलाने वाले इंसान से अधिक वफादार तो जानवर और पशु–पक्षी हैं।' इस सत्य को 'हिमांशु' जी ने पूरी व्यंग्यात्मक तल्खी के

साथ उभारा है। रचनाकार एक सफल व्यंग्यकार भी हैं, जिसकी झलक– चट्टे–बट्टे, मुखौटा, व्यवस्था, उपचार, प्रवेश–निषेध, काग–भगोड़ा, खलनायक, नई सीख, प्रदूषण, अर्थ–परिवर्तन आदि लघुकथाओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।...

■ फ्लैट बी–801, मुलिक लक्जरिया सोसायटी, निकट मोजे कॉलेज, बैफ रोड, वघोली, पुणे–412207, महा.

कल्पना भट्ट

असभ्य नगर और अन्य लघुकथाएँ :
एक आदर्श लघुकथा संग्रह

...नवें दशक में जिसे लघुकथा का स्वर्णकाल भी कहा जा सकता है, कुछ लेखक अपनी विशिष्ट लघुकथाएँ लेकर सामने आए, उनमें रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' भी एक उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं। इन्होंने अपने समकालीनों की तुलना में बहुत अधिक लघुकथाएँ तो नहीं लिखीं; किन्तु जो लिखीं वे लघुकथाएँ उनके अब तक के एकमात्र लघुकथा–संग्रह 'असभ्य नगर एवं अन्य लघुकथाएँ' में संगृहीत हैं।

...यूँ तो इस संग्रह में प्रकाशित प्रत्येक लघुकथा भिन्न–भिन्न कारणों से अपना महत्त्व रखती है किन्तु उनमें भी 'ऊँचाई', 'चक्रव्यूह', 'क्रौंच–वध', 'अश्लीलता', 'प्रवेश–निषेध', 'पिघलती हुई बर्फ', 'राजनीति', 'स्क्रीन–टेस्ट', 'कटे हुए पंख', 'असभ्य नगर', 'नवजन्मा' इत्यादि लघुकथाओं ने न सिर्फ संवेदित किया; अपितु मेरे मन–मष्तिष्क को झिंझोड़कर भी रख दिया। सर्वप्रथम मैं 'ऊँचाई' लघुकथा की चर्चा करना चाहूँगी। ...इस लघुकथा में नायक के पिता को ऊँचाई दी है कि उनका बेटा शहर तो आ गया, पर उसकी सोच संकीर्ण हो गई और वह इतना स्वार्थी हो गया कि उसने अपने पिता का स्वागत मन मारकर किया, ऐसे में भी पिता ने अपनी जेब से सौ–सौ के दस नोट निकालकर नायक की तरफ बढ़ा दिए और कहा, ''रख लो! तुम्हारे काम आ जाएँगे। ...पिता और पुत्र के बीच के रिश्ते के अपनत्व का भी उत्कृष्ट तरीके से चित्रण करने का सद्प्रयास किया है। इस लघुकथा का कथानक न सिर्फ श्रेष्ठ है अपितु इसके शीर्षक ने भी इस लघुकथा को उत्कृष्ट बनाया है। ...इस लघुकथा में पिता का यह कहना कि ''इस बार फसल अच्छी हुई है...'' से हिमांशु जी एक सन्देश भी देना चाहते हैं कि 'समस्याओं से भागना कोई हल नहीं हैं अपितु उनका सामना करना ही हितकारी होता है' और माता–पिता से बढ़कर इस दुनिया में कोई भी नहीं होता, जो निःस्वार्थ भावना रखता है।

...'चक्रव्यूह' में नायक मध्यमवर्गीय परिवार से है, जो अपनी जिजीविषा के लिए दिन–रात मेहनत तो करता है, पर महँगाई की मार उसकी कमर तोड़ देती है और वह खुद को चक्रव्यूह में फँसा हुआ अनुभव करता है, ...इस लघुकथा के माध्यम से हिमांशु जी ने मध्यमवर्गीय परिवार की परेशानियों को उभारने का सत्प्रयास किया है,

जिसमें वह सफल भी रहे हैं।

'अश्लीलता' इंसान की विकृत सोच को दर्शाती लघुकथा है, जिसका अंत नकारात्मकता लिये है; परन्तु इसके बावजूद इस लघुकथा में इंसान की दोहरी सोच और उसके मनोविज्ञान को भली–भाँति समझा जा सकता है।... 'प्रवेश–निषेध' लगभग चालीस साल पहले लिखी यह लघुकथा वर्तमान की राजनीति पर करारा कटाक्ष करती है। लघु आकार की होने के बावजूद इस लघुकथा के माध्यम से हिमांशु जी ने इस रचना में क्षिप्रता देकर उत्कृष्ट बनाने का सफलतम सत्प्रयास किया है।...

'पिघलती हुई बर्फ' पति–पत्नी के अनोखे रिश्ते पर केन्द्रित है, ...लेखक ने इस लघुकथा के माध्यम से इस रिश्ते की नींव को मजबूत बनाने का सार्थक प्रयास किया है, जिसमें वह पूर्णतः सफल रहे हैं।...

'कटे हुए पंख' आपात्काल में लिखी गई 'अर्ध–मानवेतर' शैली की लघुकथा है। यह राजनीति और सामंतशाही की प्रवृत्ति को चित्रित करती है। किस तरह से ऊँचे व्यक्ति पैसे और सत्ता के दम पर अपने से नीचे के लोगों को कुचलकर अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। वे किसी की भी परवाह किए बिना अपने स्वार्थ को सिद्ध करते हैं।...

'असभ्य नगर' आज के भौतिक और भूमंडलीकरण के चलते पशु–पक्षियों के जीवन को भी खतरा हो गया है। परन्तु यह भी सच है कि इस आपा–धापी में हम अपना सुख–चैन भी खो चुके हैं, एक तरफ जहाँ हम जंगलों को काटते जा रहे हैं और बड़ी–बड़ी गगनचुम्बी इमारतें बनाते जा रहे हैं, हमारे भीतर की संवेदना खत्म होती जा रही है। हिमांशु जी ने इस मानवेतर लघुकथा के माध्यम से एक सार्थक सन्देश देने का सत्प्रयास किया है। इस लघुकथा की अन्तिम पंक्ति में पूरी लघुकथा का सार मिल जाता है, ''उल्लू ने कबूतर को पुचकारा– ''मेरे भाई, जंगल हमेशा नगरों से अधिक सभ्य रहे हैं। तभी तो ऋषि–मुनि यहाँ आकर तपस्या करते थे।'' इस लघुकथा के माध्यम से हिमांशु जी ने पर्यावरण के नष्ट होने पर अपनी चिंता जताई है।...

'नवजन्मा' लड़की बचाओ पर आधारित एक उत्कृष्ट लघुकथा है, जिलेसिंह, जिसके घर में एक पुत्री–रत्न की उत्पप्ति हुई है, उसके घर वाले निराश होकर उसको शिकायत करते हैं और लड़की होने के नुकसान गिनवाते हैं,.. जिलेसिंह पहले तो तनाव में आ जाता है परन्तु अपनी पत्नी और पुत्री का चेहरा देखकर उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह बाहर से ढोलिए को लेकर आता है और नाचने लगता है तथा ढोलिए को खूब तेज ढोल बजाने के लिए प्रेरित करता है। इस लघुकथा के माध्यम से हिमांशु जी ने लड़का और लड़की के भेद को मिटाने का सकारात्मक सन्देश दिया है।...

लघुकथा संग्रहों में ऐसे संग्रह नगण्य ही हैं, जिनका दूसरा संस्करण भी प्रकाशित हुआ हो। इस संग्रह का दूसरा संस्करण प्रकाश में आया है, जो इस बात का द्योतक है कि इस संग्रह को पाठकों ने भरपूर स्नेह दिया है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अन्य अनेक चर्चित संग्रहों की तरह से नई पीढ़ी के लिए यह भी एक आदर्श संग्रह साबित होगा।

■ श्री द्वारकाधीश मंदिर, चौक बाज़ार, भोपाल–462001, म.प्र./मो. 09424473377

।।'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' ग्रंथ पर चर्चा।।

{'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी का महत्वपूर्ण समीक्षा–समालोचनात्मक ग्रंथ है। अनेक मित्रों ने इस ग्रंथ की चर्चा करते हुए आलेख लिखे हैं। इनमें से कुछ मित्रों के संपादित आलेख हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। ये सभी आलेख हिमांशु जी पर केन्द्रित 'गद्य–तरंग (गद्य अनुशीलन) पुस्तक से साभार लिए जा रहे हैं। इन आलेखों को संपादित करते हुए कहीं–कहीं कुछेक अंशों को छोड़ दिया गया है। छोड़े गये अंशों के स्थान पर तीन डॉट्स का उपयोग किया गया है।}

डॉ. कविता भट्ट

लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य : संचेतना एवं अभिव्यक्ति

द्रुतगति से युक्त आधुनिक युग में लघुकथा विधा पाठकों के लिए अति उपयोगी है। कम समय में अधिक प्रसंगों का आनंद लेने के साथ ही पाठक समाज के आधुनिक प्रसंगों के सम्बन्ध में सचेत होकर समाज के प्रति अपने योगदान के प्रति जागरूक भी होता है। मुझे रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' कृत 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' (लघुकथा समालोचना) पुस्तक के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने पढ़ने के स्थान पर अध्ययन शब्द उपयोग किया; क्योंकि इस पुस्तक को पढ़ लेना मात्र पर्याप्त नहीं अपितु लघुकथा सम्बन्धी सूक्ष्मताओं को गहनता से समझने हेतु यह उल्लेखनीय कार्य है। लघुकथा लेखन विकासक्रम के भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह कहना प्रासंगिक है कि 'हिमांशु' जी ने इस विधा को नवीनतम ऊँचाइयों तक ले जाने का अथक प्रयास किया; जो निरंतर जारी है। इसी शृंखला में यह समालोचनात्मक पुस्तक लघुकथा के विविध पक्षों का विशिष्ट विवेचन प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास है। लघुकथा में समालोचना के भविष्य को स्पष्ट करते हुए समालोचनाकार ने एक अध्याय में राजशेखर को उद्धृत करते हुए आलोचक भावक की चार श्रेणियों का उल्लेख किया है– आरोचकी, सव्यतृणहारी, मत्सरी और तत्त्वाभिनिवेशी। किसी की अच्छी रचना भी अच्छी न लगना, सबकी अच्छी–बुरी सभी रचना अच्छी ही लगना, ईर्ष्यावश सभी की बुराई ही करना एवं न्यायपूर्ण आलोचना करना क्रमशः इन चारों प्रकार के आलोचकों के लक्षण हैं। मेरा मानना है कि समालोचनाकार चतुर्थ श्रेणी का यथोचित अनुपालन करते हैं। इस दृष्टि से पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

समीक्षा करते हुए तीन बिंदु महत्त्वपूर्ण हैं प्रथम विषयवस्तु, द्वितीय भावपक्ष एवं तृतीय कलापक्ष। सर्वप्रथम हम विषयवस्तु की बात करेंगे। 22 विवेचनात्मक आलेखों को निबंधात्मक शैली में प्रस्तुत करते हुए समालोचनाकार ने प्रत्येक पक्ष को पैनी दृष्टि से विश्लेषित किया है। परिणामस्वरूप भारतीय विकासक्रम की ऐतिहासिक खोजबीन के

साथ ही वैयक्तिक, सामाजिक, प्रायोगिक तथा आनुभविक सोपानों पर आरूढ़ होते हुए लघुकथा एक नायिका के समान प्रत्येक पक्ष को प्रस्तुत करती हुई प्रतीत होती है। भावों को भाषा एवं विषयगत उपयुक्तता में आप्लावित करते हुए लेखक ने पूरी सावधानी रखी है कि कोई भी पक्ष अनछुआ न रह जाए, इस प्रकार लघुकथा को परिभाषित करने के सम्बन्ध में प्रथम सोपान (अध्याय) 'लघुकथा : संचेतना एवं अभिव्यक्ति' अतिसशक्त दार्शनिक आयाम को स्वयं में समेटे हुए है। मैं पढ़कर आश्चर्यचकित थी कि विश्लेषक ने लघुकथा को किस प्रकार से साहित्य एवं दर्शन के अनुपम संगम के रूप में प्रस्तुत किया। भारतीय दर्शन की एक आस्तिक दर्शन शाखा है– सांख्य दर्शन; जिसको आधार बनाकर श्रीकृष्ण ने गीताज्ञान भी उपदिष्ट किया। इसके अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि चेतन एवं जड़ के संयोग का परिणाम है। चैतन्य की संवाहक चेतना ही है, यह दिखाई नहीं देती; किन्तु जब यह जड़ के साथ संयुक्त होकर अभिव्यक्त होती है तो अनेक उल्लेखनीय परिणामों से युक्त होती है तथा समस्त चराचर जगत इसी का दृश्य रूप है। लघुकथा में भी लाक्षणिक रूप से इन्हीं तत्त्वों को समाहित मानते हुए लेखक ने खलील जिब्रान, सुकेश साहनी, रमेश बतरा, जगदीश कश्यप, सतीश राज पुष्करणा, सुभाष नीरव, चित्रा मुद्गल, बलराम, बलराम अग्रवाल, श्याम सुन्दर अग्रवाल, श्याम सुन्दर 'दीप्ति', कमल चोपड़ा, अशोक भाटिया, उपेन्द्र प्रसाद राय, सुदर्शन रत्नाकर, दीपक मशाल तथा पवित्रा अग्रवाल आदि की लघुकथाओं की प्रासंगिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। यह कहा जा सकता है कि भाव पक्ष किसी भी सर्जन का संचेतनात्मक पक्ष है एवं कलापक्ष अभिव्यक्त्यात्मक पक्ष है। समालोचनाकार ने दोनों पक्षों का निर्वाह यथोचित ढंग से किया है; यह वस्तुतः उल्लेखनीय है।

लेखक का मानना है ही लघुकथा मात्र शब्दजाल या घटना का चित्रण नहीं अपितु स्वयं में परिपूर्ण नैतिक कथ्य है। ये मानव के बहुआयामी जीवन को आकार एवं गति प्रदान करने की सामर्थ्य से युक्त होती हैं। जयशंकर प्रसाद की लघुकथाओं का सूक्ष्म विवेचन करने में लेखक सफल रहे हैं। लघुकथा और भाषिक प्रयोग को विवेचित करते हुए समालोचनाकार स्पष्ट करते हैं कि पात्र, पात्र की मनःस्थिति, परिवेश, स्तर तथा परिस्थिति आदि इस सन्दर्भ में भाषा के स्वरूप का निर्धारण करते हैं। इस अध्याय में सुकेश साहनी की लघुकथा खेल (रेनड्रॉप के चेटरूम से) को उद्धृत भी किया है। बालमनोविज्ञान की कसौटी के सन्दर्भ में राजस्थान के लघुकथाकार यादवेन्द्र शर्मा तथा डॉ. शकुंतला किरण आदि को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन्टरनेट और लघुकथा के माध्यम से श्री काम्बोज ने विविध नेट पत्रिकाओं के इस क्षेत्र में योगदान को विवेचित किया है। उनका मानना है कि गद्यकोश, साहित्यकुंज डाटॅ नेट, लघुकथा डॉट कॉम, उदंती डॉट कॉम, रचनाकार डॉट कॉम, अमर उजाला डॉट कॉम एवं हिन्दी गौरव डॉट कॉम आदि का लघुकथा को प्रसारित करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान उल्लिखित किया है। लघुकथा में समालोचना के भविष्य पर भी श्री काम्बोज गंभीरता से विचार करते हैं एवं इस क्षेत्र में परिचर्चाओं एवं अन्य गतिविधियों द्वारा आगामी पीढ़ी के ज्ञानवर्धन को आवश्यक मानते हैं। कथ्य की

नवीनता एवं प्रस्तुति की सजगता की लघुकथाओं पर भी यथोचित प्रकाश डाला गया है। शोषित नारी की कथाओं में सुकेश साहनी के 'देह–व्यापार की लघुकथाएँ' नामक लघुकथा संग्रह को उद्धृत किया गया है। इसके अतिरिक्त साझा संस्कृति, अनुभव सृजित, समस्याओं पर केन्द्रित, परिवेश के प्रति लेखकीय ईमानदारी, विवादित लेखकों का अविवादित लेखन, जीवन के अच्छे–बुरे अनुभवों पर केन्द्रित, सामाजिक मुद्दों, शोषितों, मानवीय संवेदनाओं, व्यापक फलक, सामान्य जीवन से राजनीतिक पद–प्रतिष्ठा तक की यात्रा आदि प्रासंगिक विषयों पर केन्द्रित लघुकथाओं के विन्यास एवं उपयोगिता को समालोचनाकार ने यथाविधि यथोचित ढँग से विवेचित किया।

विषयवस्तु के उपरान्त अब हमें पुस्तक के भावपक्ष पर विचार करना चाहिए, इस दृष्टि से पुस्तक का महत्त्व इसलिए है क्योंकि लघुकथा की शिल्पगत विशेषताओं को एक ही पुस्तक में समेटना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस चुनौती को समालोचनाकार ने बड़े ही सहज भाव से स्वीकार किया तथा लघुकथाओं को विविध खाँचों में व्यवस्थित करके उनके सार को उपयुक्तता एवं प्रासंगिकता के आधार पर विवेचित करने में पूर्ण तन्मयता दिखाई है। इसमें वे सफल भी रहे। स्पष्ट करना है कि विभिन्न देश, काल एवं परिस्थिति की लघुकथाओं को नियत एवं सुव्यवस्थित ढाँचे–खाँचे में रखकर लघुकथा लेखन के तकनीकीय पक्ष की बारीकियों को बहुत सुन्दर ढंग से समझाया गया है। उपर्युक्त विशेषता के अतिरिक्त पुस्तक की भाषागत सुन्दरता देखते ही बनती है। भाषा प्रवाहपूर्ण सुगढ़, सर्वग्राह्य एवं सुन्दर है।

कुल मिलाकर समालोचनाकार श्री 'हिमांशु' ने लघुकथा समालोचना के क्षेत्र में एक उपयोगी, अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक कार्य किया है। इन अध्यायों के द्वारा स्थापित लेखकों के साथ ही नए लेखकों को भी लघुकथा विधा को सांगोपांग समझने का सुअवसर प्राप्त होगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठक इस पुस्तक को पढ़ने के साथ ही व्यक्तिगत एवं संस्थागत पुस्तकालयों में संगृहीत भी करेंगे; जिससे समालोचनाकार द्वारा किये गए इस श्रमसाध्य लेखन का लाभ अधिक से अधिक पाठकों एवं लेखकों को मिल सके और लघुकथा के सम्बन्ध में अधिकाधिक ज्ञानवर्धन होने के साथ ही इस सम्बन्ध में निराधार भ्रान्तियों, संदेहों एवं अज्ञानतावश लेखन में हो रही अवांछनीय त्रुटियों का भी समाधान हो सके। श्री हिमांशु जी को मेरी अनंत शुभेच्छाएँ, उनको लेखन एवं सर्जन हेतु नित्य नवीन ऊर्जा प्राप्त हो एवं उनका साहित्यिक योगदान मील का पत्थर सिद्ध हो, ऐसी शुभेच्छा है।

■ II S-3, B.T. HOSTEL, UNIVERSITY CAMPUS, MADHI CHAURAS, P.O. KILKILESHWAR, TEHRI, Garhwal-249161,Uttarakhand

डॉ. सुषमा गुप्ता

लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य : एक दृष्टि

आज के दौर में लघुकथा एक महत्त्वपूर्ण विधा है। लघुकथा लेखन के साथ–साथ इसके चिन्तन–पक्ष पर भी विचार करना

बहुत जरूरी है। इस दिशा में 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' (लघुकथा समालोचना) पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। 'लघुकथा : संचेतना एवं अभिव्यक्ति' में काम्बोज जी बताते हैं किस तरह मानवेतर पात्रों का समावेश लघुकथा को नया आयाम देता है; अगर इन पात्रों का निर्वाह ठीक से न किया जाए, तो रचना पाठकों के हृदय में स्थान नहीं बना पाती। ठीक ऐसे ही प्रतीकों एवं मिथकों का प्रयोग भी बहुत सोच–समझकर किया जाना बेहद जरूरी है। लघुकथा में भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालता बेहद उपयोगी आलेख है ये।

'बहुआयामी जीवन को आकर देती लघुकथाएँ' आलेख में लघुकथा के शिखर सुकेश साहनी जी की लघुथाओं पर आधारित है। उनकी एक से एक कालजयी रचनाओं का उदाहरण देकर उन्होंने लघुकथा में भाषा, शिल्प, शीर्षक सबके महत्त्व को उजागर किया है। 'डरे हुए लोग' साहनी जी का यह लघुकथा संग्रह है, जो मेरे भी मन के बहुत निकट है।

तीसरा आलेख जयशंकर प्रसाद जी की लघुकथाओं पर आधारित है। उनकी प्रतिनिधि लघुकथाओं की बहुत सुंदर विवेचना को केंद्र में रखकर लेखक ने लघुकथा की बहुत–सी बारीकियाँ समझाई हैं। प्रसाद जी की अधिकतर लघुकथाओं का ताना–बाना जहाँ सड़ी–गली रूढ़ियों और राजनीति के गिरते स्तर को उजागर कर विरोध दर्शाता है, वहीं लघुकथा में काव्यमयी भाषा का प्रयोग भी उन्होंने किया है। प्रसाद जी के लेखन की बहुत–सी खूबियों से रूबरू कराता सुंदर आलेख है ये।

'लघुकथा और भाषिक प्रयोग' आलेख की एक–एक पंक्ति मन–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ती है 'भाषा सीमाओं में नहीं बँधती।' कितनी गहरी बात कही काम्बोज जी ने कि भाषा सीमाओं में नहीं बँधती और जो बँधती है, वह बदलते परिवेश में अपना अस्तित्व खो देती है। किसी भी समाज के विकास का आइना है भाषा। इसी आलेख की एक और पंक्ति देखिए, जो लघुकथा के संदर्भ में है– 'पात्र, पात्र की मनःस्थिति, परिवेश, स्तर, परिस्थिति बहुत सारे ऐसे कारक हैं, जो भाषा के स्वरूप का निर्धारण करते हैं।' हर नवोदित लघुकथाकार के लिए इस पंक्ति की महत्ता समझना बहुत आवश्यक है।

काम्बोज जी ने श्यामसुंदर अग्रवाल, चित्रा मुद्गल, सुभाष नीरव एवं सुकेश साहनी की लघुकथाओं के माध्यम से लघुकथा में भाषा–सौंदर्य के महत्त्व को बेहद असरदार तरीके से सामने रखा है। भाषा किसी भी रचना के प्राण है, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

'बालमनोविज्ञान की कसौटी' राजस्थान के चुनिंदा लघुकथाकारों को केन्द्र में रख लिखा गया आलेख बेहद महत्त्वपूर्ण है, जो इस बात पर ध्यान खींचता है कि बच्चों से सम्बन्धित लघुकथाएँ सिर्फ कल्पना की उड़ान पर ही आधारित न हों, अपितु बाल मनोविज्ञान की जानकारी होना भी उनके सुख–दुःख के पलों और समस्याओं को उजागर करने के लिए अत्यंत आवश्यक है अथवा वह रचना कभी प्रभावशाली नहीं बन पाएगी।

'इंटरनेट और लघुकथा', बदलते परिवेश में इटंरनेट के माध्यम से लघुकथाओं और अन्य साहित्यिक सामग्री अब देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी सहज पहुँच रही

है। इस आलेख में लघुकथा डॉट कॉम सहित बहुत–सी वेब साइट्स और वेब पत्रिकाओं की जानकारी दी गई है। बहुत से लोगों का उल्लेख है, जिनको आप तक ये सामग्री सहजता से घर बैठे उपलब्ध कराने का श्रेय जाता है।

'लघकुथा में समालोचना का भविष्य' आलेख बेहद ही महत्त्वपूर्ण है। बेबाकी से आज के परिवेश की कमियों को उधेड़ा गया है। जहाँ एक तरफ डॉ. सतीशराज पुष्करणा, डॉ.रूप देवगुण, इरा वलेरिया शर्मा, कृष्णानंद कृष्ण एवं सुकेश साहनी जी के समीक्षक रूप में किए महत्त्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख है, वहीं दूसरी तरफ सिर्फ अपने कार्य से आत्ममुग्ध रहने वालों पर गहरा कटाक्ष किया गया है। परन्तु स्पष्ट दिखाई देता है कि लेखक का उद्देश्य किसी कटाक्ष का नहीं; अपितु समालोचना में गिरते स्तर की तरफ ध्यान आकर्षित करना है, ताकि भविष्य में अच्छी रचनाओं को ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक पहुँचाया जा सके।

'कथ्य की नवीनता एवं प्रस्तुति की सजगता की लघुकथाएँ' आलेख साहित्य के स्थापित स्तंभ श्री बलराम जी के महत्त्वपूर्ण कार्यों पर एवं लघुकथा क्षेत्र में दिए गए उनके अभूतपूर्व योगदान पर प्रकाश डालता है। बलराम जी की लघुकथाएँ किसी भी नवोदित के लिए किसी इनसाइक्लोपीडिया से कम नहीं हैं।

'शोषित नारीं की कथाएँ' ये आलेख उन महत्त्वपूर्ण लघुकथाओं का समावेश है, जो नारी को देह–व्यापार या वैसी ही परिस्थितियों में धकेले जाने पर मन से आक्रोश या व्यथा बनकर फूटी हैं। इसी सन्दर्भ में सुकेश साहनी जी द्वारा सम्पादित मील का पत्थर सरीखी पुस्तक 'देह व्यापार की लघुकथाएँ' जैसे महत्त्वपूर्ण संग्रह का भी उल्लेख है।

'साझा संस्कृति की तलाश करती लघुकथाएँ', आलेख आधारित है सर्वश्री बलराम जी एवं सुकेश साहनी जी के सम्पादन में आई पुस्तक 'वह पवित्र नगर' पर। काम्बोज जी ने ख़लील जिब्रान और अन्य देश–विदेश के लघुकथाकारों की शामिल रचनाओं पर और रोशनी डालते हुए, हिन्दी पाठकों को विश्वस्तर की इतनी लघुकथाएँ एक पुस्तक में उपलब्ध कराने के लिए दोनों संपादकों का आभार प्रकट किया है।

दो आलेख मुरलीधर वैष्णव जी के लघुकथा संग्रह 'अक्षय तूणीर' और पवन शर्मा के 'हम हैं जहाँ' पर आधारित है। काम्बोज जी ने उन्हें अनुभवों से सृजित लघुकथाएँ कहा है और साथ ही समझाया है कि किसी भी घटना को ज्यों का त्यों लिख देना लघुकथा नहीं है। बल्कि शीर्षक, कथ्य, संवाद सबका निर्वाह पूरी कुशलता से होना चाहिए, जो मुरलीधर वैष्णव जी ने बखूबी किया है और पवन शर्मा जी ने भी एक वर्ग विशेष की आशा, आकांक्षाओं और व्यथा को गहराई से प्रस्तुत किया है।

'प्रसंगवश : परिवेश के प्रति लेखकीय ईमानदारी' आलेख सतीशराज पुष्करणा साहित्य में वह नाम है जिसे किसी परिचय की जरूरत नहीं है। उन्हीं के दूसरे लघुकथा–संग्रह की बहुत सुंदर समीक्षा पर आधारित है यह आलेख।

'बीसवीं सदी की चर्चित हिन्दी लघुकथाएँ', पुस्तक का संपादन जगदीश कश्यप जी ने किया, जिसे काम्बोज जी ने 'विवादों से घिरे लेखक का अविवादित संपादन' का शीर्षक देकर कश्यप जी के व्यक्तित्व और कुशल संपादन से हम पाठकों

का परिचय कराया। काम्बोज जी ने 'दुःख की तपती जमीन पर' शीर्षक दिया है सुरेश शर्मा के संपादन में आई 'बुजुर्ग जीवन की लघुकथाएँ' को और उसकी निष्पक्ष समीक्षा की है।

'काँच के कमरे' लघुकथा संग्रह है डॉ. गोपाल बाबू शर्मा का, जिसे काम्बोज जी ने 'समाज की टीस को आकार देती लघुकथाएँ' शीर्षक दिया है। गोपाल बाबू जी की बहुत–सी उत्कृष्ट लघुकथाओं के माध्यम से उन्होंने हम सबको उनके लेखन की ऊँचाइयों से रूबरू कराया है। ऐसा ही एक बेहतरीन लघुकथा–संग्रह है सुदर्शन रत्नाकर जी का 'साँझा दर्द', जिसकी बहुत सुंदर विवेचना करते हुए काम्बोज जी ने इन लघुकथाओं को समाज–बोध और मानवीय संवेदना की लघुकथाएँ कहा है। इस आलेख में उन्होंने रत्नाकर जी के साहित्यिक जीवन और विविध विषयों पर उनकी गहरी पकड़ को उनकी बेहतरीन लघकुथाओं के माध्यम से हमारे समक्ष बहुत सुंदर ढंग से रखा है।

अपने अगले आलेख में काम्बोज जी ने कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण बातों को उजागर किया है– जैसे लघुकथा में लेखकीय हस्तक्षेप से हर लघुकथाकार को बचना चाहिए। उन्होंने उदाहरणों से स्पष्ट किया कि सर्जन और लेखन दो विपरीत ध्रुव हैं। इसी आलेख में उन्होंने दीपक मशाल की बेहतरीन लघुकथाओं की विस्तृत समीक्षा करते हुए कहा है कि नई पीढ़ी के होने के बावजूद दीपक जी के काम में विविधता एवं विशिष्टता दोनों हैं। वे आज के दौर के संभावनाओं से भरे बेहतरीन लघुकथाकार हैं।

2014 में आया पवित्रा अग्रवाल का लघुकथा संग्रह 'आँगन से राजपथ तक' को केन्द्र में रखकर काम्बोज जी ने अपने इस आलेख में लघुकथा सर्जन की बारीकियों पर ध्यान आकृष्ट किया है। उन्होंने कहा कि लघुकथा में बेहद महत्त्वपूर्ण है कथ्य का चयन, अभिव्यक्ति की कलात्मकता एवं उपयुक्त शीर्षक। उन्होंने उदाहरण देकर बताया किस तरह रमेश बतरा जी, सुकेश साहनी जी, सुभाष नीरव जी, श्याम सुन्दर अग्रवाल जी ने अपनी लघुकथाओं को विशिष्ट शीर्षक देकर अपनी लघुकथाओं को नए आयाम दिए। आलेख के अंत में काम्बोज जी पवित्रा जी के लघुकथा–संग्रह को आम आदमी के जीवन से जुड़ी उत्कृष्ट लघुकथाएँ कहा।

दो आलेख कमल चोपड़ा जी के लघुकथा संग्रह 'फंगस' और डॉ. उपेन्द्र प्रसाद राय के लघुकथा संग्रह 'तुलसी चौरे पर नागफणी' पर आधारित हैं। कमल जी की लघुकथाओं को उन्होंने 'शोषितों की लघुकथाएँ' कहा है; वहीं डॉ. राय के संग्रह को समाज, धर्म, शिक्षा, राजनीति व्यवस्था आदि पर लिखा गया एवं बेहद सजग एवं विशिष्ट लघुकथा–संग्रह माना है।

पुस्तक बहुत से आयाम पार करती हुई अब अपने अंत में सार्थक लघुकथाओं के जरिए बहुत से वरिष्ठ लघुकथाकारों के काम को सराहती हुई, उल्लेख करती है एक ऐसे ही विशिष्ट लघुकथाकार बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु' जी का, जिनका लेखन–काल दो अंतराल में बँटा तो जरूर है, पर उससे उनके लेखन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा। उनका लघुकथा संग्रह 'गुरु–ज्ञान' एक पठनीय संग्रह है।

हर लघुकथा प्रेमी के लिए 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' (लघुकथा समालोचना) बेहद उपयोगी पुस्तक है एवं संग्रह में रखने के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

■ 327/16ए, फरीदाबाद–121002, हरियाणा

डॉ. शिवजी श्रीवास्तव

लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य : संक्षिप्त विवेचना

गत दो दशकों में हिन्दी लघुकथा ने लोकप्रियता के नवीन शिखर स्पर्श किये हैं, पाठक और आलोचक दोनों ने ही लघुकथा की सामर्थ्य को समझकर उसे गम्भीरता से लेना प्रारम्भ किया है, साहित्य की केन्द्रीय पत्रिकाओं एवं समाचार–पत्रों में अब लघुकथा एक फिलर के रूप में नहीं अपितु गम्भीर विधा के रूप में स्थान पा रही है, अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ लघुकथा पर पूर्ण विशेषांक निकालकर उसे साहित्य की केन्द्रीय विधा के रूप में सम्मान दे रही हैं, उसकी लोकप्रियता बढ़ाने में सोशल मीडिया भी एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में उपस्थित हुआ है, आशय यह है कि लघुकथा अब साहित्य की केन्द्रीय एवं महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित है। महत्त्वपूर्ण एव केन्द्रीय विधा होने के बावजूद लघुकथा के वस्तु, शिल्प या इतिहास के संदर्भ में अपेक्षित लेखन नहीं हुआ है, कम आलोचक ही इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। लघुकथा के आलोचनात्मक लेखन के क्षेत्र में कुछ चुनिंदा रचनाकार ही सक्रिय हैं, उन्हीं में एक महत्त्वपूर्ण नाम है श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'। श्री काम्बोज जी लघुकथा के क्षेत्र की अत्यन्त चर्चित विभूति हैं, वे एक श्रेष्ठ सम्पादक, उत्कृष्ट कथाकार होने के साथ ही लघुकथा के समालोचनात्मक स्वरूप को स्थापित करने की दिशा में सक्रिय हैं, उनकी नवीन कृति 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' इस कड़ी की एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

प्रस्तुत कृति में लेखक की 'मेरी बात' के अतिरिक्त उनके बाईस महत्त्वपूर्ण आलेख हैं, जिनमें अनेक लघुकथाओं के उदाहरणों द्वारा लघुकथा के स्वरूप, शिल्प एवम् सम्वेदना पर गम्भीरता से विचार किया गया है। लघुकथा क्या है? एक अच्छी लघुकथा में क्या–क्या गुण होने चाहिए? लघुकथा अपने विषय कहाँ से चुनती है? लघुकथा की भाषा कैसी हो? एक अच्छे आलोचक के क्या गुण हों? परम्परा से आज तक लघुकथा ने विकास की मंजिलें किस प्रकार तय की हैं? इस विकास यात्रा में समाचार पत्रों से इंटरनेट तक का क्या महत्त्व रहा? ऐसे ही अनेक प्रश्नों पर इस पुस्तक में विविध बिंदुओं से विचार किया गया है। लघुकथा के सैद्धांतिक पक्षों पर विचार/विश्लेषण हेतु लेखक ने अपने आलेखों में अनेक लघुकथाओं एवम् प्रसिद्ध लघुकथाकारों के संकलनों को आधार बनाया है।

सर्वप्रथम लेखक लघुकथा की सर्जन–प्रक्रिया की मीमांसा करते हुए 'मेरी बात' में लिखते हैं– 'लघुकथा का सर्जन लम्बे अर्से के जीवन–अनुभव के ताप में तपकर सामने आता है।' वे यहाँ स्पष्ट कर देते हैं कि लघुकथा एक गम्भीर विधा है, उसके लघु स्वरूप में तीक्ष्ण मारक क्षमता है, इसे हलके–फुलके रूप में नहीं लिया जाना चाहिए, लघुकथा–लेखकों को गम्भीर मनन–चिंतन के पश्चात् ही लघुकथा लेखन की ओर प्रवृत्त होना चाहिए, उन्होंने स्पष्ट किया है– 'किसी लघुकथा की सर्जन–प्रक्रिया (वह लघुकथा

भले ही 10–12 पंक्तियों की हो) एक दिन का या एक पल का काम नहीं है, वह स्रोत से रिसने वाली क्षीण धारा है, जो चट्टानों से उतरते–उतरते आगे चलकर बेगवती बनने को आतुर हो उठती है।' लघकुथा को साधारण समझकर फैशन के लिए लघुकथा लेखन करने वाले नए लेखकों के विषय में काम्बोज जी का विचार है– ''लघुकथा–जगत् में कुछ नए लेखक और कुछ अन्य विधाओं से असफल होकर हाथ आजमाने के लिए उतरे नए लेखक घटना या घटनाओं को ही लघुकथा मानने लग जाएँ, तो पुलिस का रोजनामचा हफ़्ते भर में ही लघुकथा–संग्रह में ही तब्दील हो जाएगा।'' किसी घटना को लघुकथा के रूप में परिवर्तित होने की प्रक्रिया संश्लिष्ट एवम् समयसाध्य होती है, यह गहरे चिंतन एवम् मनोयोग की माँग करती है। कोई घटना कितने समय में लघुकथा के रूप में परिपक्व होगी, इसका कोई निश्चित विधान नहीं है, लेखक के शब्दों में, ''किसी लघुकथा को परिपक्व होने में कई महीने भी लग सकते हैं और कई बरस भी।''

इस संदर्भ में वे अपनी एवम् सुकेश साहनी जी की एक–एक लघुकथा का उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं कि कोई घटना और किस प्रकार रचनाकार के मनोमस्तिष्क को मथते हुए लघुकथा के रूप में सामने आती है। उनकी स्वयं की लघुकथा 'ऊँचाई' 17 नवम्बर 1988 को लिखना प्रारम्भ हुई, जो अक्टूबर 1989 में पूर्ण हुई। यह एक उदाहरण मात्र है, जो यह सिद्ध करता है कि रचना की सर्जन–प्रक्रिया कोई सहज कार्य नहीं है।

सर्जन–प्रक्रिया से जूझते हुए लघुकथाकार को भाषा के संदर्भ में सर्वाधिक सचेत रहना पड़ता है, यूँ तो प्रत्येक विधा के रचनाकार को भाषा प्रयोग में सजग रहना होता है किन्तु लघुकथा–लेखन में अधिक सजग एवम् सचेत रहने की आवश्यकता है; क्योंकि भाषा वह प्रमुख शक्ति है, जो लघुकथा को सामर्थ्यवान बनाती है, भाषा का असन्तुलित प्रयोग लघुकथा की सामर्थ्य एवं शक्ति को कम करके उसे निष्प्रभ भी कर सकता है। अपनी लघुता के कारण इस विधा की ऊर्जा का स्रोत उसकी भाषा ही है, लेखक का स्पष्ट अभिमत है, ''अच्छी भाषा कमजोर कथ्य के लिए ऑक्सीजन का काम कर अनुप्राणित कर सकती है और कमजोर भाषा अच्छे भले कथ्य को चौपट कर सकती है।''

'लघुकथा और भाषिक प्रयोग' अध्याय में काम्बोज जी ने लघुकथा के भाषा और शिल्प पर विस्तार से विचार किया है, साथ ही अन्य अध्यायों/आलेखों में भी यत्र–तत्र भाषा प्रयोग के संदर्भ में टिप्पणियाँ की हैं। प्रायः साहित्यिक विधाओं में भाषा–प्रयोग के सम्बन्ध में ये प्रश्न सदा उठते रहे हैं कि साहित्य में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हो, शास्त्रीय/शब्दकोशीय आभिजात्य भाषा अथवा लोक जीवन में घुली–मिली सहज भाषा। लघुकथा हेतु काम्बोज जी लोक जीवन के अनुरूप शब्द–चयन एवम् विकसित हो रही भाषा को श्रेष्ठ मानते हैं। वे भाषा में आने वाले अन्य भाषा के शब्दों के प्रयोग को भी उचित मानते हैं, उनका स्पष्ट मत है– ''राजनीति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, व्यापार एवम् कम्प्यूटर क्रांति ने नए द्वार

खोल दिए हैं, ऐसी स्थिति में भाषा सुंदरी को सात पर्दों के अंदर छुपाकर नहीं रखा जा सकता; क्योंकि भाषा जड़ नहीं होती। वह प्रवहमान समाज की जीवनी शक्ति है।''

लघुकथाकर किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करें, इसके लिए भी निश्चित मानक निर्धारित नहीं किए जा सकते। पात्र, पात्र की मनःस्थिति, परिवेश, परम्परा इत्यादि अनेक कारक हैं, जो भाषा के स्वरूप का निर्धारण करते हैं, पर ये निश्चित है कि अभिधा की तुलना में लक्षणा एवम व्यंजना गुणों वाली भाषा अधिक प्रभावी होती है। वस्तुतः जिस कथाकार का अध्ययन जितना विशद होगा, लोक–जीवन के निरीक्षण की क्षमता जितनी सूक्ष्म होगी और सतत परिवर्तित सामाजिक जीवन के मनोविज्ञान की जितनी गहरी समझ होगी, उतनी ही उस कथाकार की भाषा प्रभावी एवं तीक्ष्ण होगी। काम्बोज जी का मानना है कि जब सम्पूर्ण विश्व 'विश्वग्राम' की ओर अग्रसर है, एक नई सस्कृति विकसित हो रही है, तो उसके अनुरूप भाषा भी नए तेवर धारण कर रही है, भाषा में नई प्रकार की शब्दावली विकसित हो रही है, भाषा में अनेक परिवर्णी शब्द भी आ रहे हैं, उन्हें नकारा नहीं जा सकता, हमें बदलते समाज के अनुरूप ही भाषा के नए स्वरूप को स्वीकार करना होगा। उनका स्पष्ट कथन है– ''भाषा में आए बदलाव को महसूस ही नहीं, वरन स्वीकार भी करना पड़ेगा; चैटरूम में फेरी वालों की या सब्जी मण्डी की भाषा नहीं चलेगी और सब्जी मण्डी में विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की भाषा या विवाह संस्कार की भाषा नहीं चलेगी।''

भाषा के अभिनव प्रयोगों को किस प्रकार लघुकथा अपनी ताकत बना रही है, इसे स्पष्ट करने के लिए लेखक ने सुकेश साहनी की कहानी 'खेल' (रेनड्रॉप के चैटरूम से) को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। नए बनते हुए परिवर्णी शब्दों से युक्त भाषा के अभिनव प्रयोग की ये एक उत्कृष्ट कथा है।

लघुकथा की भाषा और शिल्प के विवेचन के साथ ही इस पर भी विस्तार से चर्चा की है कि वतर्मान में लघुकथाकर कथ्य चयन किस प्रकार और किन क्षेत्रों से कर रहे हैं, वतर्मान में लिखी जा रही लघुकथाओं की चिंता के केन्द्र बिन्दु क्या हैं, वे किन समस्याओं को अपनी लघुकथाओं का आधार बना रहे हैं। इस संदर्भ में काम्बोज जी ने अनेक लघुकथा संकलनों को केन्द्र बनाया है, साथ ही अनेक चर्चित लघुकथाओं को भी उद्धृत किया है। जहाँ तक कथ्य एवं विषय वस्तु के चयन का सम्बन्ध है, तो शायद ही कोई विषय हो, जो लघुकथा से छूटा हो, समस्त, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर लघुकथाकार सृजनरत हैं। आज की लघुकथाओं में पारिवारिक समस्याएँ हैं, बाल मनोविज्ञान की समस्याएँ हैं, नारी जीवन के अनेक आयामों एवम् विविध स्तरों पर होने वाले शोषण की समस्याएँ हैं, शोषण के विरुद्ध विद्रोह के भाव को व्यक्त करती कथाएँ हैं, वंचित वर्ग की समस्याएँ हैं, सांस्कृतिक संक्रमण की समस्याएँ हैं.... इन विविध समस्याओं पर लिखी जा रही लघुकथाओं को काम्बोज जी ने विविध शीर्षकों में व्याख्यायित किया है, कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं– नारी के शोषण की कथाएँ, सामाजिक विद्रूपताओं पर प्रहार करती लघुकथाएँ, साझा सस्कृति की तलाश करती लघुकथाएँ, आँगन से राजपथ की लघुकथाएँ.... इत्यादि। ये शीर्षक इस बात के परिचायक हैं कि

लघुकथा जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है।

लघुकथा के वर्तमान स्वरूप के साथ ही काम्बोज जी ने लघुकथा के आलोचकों के आलोचना–धर्म की ओर भी गम्भीरता से संकेत करते हुए आलोचकीय धर्म के सम्यक निर्वाह न होने की चिन्ताएँ भी व्यक्त की हैं। इस संग्रह की मुख्य विशेषता यह है कि काम्बोज जी ने समस्त निष्कर्षों/तर्कों को उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया है। विशद अध्ययन, मनन और चिंतन द्वारा शोधपूर्ण ढंग से लिखी गई यह कृति लघुकथा के पाठकों/अध्येताओं एवं समालोचकों के साथ ही शोधार्थियों हेतु भी अत्यंत उपयोगी कृति है।

■ मो. 09412069692

कृष्णा वर्मा

लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य :
संग्रहणीय पुस्तक

वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी की हाल ही में प्रकाशित हुई पुस्तक पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ– 'लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य' (लघुकथा समालोचना)।

हम सब भली–भाँति परिचित हैं किस निष्ठा और लगन से काम्बोज जी ने लघुकथाओं को शिखर तक पहुँचाने का अथक प्रयास किया है। आज समय की कमी और आपाधापी के दौर में उपन्यास और कहानियाँ पढ़ना तो लगभग पीछे छूट–सा गया है। ऐसे में लघुकथाओं ने पाठकों को कम समय में अधिक प्रसंगों से जोड़ने का काम किया है।

इस पुस्तक में लेखक ने स्पष्ट किया है कि लघुकथा लिखने के लिए केवल शब्दों का ताना–बाना बुनना ही पर्याप्त नहीं होता, आवश्यक है उसका शीर्षक, पात्र, भाषा और शिल्प। शीर्षक कथा के सूक्ष्म अर्थ को पकड़ने वाला होना नितांत आवश्यक होता है क्योंकि वही पाठक में पढ़ने की ललक जगाता है। पात्र की भाषा, उसकी मनःस्थिति, उसके माहौल और उसकी परिस्थिति के अनुरूप बदलनी चाहिए। शिल्प में वाक्यों का क्रम यदि सही न हो, तो कथा सही रूप से प्रभावित करने में असमर्थ रहेगी। वाक्यों का सही क्रम ही कथा को मर्मस्पर्शी बनाता है। काम्बोज जी ने बहुत–सी वेब–पत्रिकाओं जैसे लघुकथा डॉट कॉम, साहित्यकुंज, उदन्ती डॉट कॉम, अमर उजाला डॉट कॉम तथा हिन्दी गौरव डॉट कॉम आदि का उल्लेख किया है, जो लघुकथा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। लेखकों के ज्ञानवर्धन के लिए बहुचर्चित लघुकथाकारों की लघुकथा लेखन की प्रविधि को बड़े सुंदर और सूक्ष्म ढँग से समझाया है।

इस धुरी को साधने के लिए साध्य क्या हो इन बातों का भरपूर ब्योरा लेखक ने इस पुस्तक में दिया है। यह एक ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, जो एक आम पाठक के साथ–साथ लघुकथा लेखकों, समीक्षकों, आलोचकों तथा शोधार्थियों के लिए भी बहुत उपयोगी है। साहित्य जगत में ऐसा ऐतिहासिक कार्य करने तथा इस संग्रहणीय

पुस्तक के लिए भाई काम्बोज जी को हार्दिक बधाई देती हूँ और यह मंगल–कामना करती हूँ कि इनकी समृद्ध लेखनी से इसी तरह निरन्तर श्रेष्ठ कृतियों का सृजन होता रहे।

■ कनाडा / ईमेल : kvermahwg@gmail.com

पवन जैन

लघुकथा का वर्त्तमान परिदृश्य : खरी–खरी

लघकुथा समालोचना पर आदरणीय रामेश्वर काम्बोज 'हिमाशं' की पुस्तक 'लघकुथा का वर्त्तमान परिदृश्य' मुझे रचनाकार आर्ग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त होने पर उपहारस्वरूप प्राप्त हुई। इस पुस्तक की कुछ खास बातें उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ, जो हर लघुकथाकार को ध्यान रखना चाहिए।

पुस्तक के प्राक्कथन : 'मेरी बात में' रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथा 'ऊँचाई' एवं सुकेश साहनी की लघुकथा 'स्कूल' की रचना–प्रक्रिया का वर्णन किया है। यह स्पष्ट करती है कि कोई सूत्र किस प्रकार से चितंन एवं रचनात्मकता द्वारा लघुकथा का आकार लेता है तथा इसमें कितना श्रम एवं समय लगता है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि लघुकथा संक्षिप्तता, सूक्ष्मता एवं सांकेतिकता में जीवन की व्यंजना को समेटकर चलती है, उसमें प्रतीकों का, मिथकों का, अमूर्त पात्रों का प्रयोग किया जा सकता है।

लघुकथा की भाषा सहज एवं संप्रेषणीय होना चाहिए। कथ्य की माँग के अनुसार भाषा और शिल्प का निर्धारण होता है। लघुकथा रूखा–सूखा निबंध नहीं है बल्कि समाज में निरंतर हो रहे विकास–ह्वास सबकी प्राणवान् गाथा है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि एक घटना को लिख देना लघुकथा–लेखन नहीं है, न ही दो वाक्यों को लिख देना छोटी लघुकथा है। लघुकथा लेखन संतुलित दृष्टि, संयमित भाषा और गंभीर चिंतन के बिना संभव नहीं है। घटनाएँ लघुकथा तभी बनती हैं, जब वे पूरी तराश के बाद सोद्देश्य हों तथा कुछ सार्थक संप्रेषित करती हों। उन्होंने स्पष्ट किया है कि अगर घटनाओं को ही लघुकथा मानने लग जाएँ, तो पुलिस का रोजनामचा हफ्ते भर में लघुकथा संग्रह में तब्दील हो जाएगा। प्रवचन देने वालों के दृष्टांतों, किसी चुभते कथन या आन्दोलित करने वाले विचारों को लघुकथा मानने लगे, तो साहित्यिक जगत् में वैचारिक कोहरा और अधिक घना हो उठेगा। घटना एक आधारभूत तथ्य को खुद में छुपाए होती है, वही तथ्य जब कथ्य का आधार बनता है तो लघुकथा में परिवर्तित हो जाता है।

लघुकथा का शीर्षक पूरी कथा के ताले खोलने वाली चाबी जैसा होना चाहिए। अच्छा शीर्षक वह है जो लघुकथा के कथ्य को उद्घाटित करने में सहायक हो। शीर्षक, कथ्य, संवाद आदि में फालतू भाषायी चर्बी की आवश्यकता नहीं है। इस पुस्तक में कई, संग्रहों, संकलनों की भूमिकाएँ एवं समीक्षाएँ भी संग्रहीत हैं। यह पुस्तक रचनाकारों के लिए दिशा–निर्देशका के समान है एवं लघुकथा के वर्तमान स्वरूप का निरूपण करती है।

■ 593, संजीवनी नगर, जबलपुर–482003, म.प्र. / मो. 09425324978

।।'मेरी पसन्द' और हिमांशु जी की लघुकथाएँ।।

{लघुकथा डॉट कॉम पर लघुकथा विश्लेषण के कॉलम– 'मेरी पसन्द' के अन्तर्गत 'हिमांशु जी की कई लघुकथाएँ विभिन्न विश्लेषकों की पसन्द बनी हैं। इनमें से कुछ लघुकथाओं का विश्लेषण हम यहाँ शामिल कर रहे हैं। सम्पूर्ण चर्चा में अधिकाधिक मित्रों को शामिल करने के दृष्टिगत यहाँ उन्हीं विश्लेषकों के विश्लेषण शामिल किए गये हैं, हिमांशु जी के सन्दर्भ में जिनके विचार इस अंक में अन्यत्र नहीं आ पाये हैं।}

डॉ. सुधा गुप्ता

'नई सीख' / 'छोटे–बड़े सपने'

हिमांशु जी की लघुकथाओं में लघुकथा के सभी मानक तत्त्व विद्यमान रहते हैं। इनकी लघुकथाएँ कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। वे संक्षिप्त होती हैं, उनमें निरर्थक फैलाव नहीं होता, पैनी और धारदार होती हैं, लघुकथा का उद्देश्य एवं चरम (क्लाईमेक्स) एकदम सुस्पष्ट होता है; किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनकी लघुकथाओं में उद्देश्य कथन जैसी उबाऊ चीज़ कभी नहीं होती। ध्वनिकार के सिद्धान्तानुसार, उन्हें जो कुछ कहना होता है, उसे सिर्फ़ दो–चार ज़ोरदार प्रभावी शब्दों के द्वारा 'ध्वनित' कर देते हैं। लघुकथा समाप्त और शेष रह जाता है उसका कभी न भूलनेवाला स्वाद! वैसे तो मुझे ऊँचाई, अश्लीलता, मुखौटा, खुशबू, तीसरी मौत, गंगा स्नान, विजय जुलूस आदि लघुकथाएँ एक से बढ़कर एक लगी हैं। वर्त्तमान राजनैतिक, सामाजिक, भ्रष्ट व्यवस्था की पोल खोलती मनुष्यता के ह्वास की ये नग्न सच्चाइयाँ पाठक को एक तड़प से भर देती हैं। इनकी कई लघुकथाओं में ख़लील ज़िब्रान की लघुकथाओं की 'लपक' रह–रहकर कौंध मार जाती है!

इनकी एक लघुकथा है– 'नई सीख'। भेड़िया आदमी के छोटे बच्चे को गाँव से उठाकर बाहर निकलता है। दायित्व और कर्त्तव्यबोध से सम्पन्न गाँव के चौकीदार कुत्ते, भौंक–भौंककर भेड़िए को रोकते हैं। भेड़िया पूछता है– 'तुम मुझे क्यों रोक रहे हो?' एक बुज़ुर्ग कुत्ता क्रोधित होकर कहता है– 'तुम्हारी धूर्तता की भी हद हो गई। सबके सामने बच्चे को उठाए ले जा रहे हो और ऊपर से पूछते हो क्यों रोक रहे हो?' तब भेड़िया उत्तर देता है– 'बाबा, इस ज़माने में मेरी धूर्त्तता नहीं चल पाती, मुझे और अधिक धूर्त्तता सीखनी पड़ेगी; इसीलिए आदमी के बच्चे को उठाए लिये जा रहा हूँ।' बस भेड़िए के इस मासूम उत्तर के साथ लघुकथा ख़त्म। यही कथा का चरम है। भेड़िया मनुष्य के बच्चे को अपना आहार बनाने नहीं वरन् धूर्त्तता का गुरुमन्त्र लेने के लिए ले जा रहा है। लघुकथा का ध्वन्यार्थ पाठक को तिलमिलाने के लिए काफ़ी है। अनायास अज्ञेय की इन पंक्तियों से साक्षात् हो जाता है– 'साँप / तुम सभ्य तो हुए नहीं / नगर में बसना भी / तुम्हें नहीं आया / एक बात पूछूँ? / उत्तर दोगे? फिर कैसे सीखा डसना? / विष कहाँ पाया?'

हिमांशु जी की केवल आठ पंक्तियों की यह लघुकथा आज के मानव की धूर्त्तता

का रक्त–रंजित इतिहास स्वयं में समेटकर एक कालातीत रचना की श्रेणी में आ गई है। अत्यन्त सुन्दर, सोद्देश्य, सफल लघुकथा है।

इनकी दूसरी लघुकथा है– 'छोटे–बड़े सपने'। इस कथा में तीन बच्चे रेत के घरौंदे बनाकर खेल रहे हैं, साथ ही बीती रात में देखे गए अपने–अपने सपनों का वर्णन भी करते जा रहे हैं। सबसे पहले सेठ का बेटा (धनाढ्य वर्ग) बताता है कि रात उसने पहाड़ और नदियों को पार करके दूर–दूर घूमने का सपना देखा। तब बाबू का बेटा (मध्यम वर्ग) बताता है कि रात सपने में उसने बहुत तेज़ स्कूटर दौड़ाया और सबको पीछे छोड़ दिया। अब तीसरा बच्चा रिक्शेवाले का बेटा (सर्वहारा वर्ग) कहता है कि मेरे सपने के सामने तुम दोनों के सपने बेकार हैं। दोनों बच्चों के उसके सपने के विषय में में पूछने पर वह बेहद खुश होकर बताता है– 'मैंने रात सपने में खूब डटकर खाना खाया– कई रोटियाँ खाईं नमक और प्याज़ के साथ, पर...।'

'पर क्या?'–दोनों ने टोका

'मुझे भूख लगी है'–कहकर वह रो पड़ा।

यहीं लघुकथा का समापन हो जाता है। तीन अलग–अलग स्तरों के बालकों के अपने–अपने 'आई क्यू' और 'विज़न' हैं । धनिक वर्ग, मध्यम वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बच्चों के सपने भी कितने अलग होते हैं... हो सकते हैं! अन्तिम शब्दों– 'रो पड़ा' से लघुकथाकार उस निर्धन, निरुपाय बच्चे की भूख और बेबसी को उजागर कर देता है। यही लघुकथाकार की सफलता है।

■ 120 बी/2, साकेत, मेरठ–250003, उ.प्र./फोन 0121–2654749

प्रो. बी.एल.आच्छा

नवजन्मा

रामेश्वर काम्बोज की लघुकथा 'नवजन्मा' बहुत चर्चित रही है। इस लघुकथा का प्रमुख पात्र जिलेसिंह उस नजरिए से उत्क्रांत होकर विशिष्ट बन जाता है, जो कन्या के जन्म पर सार्वकालिक मायूसी को उत्सवी बना देता है। हजारों वर्षों के हमारे संस्कारों में पुत्रजन्म ढोल–नगाड़े में गूँजता रहा है। और पुत्री का जन्म बाहरी सन्नाटे के साथ जिंदगी भर के भयाक्रांत सोच में सूपड़े की आवाज में सिमट जाता है। यह लिंगानुपात की समस्या मात्र नहीं है; बल्कि पुत्री के जन्म के साथ एक अवसाद, उसके शेष जीवन की जिम्मेदारी, वैवाहिक जीवन के खतरे, दहेज के लेन–देन, अस्मत की अस्मिता के सवाल मुँहबाए खड़े हो जाते हैं। हमारे समकाल में भयावह घटनाओं के साथ झाड़ी में फेंके जाते कन्या–भ्रूण इन चिंताओं से व्यग्र कर देते हैं। कथाकार इसी खुरदुरी पृष्ठभूमि में उस पारिवारिक मुखिया के चरित्र का विन्यास करता है, जो भयाक्रांत उदासी को कन्या–जन्म के बाद ढोल की तिड़क्धुम्म में बदल दे। यही सोच जिलेसिंह को महत्त्वपूर्ण पात्र बना देता है। सामाजिक सोच की गर्हित दृष्टि को अतिक्रांत कर नवजन्मा कन्या के जन्म को

पुत्र–जन्म जैसे उत्सवी सोच में रूपांतरित कर देता है।

इस चरित्र के स्थापन और उसके भीतर उपजी अतिक्रांत दृष्टि के उन्मेष के लिए लघुकथाकार ने घर के वातावरण और पारिवारिक सदस्यों में सैकड़ों वर्षों से जमी हीन दृष्टि को कैनवास के रूप में सँजोया है। दादी का संवाद– 'जिल्ले! तेरा तो इभी से सिर बँध ग्या रे। छोरी हुई है।' बहिन इसलिए दुखी कि लड़की होने से उसका नेग मारा गया है। माँ की चिंता है लड़की के बड़े होने पर लड़का ढूँढने की। और पत्नी मनदीप की आँखें डबडबाई हुई। और तो और नवजात कन्या की आँखें भी मुँदी हुई हैं।

शहर से आया जिलेसिंह हर पात्र के संवादी बोल के भीतर पसरी सन्नाटे की उदासी, नेगवादी गणित, कन्या के विवाहित जीवन के लंबे खतरे से गुजरता है। लेकिन इसी पारंपरिक उदासी को जिलेसिंह नए नजरिए में बदल देता है। लगता है कि सैकड़ों वर्षों की ठंडी सोच को गरम पानी के सोते में बहा दिया हो। यहीं से जिलेसिंह में वह पात्र उभरने लगता है, जो सन्नाटे को चीरकर आँगन में ढोल की तिड़क्धुम्म से गुंजा देता है। यही नहीं, उसकी मुद्राएँ उत्सवी राग में पग जाती हैं। अलमारी से निकली तुर्रेदार पगड़ी उसकी प्रसन्नता को सिर पर ला देती है। ढोल की गिड़गिड़ी के साथ उसकी नाचती हुई भंगिमाएँ जैसे सैंकड़ों बरसों की कुसंस्कारी काई को हिलाडुला जाती है। पत्नी मनदीप की डबडबाई आँखों को उजाले दे जाती हैं। और तो और कन्या की अधमुँदी आँखों पर नोट घुमाकर संतू ढोलिया को थमाते हुए फिर से तिड़–तिड़–तिड़क धुम्म में नवजन्मा कन्या का उत्सवी राग–रंग रचा जाती है।

दो पृष्ठभूमियाँ हैं। जिलेसिंह इन्हीं बासी प्रथाओं, कन्या के प्रति उपेक्षा भाव और घर के लोगों की जड़ संस्कारिता का बिना तर्क–वितर्क किए अतिक्रमण कर देता है। यह उसके भीतर नए ज़माने की शिक्षा का विवेकशील सोच है, जो किसी के परामर्श या मशविरे से बँधा हुआ नहीं है। एक युवा सोच, जो स्वयं निर्णय लेता है। जड़ता पर निर्णयात्मक प्रहार करने के लिए वह सारा प्रबंध कर लेता है, जो पुत्र के जन्म पर होता आया है। कथाकार उसे वेशभूषा में ही तुर्रेदार नहीं बनाता; बल्कि उसके चेहरे की मुद्राएँ भी खुशी से नृत्य करती हैं। व्यक्तित्व के भीतरी विवेक और उसकी साकार नृत्यात्मक भाषा जिलेसिंह के व्यक्तित्व को इस तरह सांद्र कर देती है कि अकेले पात्र का सकारात्मक प्रभाव दादी, माँ, और पत्नी पर पड़ता है और वे भी इस उदासी के परिदृश्य को जेंडर समानता के सोच में बदल देते हैं। ढोल की ध्वनियों का सप्तम स्वर कन्या को भी वही दर्जा दे जाता है। रिवाजों के बतौर कन्या पर वार–फेर का रुपया भी इसी समता के दर्जे को साक्षी बनाता है। अंतर्मन के नए सोच और उत्सवी राग–रंग की यह भाषा जिलेसिंह की बॉडीलैंग्वेज में निखरकर पूरे घर को ही नहीं ग्रामीण जीवन को भी नई दिशा देती है।

जिलेसिंह के चारित्रिक विन्यास में मनोभाषा और बॉडीलैंग्वेज एक साथ थिरकते हैं। यह थिरकन पूर्वार्ध की उदासी पर नृत्य करने लगती है। जिलेसिंह का यह निर्णयात्मक नया सोच घर की तीन पीढ़ियों की जड़ संस्कारिता पर रोशन हो जाता है। ढोल की आवाज़ केवल घर तक सीमित नहीं रहती; बल्कि ग्रामीण परिवारों

में बदलाव की अनुगूँज बन जाती है। यह सारा उपक्रम कथा के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध की संरचना के कारण, पात्रों की मनोभाषा और बॉडीलैंग्वेज के कारण जिलेसिंह के चरित्र को प्रभावी बना देता है। ढोल की तिड़क्धुम्म! प्रभावी नाद बन जाती है। लगता है कि लिंगवादी सोच एक युगांतर ला रहा है। उस समाज में, जहाँ कन्या जन्म के कारण दादी, माँ और पत्नी जैसे ममता–भरे पात्र नारी पक्षधरता के संवाहक नहीं रह गए हैं। यह कहा जा सकता है कि कुछ तर्कयुक्त संवाद इस नई रोशनी को प्रखर बना सकते थे; पर इससे विन्यास शिथिल होता। सच तो यह है कि नए युवा में शिक्षा और जागृति का जो सोच रहा है, उसे तर्क–वितर्क के बजाय संकल्पित निर्णय में अधिक प्रखर बनाता है। संगीत की ध्वनियाँ उसे रंजक बनाती हैं; इसीलिए जिलेसिंह का यह आत्मनिर्णय उसके व्यक्तित्व की संकल्पित भावना का प्रतिनिधि बनकर लिंगवाद में समता को सामाजिक पारिवारिक स्वीकृति बना देता है। यह भी क्या कम है कि पत्नी मनदीप के बहते हुए आँसू इस नए सोच से दांपत्य को तरल बना देते हैं। हिन्दी लघुकथाओं के विशिष्ट चरित्रों में नवजन्मा का जिलेसिंह अपने को रेखांकित करता है।

■फ्लैट–701, टॉवर–27, नार्थ टाउन, स्टीफेंशन रोड, पेरम्बूर, चेन्नई–600012,तमिलनाडु/ मो 09425083335

निशान्तर (स्मृतिशेष)

खुशबू

चर्चित लघुकथाकार रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की 'खुशबू' है जो मेरी दृष्टि में अस्तित्वबोध की सबसे मुखर लघुकथा है। दो भाइयों के जीवन–निर्माण हेतु अपने जीवन और अपनी जवानी को होम कर देने वाली शाहीन अपने भाइयों द्वारा उपेक्षित होकर अकेलेपन की उदासी में घिर जाती है। और वही उदास शाहीन जब अपने विद्यालय पहुँचती है तो अपनी बेटी–सी छात्रा द्वारा उपहार स्वरूप गुलाब का फूल पाकर खिल उठती है। दरअसल जब व्यक्ति अपने सगे–संबंधियों या अपने व्यक्तिगत जीवन के सुखों के प्रति मोह को त्याग देता है; बेशक यह त्याग परिस्थितिजन्य ही हो; तथा एक बृहत् परिवार से, समाज से मुड़ जाता है, तब जो स्नेह का स्थायी सोता फूटता है वह व्यक्ति को प्राणवंत एवं अस्तित्ववान् बना देता है। दार्शनिक पृष्ठभूमि पर सृजित यह लघुकथा भी मुझे बार–बार अपने होने का एहसास कराती रहती है।

हमारे आर्ष ग्रंथों में अनेक स्थानों पर इस बात को रेखांकित किया है कि नारी–जाति स्नेह और सौजन्य की देवी है, यह नर–पशु को मनुष्य बनाती है, वाणी से जीवन को अमृतमय बनाती है, उसके नेत्रों में आनन्द का दर्शन होता है। वह संतृप्त हृदय की शीतल छाया है, उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है। 'खुशबू' लघुकथा में 'हिमांशु' जी ने वस्तुतः इसी दर्शन को बहुत ही सलीके से प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है, जोकि एक असाधारण कार्य था, जिसे हिमांशु जी ने बहुत खूबसूरती से अंजाम दिया। इतना ही नहीं, इस कथा यानी 'खुशबू' की नायिका शाहीन वस्तुतः सही अर्थों में

आर्ष ग्रंथों में वर्णित नारी–स्वरूप का सुन्दर प्रतिनिधित्व करती है। आर्ष ग्रंथों में लिखा है कि नारी बड़े–से–बड़े दुःख भी होठों पर मुस्कुराहट लेकर सह लेती है। अपने इन्हीं आदर्शों के कारण आज नारी दुखी है। नारी समर्पण में विश्वास करती है। 'खुशबू' की नायिका आर्ष ग्रंथों के वचनों को यथार्थ के धरातल पर सार्थकता प्रदान करती है। इस लघुकथा को पसंद करने का सबसे बड़ा कारण यह है कि नारी का ऐसा स्वरूप कम ही लघुकथाओं में देखने को मिलता है। शिल्प की दृष्टि से जब मैं सोचता हूँ तो इसका अंतिम पैराग्राफ़ अपनी सटीक भाषा–शैली के कारण अपनी स्थायी स्मृति बनाये रखता है, देखें! ''गुलाब की खुशबू उसके नथुनों में समाती जा रही थी। वह स्वयं को इस समय बहुत हल्का महसूस कर रही थी। उसने रजिस्टर उठाया और उपस्थिति लेने हेतु गुनगुनाती हुई कक्षा की तरफ़ तेज़ी से बढ़ गयी।''

■ परिवार संपर्क : 3ए/8, महेश नगर, पटना–800024, बिहार

डॉ. सुधा ओम ढींगरा

धर्म–निरपेक्ष

रामेश्वर काम्बोज 'हिंमाशु' की धर्म–निरपेक्ष। इसे जब मैंने पढ़ा था तो वर्षों पहले पंजाब में घटी एक घटना याद आ गई थी। फिर अचंभित हुई थी कि यह कैसे हो गया। सही कहा है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। लेखक समाज से लेखन की सामग्री उठाता है। घटना 1983 की है। उन दिनों जालन्धर की सड़कों पर एक काले मोटर साइकल पर तीन आतंकी मुँह–सिर लपेटकर घूमते थे और निहत्थे राह चलते लोगों को गोलियों से भून जाते थे। वे नहीं देखते थे कि राह चलते हिन्दू हैं या मोना सिख (जिन्होंने दाढ़ी और बाल कटवाए हुए होते है)। ऐसी ही एक आतंकी शाम में मैं अपनी भाभी संग बाज़ार में फँस गई; क्योंकि वहाँ शोर मच गया था कि मोटर साइकल आ गया है और जहाँ हम खरीदारी कर रहे थे, हमें दूकानदार ने दूकान के भीतर रहने के लिए कहकर शटर बंद कर दिया। थोड़ी देर बाद शोर समाप्त हुआ और दूकानदार ने शटर उठाया। हम लोग जल्दी–जल्दी घर की ओर चल दिए। रास्ते में कई लाशें पड़ी थीं, पुलिस अभी पहुँची ही थी। तभी कोने में हमने देखा एक कुत्ता पहले एक लाश को सूँघता है फिर दूसरी लाश को और दोनों पर पेशाब करके भाग जाता है। इस बार उनमें एक हिन्दू था और दूसरा सिख। आतंकियों की गोलियाँ इस बार सिखों को भी मार गई थीं; क्योंकि राजनीति और दंगाई किसी के सगे नहीं होते, उनका काम फ़साद करवाना होता है, उनका अपना कोई दीन–धर्म नहीं होता। यह घटना मैंने मस्तिष्क के किसी कोने में सम्भाल ली थी, सोचा था कभी इस पर लिखूँगी। यहाँ के जीवन के व्यस्तताओं और चुनौतियों ने उस घटना को सुधियों में कहीं पिछली कतार में कर दिया था।

काम्बोज जी की लघुकथा धर्म–निरपेक्ष जब पढ़ी तो यह घटना मानस पटल पर उभर आई। साम्प्रदायिकता पर लिखी गई सशक्त रचना है यह और वर्षों पहले की घटना

जो जालन्धर की सड़कों पर घटी वह भी साम्प्रदायिकता का निष्कृष्ट रूप था। काम्बोज जी ने तो कुत्ते का चयन कथ्य के अनुरूप किया और घटना में कुत्ता स्वभाविक आया। काम्बोज जी के पात्र दंगई पर उतर आए थे और उन्होंने एक–दूसरे को मार डाला। जालन्धर की घटना में अबोध लोग दंगाई, धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता और राजनीति के बीभत्स रूप के दौरान मारे गए थे। काम्बोज जी अपनी लघुकथा से इन सबके प्रति नफरत पैदा करने में सफल रहे हैं। लघुकथा और जालन्धर की घटना में कुत्ते ने उस मानसिकता पर पेशाब करके थप्पड़ मारा है जो धर्म, सम्प्रदाय और राजनीति को इंसानियत से ऊपर मानते हैं।

■ ईमेल : sudhadrishti@gmail.com

डॉ. अनीता राकेश

ऊँचाई

लघुकथा परिपक्व होने में वर्षों लग जाते हैं। घटनाएँ रोजमर्रा की हैं, छूती भी हैं, हिलाती भी हैं, पर स्थान बनाने में वक्त लगाती हैं। 'ऊँचाई' लघुकथा में स्थित न तो पिता नए हैं, न पुत्र, न पत्नी नई हैं, न बहू और न ही वे परिस्थितियाँ नयी हैं। नया है– उसका गठन, उसका शिल्प जो सारी परिस्थितियों को उलटते हुए कथानक को एक सहज किन्तु अनछुए मोड़ पर ले जाता है। पिता के आगमन पर आशंकित बहू की चिड़चिड़ाहट भरी तल्खी, पुत्र की द्वन्द्वग्रस्तता की स्वाभाविकता के बीच पिता द्वारा अच्छी फसल होने की वजह के साथ कुछ रुपये दिये जाते हैं। यहाँ आकर लघुकथा अपनी काया का आंतरिक विस्तार कर लेती है। कथाकार कहता कुछ नहीं, पर उसके भीतर की सारी पश्चात्ताप भरी अकुलाहट, बेचैनी तथा और भी बहुत कुछ पाठक के भीतर दौड़ जाती है। लगता है– कथा ठहर गई है। किन्तु, वस्तुतः वह ठहरी नहीं। वह तो पाठक के भीतर आचर्यमिश्रित लम्हों के साथ भावानुभूति की पराकाष्ठा पर जा चढ़ती है, जब पिता की प्यार भरी डाँट उसे मिलती है– ''ले लो! बहुत बड़े हो गये हो क्या?'' और, रचनाकार के हाथ पर रखे वे सौ–सौ के दस नोट मानो स्मृतियों के दस द्वार दसों दिशाओं से खटखटाने लगते हैं। सच, कथा के पात्र के साथ पाठक का तादाम्य हो जाता है। प्रत्येक की आँखों के आगे पिता का वही चित्र उभर जाता है तथा झुकीं नजरों का रचनाकार हम सबके भीतर कुछ जगा जाता है।

■ द्वारा श्री नरेश, आँगन अपार्टमेण्ट के सामने, कांग्रेस मैदान के पास, कदम कुआँ, पटना–800003, बिहार / मो. 09835093696

हरिशंकर सक्सेना

फिसलन

रामेश्वर काम्बोज जी की एक श्रेष्ठ लघुकथा 'फिसलन' कलियुगी चरित्र के दोहरे मुखौटे को बेनकाब करती है। आज का दोमुँहा व्यक्ति कहता कुछ और है करता कुछ और है। शराबबंदी पर

भाषण देने वाले सम्माननीय हैं। महेश तिवारी जब स्वंय शराब पीकर सड़क पर लोटते हैं तो भाषण से प्रभावित होने वाला भौचक्का रह जाता है। ऐसी स्थिति में श्रद्धा के महल ढह जाते हैं। प्रस्तुत लघुकथा में दोहरे मुखौटे के चरित्र पर भरपूर प्रहार किया गया है। शराब का प्रसंग एक प्रतीक है, जो वर्तमान परिवेश में सर्वत्र पाए जाने वाले दोमुँहें चरित्रहीन लोगों की भर्तस्ना करता है। इस कथा में भी स्थितियों का सहज विकास और पात्रों की विश्वसनीयता आश्वस्त करती है। इसमें कथाकार का रचनाधर्मी विवेक और युग–बोध को उभारने का आग्रह सराहनीय है। उसे चिंतन की बहुआयामी समझ देता है।

■ 145, कर्मचारी नगर, बरेली, उ.प्र./मो. 09760783993

डॉ. कुँवर दिनेश सिंह

खुशबू

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथा 'खुशबू' एक बड़ी बहन द्वारा अपने दो छोटे भाइयों के प्रति त्याग एवं निःस्वार्थ भाव से सहयोग की कथा है। पिता के न रहने पर घर–परिवार की सारी जिम्मेदारी उठाती शाहीन अपने जीवन के यौवनकाल के स्वर्णिम वर्षों को अपनी माँ की सेवा तथा दो छोटे भाइयों की पढ़ाई–लिखाई पूरी करवाने में न्योछावर कर देती है। लेकिन दोनों भाई नौकरी मिलते ही अलग–अलग शहरों में जा बसते हैं। घर में रह जाती है शाहीन और उसकी बूढ़ी माँ। कथाकार ने भाइयों की स्वार्थपरता एवं कृतघ्नता से आहत शाहीन के एकाकीपन की पीड़ा को मार्मिक ढंग से कहा है। 'जवानी के पड़ाव को पीछे छोड़ने को मजबूर' शाहीन उदास हो उठी है, "कितनी अकेली हो गई है मेरी ज़िन्दगी!" भाइयों का सम्पर्क केवल यदा–कदा पत्राचार से ही संभव हो पाता है; दोनों अपनी गृहस्थी में व्यस्त, बहन एवं माँ के प्रति अपने दायित्व को भुलाए बैठे हैं। शाहीन एक अध्यापिका है, अपने शिक्षणकर्म के प्रति भी दत्तचित्त है। नित गहराती उसकी उदासी उसके मन को उचाट कर देती है। लेकिन एक दिन अन्यमनस्क, उन्मनी–सी जब वह स्कूल के गेट पर पहुँचती है, दूसरी कक्षा की एक छोटी–सी बच्ची गुलाब के एक फूल के साथ उसका अभिनन्दन करती है, उसकी फूल–सी मंद–मंद मृदुल मुस्कान को देखकर वह अपनी पीड़ा व उदासी/उदासीनता सब तत्क्षण भूल जाती है, "वह स्वयं को इस समय बहुत हल्का महसूस कर रही थी। उसने रजिस्टर उठाया और उपस्थिति लेने के लिए गुनगुनाती हुई कक्षा की तरफ़ तेज़ी से बढ़ गई।"

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी ने शाहीन की व्यथा और उससे उसकी मुक्ति को बड़े भावपूर्ण ढंग से दर्शाया है। कथानक प्रवाहमय है; भाषा सहज एवं भावात्मक है; समाहार प्रभावी एवं मर्मस्पर्शी है। शीर्षक समुपयुक्त है : 'खुशबू' हृदयहारी गुलाब की सुगन्धि के रूप में प्रकृति की भैषजिक, पुष्टिकर, कायाकल्पक शक्ति की प्रतीक है, जो नायिका के खिन्न–उद्विग्न मन–मस्तिष्क को पुनर्युवनित कर देती है, जीवन में सुख–दुःख से अविक्षुब्ध होकर अविराम अग्रसर रहने को पुनःअनुप्राणित कर देती है।

कथांत में शाहीन स्थिरता एवं नवसंकल्प के साथ अपने कर्त्तव्य–पथ पर आगे बढ़ती है। एक कर्मठ एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अध्यापक के लिए उसके शिष्यों का स्नेह–सत्कार ही सबसे बड़ा सुफल होता है, जो उसे अदम्य जिजीविषा प्रदान करता है; यह बात लघुकथा 'खुशबू' के कथ्य से स्पष्ट होती है।

'खुशबू' में आधुनिक समाज में बदलते जीवन–मूल्यों के संकट को बड़े प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है। विशेषकर एकल नारी के संघर्ष को दिखाया है, जो जीवन में विपरीत परिस्थितियों का डटकर मुक़ाबला करती है। निःसन्देह आज नारी आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनी है, लेकिन उसने घर–परिवार के प्रति अपने दायित्व से कभी मुँह नहीं मोड़ा है। कथाकार ने स्त्री–पुरुष की प्रवृत्तियों के सूक्ष्म भेद को भी बताया है : इस लघुकथा में भाई (पुरुष) स्वार्थपूरित, कर्त्तव्यच्युत, कठोरहृदय और कृतघ्न हैं, तो बहन (स्त्री) दया, त्याग, प्रेम, संवेदना, सहानुभूति, कर्त्तव्यपरायणता और जिम्मेदारी के साथ घर–परिवार के प्रति समर्पित है। इस कथा में जीवन की समस्याओं के निदान के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोंण मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है, स्वकर्म अथवा कर्त्तव्य को निष्ठापूर्वक पूरा करना ही वास्तव में हमारा धर्म है, उसके फल के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं है; फल की ईप्सा/चिन्ता करने से विषाद ही मिलेगा, जीवन का वास्तविक आनन्द नहीं। जैसा कि कथ्य में स्पष्ट है : शिक्षणकर्मनिरत शाहीन अपने दुःख का समाधान अपनी कर्त्तव्यपरायणता में पा लेती है। संरचना और भाषिक प्रयोग की दृष्टि से भी यह लघुकथा श्रेष्ठ है : प्रमुख चरित्र/पात्र की मनोदशा को यथोचित अभिव्यक्ति प्रदान करती है, और एक शिष्या द्वारा शिक्षिका को गुलाब भेंट करने वाले दृश्य में कथा में 'ट्विस्ट' देकर क्षुब्ध, संतप्त, हताश शिक्षिका के मनोबल में अभिवृद्धि करते हुए उसके दृष्टिकोण को सकारात्मक बना देती है। समकालीन यथार्थ को दर्शाती, मूल्यबोध एवं सकारात्मक सोच से परिपूर्ण यह लघुकथा अनायास हृदय में उतर जाती है। उत्कृष्ट लघुकथाओं में गण्य यह रचना भी रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी के सशक्त लघुकथा–कौशल की परिचायक है।

■ 3, सिसिल क्वार्टर्ज, चौड़ा मैदान, शिमला–171004, हि.प्र./मो. 09418626090

हरेराम समीप

धर्मनिरपेक्ष

हिमांशु जी की लघुकथा 'धर्मनिरपेक्ष' चुटीले व्यंग्य से लैस एक मार्मिक कथाबिम्ब है। यह लघुकथा हमारे सामाजिक जीवन में धार्मिक घृणा से उपज रही हिंसा और अमानवीयता के अँधेरों का खुलासा करती है। इस लघुकथा के जरिये हिमांशु जी समाज में बढ़ रही कट्टरता उन्माद और आतंकवाद की विकराल स्थिति और उसके खतरे को रेखांकित करते हैं और इसके खिलाफ अपना व्यंग्यभरा आक्रोश व्यक्त करते हैं। आज जब ये क्रूर शक्तियाँ सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता के हमारे पुरातन ढाँचे को गिराने पर उतारू हो गई हैं और मनुष्य बर्बर राक्षस की तरह

व्यवहार करने लगा है तब ऐसी लघुकथाएँ क्रांतिकारी कबीर की निर्भीक परम्परा को आगे बढ़ाती जान पड़ती हैं जो आज की जरूरत भी है। वास्तव में ये दोनों लघुकथाएँ अपने समय की ध्वनियाँ हैं। दोनों कथाओं में जो अर्थविस्फोट होता है उसकी गूँज पाठक के दिलो–दिमाग को झिंझोड़ देती है। इसलिए हम इन्हें सचेत लघुकथाएँ भी कह सकते हैं। इनकी भाषा की कसावट इतनी पुख्ता है कि जिसमें न अनावश्यक वाक्यस्फीति निर्मित होती है न ही कहीं कृत्रिमता मिलती है और न कथाक्रम में कोई झोल नजर आता है। इन दोनों रचनाओं के कथानक स्वाभाविक प्रवाह लिये हुए हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इन दोनों लघुकथाओं का अभीष्ट वर्तमान सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हुए मनुष्यता में गहरी और अटूट आस्था व्यक्त करना है।

■ ईमेल : sameep395@gmail.com

रमेश गौतम

सुबह हो गई

अपनी पसन्द की दूसरी लघुकथा के रूप में रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की 'सुबह हो गई' का उल्लेख करना चाहूँगा। हिमांशु जी लघुकथा के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। 'और सुबह हो गई' लघुकथा में वे नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व को गहन संवेदना के साथ व्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ– डबडबाई आँखों से सीधे परेश की आँखों में देखते हुए वह भर्राए स्वर में बोली– "आज चाय मैं बनाऊँगी"। लघुकथा की मुख्य पात्र शालू का यह संवाद पूरी लघुकथा के परिप्रेक्ष्य में देखें तो उसके भीतर के संशय को उद्घाटित करता है; किन्तु वहीं लघुकथा का समापन कथानायक के अटूट विश्वास के साथ होता है। संशय का पहाड़ एक क्षण में समतल हो जाता है। आज नारी विमर्श, सह अस्तित्व आदि की बहुत–सी चर्चाएँ होती हैं; किन्तु यदि स्त्री–पुरुष के मध्य विश्वास के बीज अंकुरित होने लगें, तो स्वतः ही सहअस्तित्व का विचार प्राणवान हो जाएगा।

लघुकथा स्त्री–पुरुष के बीच विश्वास का ऐसा मजबूत सेतु बनाती है। परेश जैसे युवक लाल सिंह जैसे धूर्त्त चरित्रों के बीच फँसी शालू जैसी विवश स्त्रियों को उन तमाम अन्तर्द्वन्द्वों से मुक्ति प्रदान करते हैं जो उन्हें नकारात्मक स्थितियों की ओर ले जाते हैं।

विचारणीय प्रश्न है कि जो नारी शून्य को विराट का रूप देती रही है उसकी वर्तमान स्थितियाँ कितनी त्रासद हैं। आज कहीं भी वह स्वयं को सुरक्षित अनुभव नहीं करती। हर जगह लाल सिंह जैसी लोलुपदृष्टि उसे अपने चारों ओर पसरी दिखायी देती है। हम कैसे एक स्वस्थ समाज की अवधारणा को सार्थक कर सकते हैं। आज स्त्री व पुरुष के बीच एक सापेक्ष सामंजस्य की आवश्यकता है, जो स्त्री व पुरुष के बीच हर रिश्ते के लिए वाँछनीय है। स्वस्थ व विकारहीन समाज का निर्माण तभी सम्भव है। हर रिश्ते के बीच से संशय का अंधकार छाँटना होगा। 'और सुबह हो गई' लघुकथा संशय के इसी अंधकार को तिरोहित करती है। मनुष्य के भीतर चेतन या अचेतन में छिपे हुए विकार उसे अन्तहीन पराभव की ओर ले जाते हैं। लघुकथा का लाल सिंह इसी पराभव का

प्रतीक है। वहीं मनुष्य होने की अनुभूतियाँ उसे ऊँचाइयों पर ले जाती हैं, जिसका प्रतीक परेश है। परेश हमें स्थितियों से जूझने का आत्मबल देता है। परिवेश की विकृतियों के बीच लघुकथा नायक परेश एक सबल संस्कृति के रूप में व्यंजित होता है।

सृजन के स्तर पर लघुकथा नारी शोषण व स्त्री देह उत्पीड़न के विरुद्ध एक सकारात्मक सोच का पथ प्रशस्त करती है। परेश का चरित्र एक गतिशील बिम्ब की तरह उभरता है जो ढेर से बिखरे हुए मूल्यों को "मैं तुमसे ही शादी करूँगा, सिर्फ तुमसे और किसी से नहीं" कहकर उन्हें समेटने का सुखद प्रयास करता है। अतएव दोनों लघुकथाएँ अपने उत्कर्ष में कथ्य और शिल्प की दृष्टि से नये मानक स्थापित करती हैं।

■ 78 बी, संजय नगर, स्टेडियम रोड, बरेली, उ.प्र./मो. 09411470604

डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

नवजन्मा

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की कथा "नवजन्मा" में शहर से वापस आया कथानायक जिले सिंह घर के वातावरण को उदासियों से भरा पाता है। बेटी के जन्म ने दादी, माँ और बहन के अरमान मार दिए। उनके संवाद हमारे समाज की उस सोच को उजागर करते हैं; जहाँ स्त्री खुद अपने स्त्रीत्व को अभिशाप स्वीकार करती है। आगत की आशंका से माँ मौन है और पत्नी बेटी को जन्म देने के अपराध–बोध से ग्रस्त, भरी आँखों को पोंछकर मुँह फेर लेती है। अवाक् पाठक के लिए कथा के उत्तरार्द्ध में परिदृश्य बदला हुआ है। पारंपरिक परिधान में जिले सिंह ने ढोल की थाप पर नाचते हुए सौ का नोट बिटिया पर वार कर ढोलिया को थमा दिया और ढोल और जोर से बज उठा। कथा यहीं समाप्त होती है। परन्तु इस परिदृश्य में कथाकार की पंक्ति, "पति के चेहरे पर नज़र पड़ते ही मनदीप की आँखों के सामने जैसे उजाले का सैलाब उमड़ पड़ा" पाठकों के मन को उजालों से भर जाती है। निराशा से आशा तक का सफ़र बहुत छोटी–सी कालावधि में घटित घटना में बहुत सशक्त रूप में तय हुआ।

भाषा और भावाभिव्यक्ति पात्रों की मनोवृत्ति के अनुरूप है। दादी, "जिल्ले तेरा तो इभी से सिर बंध ग्या रे" कहती है, तो बहन, "मेरा तो नेग मारा गया" बेहद सरल सहज। माँ का मौन और फिर भुनभुनाना मनोभावों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः समर्थ है। कथानक निरंतर रोचकता लिए है। जिले सिंह का तीर–सा लौट जाना उत्सुकता बढ़ा देता है– जाने क्या होगा आगे? सहज–सरल संवाद सहृदय पाठक को घटना क्रम से जोड़ देते हैं। मनदीप की उदासी और संतोष दोनों बेहद प्रभावी ढंग से व्यक्त किये गए। उजाले के सैलाब जैसे छलकते आँसुओं को उसने इस बार नहीं पोंछा। नायक के संवाद न के बराबर हैं; लेकिन उसके हाव–भाव अनकही कथा कहते हैं। जिले सिंह के माथे की लकीरें दिखाई देती हैं और उसका तुर्रेदार पगड़ी पहन आँगन में नाचना बिटिया के जन्म की उदासी को गौरव पूर्ण पलों में परिवर्तित कर देता है। मनोभावों की ऐसी अभिव्यक्ति दुर्लभ है। कहना अतिशयोक्ति न होगा कि कथा अपने कलेवर,

भाव–भूमि, भाषा–शैली और प्रस्तुति की दृष्टि से अनुपम है। कथा के समापन में समाज की सोच में सुखद परिवर्तन और उमंगों के ढोल की अनुगूँज सुनाई पड़ती है– तिड़कधुम्म! और एक "नवजन्मा" अहसास मन को मुदित कर जाता है।

■ एच–604, छरवाडा रोड, वापी, जिला–वलसाड–396191, गुजरात / मो. 09824321053

भावना सक्सैना

स्त्री–पुरुष

रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी की लघुकथा 'स्त्री–पुरुष'। समाज की संकुचित मानसिकता पर गहरी चोट करती यह लघुकथा एक साथ कई पहलुओं पर प्रहार करती है जैसे कि किसी भी स्त्री और पुरुष को आपस में बात करते देख सिर्फ संदेह की नज़र से उन्हें देखना, निर्धन को हेयदृष्टि से देखना और किसी महिला का ध्यान अपनी ओर न जाने पर पुरुष अहं पर चोट लगना। इस सुगठित कहानी का अंतिम वाक्य गहरे उद्वेलित कर जाता है। काम्बोज जी एक सुहृदय रचनाकार हैं जिन्हें आसपास की घटनाएँ प्रभावित करती हैं और उन्हीं पर वे लिखते भी हैं। लिखने के लिए उनके पास एक संवेदनशील हृदय है और यही कारण है कि वह जो भी लिखते हैं उसमें हर बार पढ़ने पर कुछ न कुछ नयेपन का अनुभव होता है।

■ 64, प्रथम तल, इंद्रप्रस्थ कॉलोनी, सेक्टर 30–33, फरीदाबाद–121003, हरि. / मो.09560719353

सत्या शर्मा 'कीर्ति'

गंगा–स्नान

ऐसी ही कई लघुकथाएँ हैं, जो अपनी उत्कृष्ट लेखन शैली, बेहतरीन विषयवस्तु और सार्थक संदेश के कारण कालजयी बन गई हैं, जिन्हें बार–बार पढ़ने पर वे एक नया संदेश देते हुए प्रतीत होती हैं। कई लघुकथाकार ऐसे हैं, जिनकी रचनाएँ पढ़कर बहुत कुछ सीखने को मिलता है। ऐसे में किन्हीं दो रचनाओं पर चर्चा करने का चुनाव करना सचमुच ही कठिन कार्य है। मैं रामेश्वर हिमांशु की लघुकथा 'गंगा–स्नान' पर चर्चा करती हूँ। किस तरह कम से कम शब्दों और प्रतीकों के माध्यम से अपनी बातों को कहना है, यह वे भली–भाँति जानते हैं। उनकी सभी लघुकथाओं में भाषा की मितव्ययता का यह रूप देखने को मिलता है।

–हिमांशु जी की लघुकथा 'गंगा–स्नान' में स्त्री के सबल पक्ष और उसकी सुदृढ़ इच्छा शक्ति तथा आत्मविश्वास को दर्शाया गया है। कथा की पात्रा 70 वर्षीय पारो है, जिसने अपने पति और पुत्र दोनों को खो दिया है फिर भी कभी अपने व्यवहार में निराशा और असहाय होने की अनुभूति नहीं करवाती है। 70 वर्ष की उम्र में भी कर्मरत रहने के कारण वह बिल्कुल युवा है। उसके झुर्रियों भरे चेहरे और झुकी कमर में भी आत्मबल की चमक और धमक है, जो किसी के आगे हाथ नहीं फैलाती, जो स्त्रीत्व

की आभा से आलोकित है। और यही है स्त्री की सच्ची तस्वीर; क्योंकि अकसर स्त्री आर्थिक कारणों से ही दबी रहती है, वरना वह इतनी सक्षम होती है कि अकेले दम पर सुबह से शाम तक घर की एवं घर के सदस्यों की सारी जिम्मेदारियाँ उठाती हैं, नया सृजन करती है, वह भी बिना किसी स्वार्थ के। साथ ही लेखक अपने कथा के माध्यम से यह भी कहने की कोशिश करते हैं कि अगर स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र है, तो बगैर किसी पर बोझ बने जीवन गुजार सकती है एवं अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर सकती है। और यही बात पारो भी जानती है कि सम्मान तथा आर्थिक स्वतंत्रता के लिए शिक्षा से बड़ी कोई पूँजी नहीं है। शिक्षित स्त्री पूरे समाज को नई दिशा दे सकती है, अतः पारो जो स्वयं शिक्षित नहीं है, वह चाहती है कि आने वाली पीढ़ी शिक्षा के गहने से जड़ी हो। क्योंकि शिक्षा किसी भी कर्म और धर्म से ज्यादा पवित्र तथा पुण्य का काम है, जिसे वह गंगा–स्नान से भी ज्यादा पवित्र समझती है।

■डी–2, सेकेंड फ्लोर महाराणा अपार्टमेंट, पी. पी. कम्पाउंड, रांची–834001, झारखण्ड / मो. 07717765690

डॉ. सरस्वती माथुर (स्मृतिशेष)

उपचार

लघुकथा 'उपचार' आज की राजनीति की सच्चाइयों का एक खुला दस्तावेज़ है। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी द्वारा रचित यह लघुकथा राजनीति में कुर्सी की दौड़ व मुखौटा ओढ़े नेताओं की ओछी मानसिकता का नक़ाब उतारती है। इस लघुकथा की भाषा पारदर्शी और संश्लिष्ट तो है ही पर इसमें सटीक संवेदनशील दृष्टि के भी दर्शन होते हैं। यदि लघुकथा के अंत से शुरू करें तो देखिए समूचा परिदृश्य जी उठता है– 'डॉक्टरों ने राहत की साँस ली– चार लोगों ने भारी भरकम नेता जी को कुर्सी पर बिठा दिया, उनकी चेतना लौट आई।" यही उपचार तो आजकल हो रहा है। नेतागण चुनाव जीत जाने के बाद कोमा में चले जाते हैं और जनता की हालत उस बेताल की सी हो जाती है, जो विक्रमादित्य के कंधे पर लटका रहता है, प्रश्न करता है और सही उतर ना मिलने पर उड़ जाता है।

■ परिवार संपर्क : ए–२, सिविल लाइन, जयपुर–6, राजस्थान / दूरभाष ; 0141–2229621

सुरेश बाबू मिश्रा

ऊँचाई

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथा–'ऊँचाई' में कथ्य और तथ्य एकामेक हो गये हैं। यह पाठकों को सकारात्मक संदेश देती है। रोजी–रोटी की तलाश में शहर या कस्बों में बसे एकाकी परिवारों की मनोदशा को रेखांकित करती यह लघुकथा बहुत प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। लघुकथा का मुख्य पात्र रोजी–रोटी के सिलसिले में शहर आकर बस गया है। इन दिनों वह और उसका परिवार आर्थिक तंगी के कठिन दौर से गुजर रहा

है। उसे अपने परिवार के सदस्यों के लिए जरूरी सामान जुटाना भी मुश्किल हो रहा है। इस सबके कारण उसका मन इतना परेशान है कि उसने तीन महीने से गाँव में रह रहे अपने परिवार को पत्र तक नहीं लिखा है। इसी बीच एक दिन अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के उसके पिताजी उसके घर आ जाते हैं। यह देखकर वह और उसकी पत्नी परेशान हो उठती है। पत्नी का यह कथन उनकी विपन्नता और मानसिक वेदना का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है– "लगता है पैसों की जरूरत आ पड़ी है, वर्ना यहाँ कौन आने वाला था। अपने पेट का गड्ढा भरता नहीं, घर वालों का कुआँ कहाँ से भरोगे।"

पिता के इस तरह से आ जाने से बेटा बड़ा संकोच और दुविधा में है। वह सोच रहा है कि पिताजी जरूर रुपये माँगने आए होंगे। अब वह उनकी सहायता कहाँ से और कैसे कर पाएगा, यही चिन्ता उसे सताए जा रही है। खाना खाने के बाद पिताजी ने जब एकान्त में उसे अपने पास बुलाया तो उसके दिल की धड़कन तेज हो जाती है। वह सोच रहा है कि अब पिताजी घर की जरूरतों के लिए रुपए माँगने ही वाले हैं। मगर उसकी आशा के विपरीत जब पिताजी उसे सौ–सौ के दस नोट थमा देते हैं तो उसका हृदय पिता के प्रति असीम प्रेम से भर जाता है। पिता के हृदय की विशालता के सामने वह अपने को बहुत बौना अनुभव करने लगता है। उसका हृदय अपराध बोध से भरा जा रहा है।

लघुकथा के शीर्षक 'ऊँचाई' का यह कथनपूर्ण सार्थकता प्रदान करता है– "ले लो, बहुत बड़े हो गए हो क्या?" नायक की आँखों के सामने बरसों पहले का वह दृश्य स्थिर हो जाता है, ''जब पिताजी स्कूल भेजने के लिए इसी तरह हथेली पर इकन्नी टिका दिया करते थे।'' लेखक के इस वाक्य ने भी लघुकथा को उत्कृष्ट श्रेणी में ला खड़ा किया है, ''तब मेरी नज़रें आज की तरह झुकी नहीं होती थीं।'' लघुकथा के गुण–धर्म के आधार पर यह एक आदर्श लघुकथा है। इसका कैनवास बहुत छोटा है मगर इसकी मारक क्षमता बहुत अधिक है।

■ ए–373/3, राजेन्द्र नगर, बरेली–243122, उ.प्र./मो. 09411422735

डॉ. राजेन्द्र 'साहिल'

भग्नमूर्ति

'भग्नमूर्ति' एक बहुत ही आम स्थिति को बड़ी सहजता के साथ प्रस्तुत करती है। 'भग्नमूर्ति' पढ़ने वाले हर पाठक को लगता है कि यह तो बड़ी जानी–पहचानी स्थिति है... परंतु किसी कारणवश उसने इस पर ग़ौर ही नहीं किया था। मुझे लगता है ऐसी हालत से हर व्यक्ति जीवन में कभी न कभी अवश्य गुज़रता है कि वह बड़े अरमान लेकर किसी के यहाँ जाए और उसे उचित आवभगत न मिले। यही नहीं इस लघुकथा की अभिव्यक्ति भी बड़ी सहज है। लघुकथाकार ने बड़े स्वाभाविक ढंग से जीवन–स्थिति का वर्णन भर कर लिया है। यहाँ पाठक और 'जीवन स्थिति' आमने–सामने हैं.... लघुकथाकार ने इस खूबी से अपनी बात कही है कि वह स्वयं कहीं नज़र भी नहीं आता।

■ संपर्क : अनुपलब्ध

डॉ. आशा पाण्डेय

ऊँचाई

मेरी पसंद की लघुकथाओं में पहला नाम रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी की लघुकथा 'ऊँचाई' का आता है। ये कहानी बहू की झुँझलाहट भरी आवाज से शुरू होती है और स्नेह की उस 'ऊँचाई' तक जाती है, जहाँ बेटे के पास पिता से कहने के लिए कुछ नहीं बचता, बस पिता के प्रेम की गर्माहट को महसूस करते हुए नजरें झुका लेता है। यह कथा ये साबित करती है कि बच्चे कितने भी बड़े और समझदार हो जाएँ, किंतु उनकी समझ पिता की सोच और समझ का अतिक्रमण नहीं कर सकती। बेटे–बहू माँ–बाप से ठीक से रिश्ता भी नहीं निभा पाते, किंतु बच्चों के प्रति माँ–बाप के प्रेम का ज्वार कभी थमता ही नहीं। माँ–बाप पढ़े लिखे हों या अनपढ़, अपने बच्चों की परेशानी को समझने में उनसे चूक नहीं होती। ये कथा माँ–बाप के लिए उत्तरोत्तर प्रतिकूल होती परिस्थितियों तथा बच्चों की मानसिक स्थिति को तो दर्शाती ही है, पिता बच्चों के लिए हमेशा वटवृक्ष की छाँव बन सकता है यह एहसास भी दिला जाती है। लेखक ने इस लघुकथा में रिश्तों की मधुरता को बढ़ाने का प्रयास तो किया ही है साथ ही मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है।

■ संपर्क : अनुपलब्ध

रणजीत टाडा

नवजन्मा

'मेरी पसंद' के अन्तर्गत मैं अपनी पसंद की लघुकथाओं में से पहली लघुकथा 'नवजन्मा'। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी की 'नवजन्मा' मेरी सर्वाधिक पंसदीदा लघुकथाओं में से है। समाज में लड़कियों के प्रति भेदभाव पर केन्द्रित 'नवजन्मा' एक बेहतरीन लघुकथा है। भावहीन समाज पर यह लघुकथा एक गहरा चाँटा है। लड़की पैदा होने पर घर में एक मातम–सा छा जाता है। सबके चेहरों पर मायूसी पुत जाती है। व्यंग्य–बाणों को सुनकर पिता तनावग्रस्त हो जाता है; लेकिन सबसे अधिक दुःखी नवजात की माँ होती है, जैसे उसने बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो। नवजात का पिता जिले सिंह जब मनदीप के कमरे में जाता है, तो वह उसका सामना नहीं कर पाती और डबडबाई आँखें पोंछते हुए अपना मुँह अपराधभाव से दूसरी ओर घुमा लेती है। एक हृदयविदाकरक दृश्य उपस्थित होता है। जब कथानायक तीर की तरह मनदीप के कमरे से बाहर निकलता है, तो एक आशंका उत्पन्न होती है, लेकिन जब वह ढोल वाले को लाकर आँगन में आ खड़ा होता है, तो एक सुखद अहसास होता है। ढोल बजने लगता है। सबसे अधिक खुशी मनदीप को होती है, जब जिले सिंह मनदीप के कमरे में प्रवेश करता है और नवजात को प्यार करते पति के चेहरे पर जब उसकी नज़र पड़ती है, तो उसकी आँखों के सामने उजाले का सैलाब उमड़ पड़ता है। उसकी आँखों से खुशी के

शेष पृष्ठ 90 पर...

श्री रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी की साहित्यिक यात्रा के कुछ पड़ाव

पूज्य माताजी–पिताजी एवं चार स्नेहिल भाइयों के साथ हिमांशु जी ⬇

⬆ चार स्नेहिल भाइयों के साथ हिमांशु जी (वर्ष 2005)

⬆ सपत्नीक पुत्र निशांत को दादा–दादी का आशीर्वाद

1967 में युवा हिमांशु जी ➔

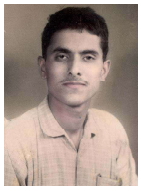

पारिवारिक फोटो : रोहित, निशांत, श्रीजा, अंजना एवं सुशांत ⬇

हिमांशु जी की सहधर्मिणी श्रीमती बीरबाला काम्बोज जी माताजी–पिताजी के साथ ⬇

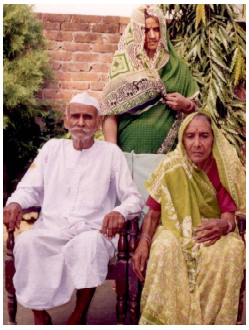

दूर देश में सम्मान : कनाडा (ब्रैम्पटन लाइब्रेरी) में कैनेडियन पंजाबी साहित्य सभा टरांटो द्वारा डॉ. करनैल सिंह थिन्द के साथ हिमांशु जी का सम्मान। ⬇

कनाडा के सांसद श्री बॉब सरोया एवं हिन्दी चेतना के प्रधान संपादक श्री श्याम त्रिपाठी के साथ ⬇

एक कार्यक्रम में श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी के साथ हिमांशु जी। ⬇

⬆ सपत्नीक हिमांशु जी सुकेश साहनी जी के साथ एक कार्यक्रम में भोजन करते हुए। पीछे– पवन जैन, बलराम अग्रवाल व कपिल शास्त्री।

दिल्ली पुस्तक मेले में हिन्दी साहित्य निकेतन के स्टाल पर
विभिन्न साहित्यकारों के मध्य हिमांशु जी ⬇

एक लघुकथा–कार्यक्रम में बलराम अग्रवाल, सुकेश साहनी, सुभाष नीरव व अन्य लघुकथाकारों के मध्य हिमांशु जी ➔

लघुकथाकार सीमा सिंह के परिवार के साथ हिमांशु जी का परिवार ⬇

जनवरी 2012 में राँची में आयोजित लेखन शिविर में साहित्यकार मित्रों के साथ ⬇

⬆ श्री दीपक मशाल के साथ हिमांशु जी

⬆ सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता जी द्वारा हिमांशु जी का स्वागत–सम्मान

एक कार्यक्रम में मंच से वक्तव्य देते हिमांशु जी ⬇

⬆ अनिता ललित जी के काव्य संग्रह के लोकार्पण में डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव व अनिता ललित के साथ हिमांशु जी

दिल्ली पुस्तक मेले में एक पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम में मधुदीप, बलराम अग्रवाल, सुकेश साहनी, भूपाल सूद, अशोक वर्मा, सुभाष नीरव व अन्य के मध्य हिमांशु जी ⬇

↑ साहित्यायन ट्रस्ट के मंच पर श्री अतुल प्रभाकर एवं सुश्री रूबी महन्ती के साथ

↑ वनिका प्रकाशन के स्टाल पर डॉ. नीरज शर्मा व डॉ. सुधांशु शर्मा के साथ हिमांशु जी

↑ पटना में लघुकथा लेखक–आलोचक सम्मेलन–89 में निशांतर जी के वक्तव्य के दौरान गम्भीर मुद्रा में हिमांशु जी

↑ हिमांशु जी को डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर स्काउट (केन्द्रीय विद्यालय) का दायित्व

हिमांशु जी वर्ष 1994 में ➔

↑ हिमांशु जी वर्ष 1995 में

← हिमांशु जी वर्ष 2007 में

।।रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' का लघुकथा–सृजन।।

लघुकथा संग्रह 'असभ्य नगर और अन्य लघुकथाएँ' से बीस प्रतिनिधि लघुकथाएँ

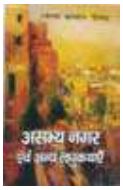

01. ऊँचाई

पिताजी के अचानक आ धमकने से पत्नी तमतमा उठी, ''लगता है बूढ़े को पैसों की ज़रूरत आ पड़ी है, वर्ना यहाँ कौन आने वाला था। अपने पेट का गड्ढा भरता नहीं, घर वालों का कुआँ कहाँ से भरोगे?''

मैं नज़रें बचाकर दूसरी ओर देखने लगा। पिताजी नल पर हाथ–मुँह धोकर सफर की थकान दूर कर रहे थे। इस बार मेरा हाथ कुछ ज्यादा ही तंग हो गया। बड़े बेटे का जूता मुँह बा चुका है। वह स्कूल जाने के वक्त रोज़ भुनभुनाता है। पत्नी के इलाज़ के लिए पूरी दवाइयाँ नहीं खरीदी जा सकीं। बाबू जी को भी अभी आना था।

घर में बोझिल चुप्पी पसरी हुई थी। खाना खा चुकने पर पिताजी ने मुझे पास बैठने का इशारा किया। मैं शंकित था कि कोई आर्थिक समस्या लेकर आए होंगे। पिताजी कुर्सी पर उकडू बैठ गए। एकदम बेफिक्र, ''सुनो'' –कहकर उन्होंने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैं साँस रोककर उनके मुँह की ओर देखने लगा। रोम–रोम कान बनकर अगला वाक्य सुनने के लिए चौकन्ना था।

वे बोले, ''खेती के काम में घड़ी भर की फुर्सत नहीं मिलती है। इस बखत काम का ज़ोर है। रात की गाड़ी से ही वापस जाऊँगा। तीन महीने से तुम्हारी कोई चिट्ठी तक नहीं मिली। जब तुम परेशान होते हो, तभी ऐसा करते हो।''

उन्होंने जेब से सौ–सौ के दस नोट निकालकर मेरी तरफ़ बढ़ा दिए– ''रख लो। तुम्हारे काम आ जाएँगे। इस बार धान की फ़सल अच्छी हो गई है। घर में कोई दिक्कत नहीं है। तुम बहुत कमज़ोर लग रहे हो। ढंग से खाया–पिया करो। बहू का भी ध्यान रखो।''

मैं कुछ नहीं बोल पाया। शब्द जैसे मेरे हलक में फँसकर रह गए हों। मैं कुछ कहता इससे पूर्व ही पिताजी ने प्यार से डाँटा– ''ले लो। बहुत बड़े हो गए हो क्या?''

''नहीं तो'' –मैंने हाथ बढ़ाया। पिताजी ने नोट मेरी हथेली पर रख दिए। बरसों पहले पिताजी मुझे स्कूल भेजने के लिए इसी तरह हथेली पर इकन्नी टिका दिया करते थे, परन्तु तब मेरी नज़रें आज की तरह झुकी नहीं होती थीं।

02. चट्टे–बट्टे

एक बार नए–नए आए एक साहब ने एक फाइल लाने के लिए कहा। इस पर कोई कार्यवाही न हो सकी थी। बड़े बाबू भी दफ्तर में कुछ समय पहले आए थे। अभी फाइलों का पूरा परिचय नहीं पा सके थे।

वे फाइल को जितना बाहर खींचते, वह उतना ही भीतर चली जाती। साहब

थे कि आफत मचाए हुए थे। बड़े बाबू पसीने से नहा उठे। साहब भी आ धमके और ज़ोर आज़माइश करने लगे। साँस धोंकनी की तरह चलने लगी।

बूढ़ा दफ्तरी यह सब खेल देख रहा था। उसने फाइल की सूरत देखी। उसने दोनों की ओर दृष्टि उठाई– ''दस का नोट निकालिए।''

''दस का नोट! क्या मतलब?'' बड़े बाबू चकराए।

''बाबू जी, नई दुल्हन को भी मुँह दिखाई देनी पड़ती है। यह फाइल दस साल से दबी पड़ी है। ऐसे नहीं निकलेगी। दस का नोट निकाल भी दीजिए।''

बड़े बाबू ने दस का नोट निकालकर दफ्तरी के हाथ पर रखा।

दफ्तरी ने पूर्व अनुभव का लाभ उठाते हुए दस का नोट उस फाइल से छुआ दिया। फाइल बड़ी आसानी से बड़े बाबू के हाथ में आ गई।

03. मसीहा

दाढ़ी के बाल बेतरतीब। सिर पर ढीली–ढाली पगड़ी– बदरंग और चीकट। जिलेसिंह अपने इस हुलिए से भरी–भीड़ में पहचाना जा सकता था। दिन भर साइकिलों की मरम्मत करता रहता। राह चलते लोग भी उसे झल्ला कहकर ठिठोली करते। उत्तर में वह फिक् से हँस देता। खाड़कुओं द्वारा सरपंच दयाराम की हत्या के बाद से वह अचानक चुप हो गया है, लेकिन उसकी चुप्पी को कोई गंभीरता से नहीं लेता।

रात के दस बजे। उसके पड़ोसी सतपाल के दरवाजे पर दस्तक हुई। सतपाल इसे झल्लेसिंह कहकर बुलाता था। जिलेसिंह पगड़ी सँभालते हुए बाहर आया। दो राइफलधारी सतपाल के दरवाजे के सामने खड़े थे। जिलेसिंह ने टोका– ''तुम यहाँ क्या कर रहे हो? यहाँ से जाओ।''

''ओए खोत्ते दे पुत्तर, भग जा। नहीं तो पण्डत को मारणे वाली गोली तेरे भीतर उतार देणी है।'' यह बात सुनकर सतपाल का तो खून ही सूख गया।

एक ने दरवाजे पर लात मारी– ''अबे दरवज्जा खोल।''

जिलेसिंह चीते जैसी फुर्ती से उसके सामने आ गया– ''दरवज्जा नहीं खुलेगा।''

''लै मुर्गी दे बच्चे...'' दूसरे ने दनादन गोलियाँ बरसा दीं। एक भयानक चीख के साथ जिलेसिंह सतपाल के दरवाजे के सामने ढेर हो गया। हत्यारे स्कूटर पर बैठकर फरार हो गए।

सतपाल बाहर आया। उसकी आँखें विस्फारित रह गईं– ''झल्ले तू।''

04. व्यवस्था

''झटपट दूसरे डिब्बे में चले जाओ। जल्दी करो।'' टी.सी. दहाड़ा।

''साहब बाल–बच्चे साथ में हैं, गर्मी से हलकान है। जनरल डिब्बे में बहुत भीड़ है।''

''इसमें मैं क्या करूँ? जल्दी कीजिए वरना सामान बाहर फेंक दूँगा।''

कुछ आँखें आपस में मिलीं, हाथ जेब तक पहुँचे। पुलिस का एक सिपाही भी रात की ड्यूटी पर आ धमका। वह भीड़ को चीरता हुआ टी.सी. तक आया– ''यह क्या बदतमीज़ी है। सब सिर पर चढ़ आ रहे हैं। देख लीजिए– रिजर्वेशन किस–किस का है?''

इसी बीच में अस्सी रुपये टी.सी. तक पहुँच गए। उसने बीस रुपये सिपाही के

हाथ पर रखे। कोने की सीट पर बैठकर ऊँघने लगा। इतने में एक यात्री झगड़ पड़ा– ''मेरे पास रिजर्वेशन का टिकट है। यह मेरी सीट है। इसे खाली करो।''

दूसरा यात्री टस से मस नहीं हुआ।

''झगड़ा करेगा तो अभी चार डंडे लगाऊँगा और नीचे उतार दूँगा। रिजर्वेशन क्या कराया, बाप की गाड़ी हो गई।'' सिपाही ने डाँटा।

यात्री सिमटकर एक कोने में बैठ गया। बर्थ पर लेटे हुए चेहरे मुस्करा दिए।

05. गंगा–स्नान

दो जवान बेटे मर गए। दस साल पहले पति भी चल बसे। दौलत के नाम पर बची एक सिलाई मशीन। सत्तर साला बूढ़ी पारो गाँव भर के कपड़े सिलती रहती। बदले में कोई चावल दे जाता, तो कोई गेहूँ या बाजरा। सिलाई करते समय उसकी कमजोर गर्दन डमरू की तरह हिलती रहती। दरवाजे के सामने से जो भी निकलता वह उसे ''राम–राम'' कहना न भूलती।

दया दिखाने वालों से उसे हमेशा चिढ़ रहती। छोटे–छोटे बच्चे दरवाजे पर आकर ऊधम मचाते; लेकिन पारो उनको कभी बुरा–भला न कहकर उल्टे खुश होती। प्रधान जी कन्या पाठशाला के लिए चन्दा इकट्ठा करने निकले तो पारो के घर की हालत देखकर पिघल गए– ''क्यों दादी, तुम हाँ कह दो तो तुम्हें बुढ़ापा–पेंशन दिलवाने की कोशिश करूँ।''

पारो घायल–सी होकर बोली– ''भगवान ने दो हाथ दिए हैं। मेरी मशीन आधा पेट रोटी दे ही देती है। मैं किसी के आगे हाथ क्यों फैलाऊँगी। क्या तुम यही कहने आये थे?''

''मैं तो कन्या पाठशाला बनवाने के लिए चन्दा लेने आया था। पर तेरी हालत देखकर... ।''

''तू कन्या पाठशाला बनवाएगा?'' पारो के झुर्रियों भरे चेहरे पर सुबह की धूप–सी खिल गई।

''हाँ, एक दिन जरूर बनवाऊँगा दादी। बस तेरा असीस चाहिए।''

पारों घुटनों पर हाथ टेककर उठी। ताक पर रखी जंगखाई संदूकची उठा लाई। काफी देर उलट–पुलट करने पर बटुआ निकाला।

उसमें से तीन सौ रुपये निकालकर प्रधान जी की हथेली पर रख दिए– ''बेटे, सोचा था मरने से पहले गंगा नहाने जाऊँगी। उसी के लिए जोड़कर ये पैसे रखे थे।''

''तब ये रुपये मुझे क्यों दे रही हो? गंगा नहाने नहीं जाओगी?''

''बेटे, तुम पाठशाला बनवाओ। इससे बड़ा गंगा–स्नान और क्या होगा।'' –कहकर पारो फिर कपड़े सीने में जुट गई।

06. शाप

''जब से तनख्वाह ज्यादा मिलने लगी है, इन मास्टरों के दिमाग भी आसमान पर चढ़ गए हैं। हमारा बिल्लू दो नम्बरों से फेल हो गया। हम मास्टर को दो हजार रुपये देने के लिए तैयार थे। बिल्लू के पापा जेब में नोट रखे चक्कर काटते रहे। मास्टर ऐसा निगोड़ा निकला कि माना ही नहीं।'' बिल्लू की माँ अपनी सहेली चम्पा

को बता रही थी।

''घूस हर आदमी नहीं लेता।'' चम्पा बोली।

''मैं तो भगवान से मनाती हूँ कि ऐसे कलमुँहे एक–एक पैसे के लिए तरसें। भीख भी न दे कोई इन्हें।'' बबलू की माँ फुफकार उठी।

07. महात्मा और डाकू

एक महात्मा जी और एक डाकू को चित्रगुप्त के सामने पेश किया गया। चित्रगुप्त ने अपना बहीखाता खोला। गंभीर स्वर में बोले– ''महात्मा जी, आपने अपने जीवन में तीन–चौथाई पुण्य किए हैं और एक–चौथाई पाप। कौन–सा भोग आपको पहले चाहिए?''

महात्मा जी संयत स्वर में बोले– ''पापों का फल पहले भोग लूँ। उसके बाद तो स्वर्ग का आनंद प्राप्त होगा ही।''

चित्रगुप्त ने डाकू की ओर संकेत किया– ''अब तुम बतलाओ। तुमने तीन–चौथाई पाप किए हैं और एक–चौथाई पुण्य।''

डाकू चुप रहा।

महात्मा जी मुस्कुराए।

''कहिए, तुम्हें पहले क्या चाहिए?'' चित्रगुप्त ने टोका।

''नरक–यातना तो भोगनी ही है। पहले स्वर्ग का आनंद क्यों न उठा लूँ।''

''ठीक है। यमराज जी से अंतिम स्वीकृति लेकर व्यवस्था करा देता हूँ।''

डाकू ने प्रसन्नता प्रकट की और बढ़कर चित्रगुप्त जी से खुसर–पुसर की।

तत्पश्चात महात्मा जी को नरक के यातना केंद्र पर भेज दिया गया और डाकू को स्वर्ग में। आज तक दोनों नरक तथा स्वर्ग भोग रहे हैं।

08. दूसरा सरोवर

एक गाँव था। उसी के पास में था स्वच्छ जल का एक सरोवर। गाँव वाले उसी सरोवर का पानी पीते थे। किसी को कोई कष्ट नहीं था। सब खुशहाल थे।

एक बार उजले–उजले कपड़े पहनकर एक आदमी गाँव में आया। उसने सब लोगों को मुखिया की चौपाल में इकट्ठा करके बहुत अच्छा भाषण दिया। उसने कहा– ''सरोवर आपके गाँव में एक मील की दूरी पर है। आप लोगों को पानी लाने के लिए बहुत दिक्कत होती है। मैं जादू के बल पर सरोवर को आपके गाँव के बीच में ला सकता हूँ। जिसे विश्वास न हो वह मेरी परीक्षा ले सकता है। मैं चमत्कार के बल पर अपना रूप–परिवर्तन कर सकता हूँ। गाँव के मुखिया मेरे साथ चलें। मेरा चमत्कारी डंडा इनके पास रहेगा। मैं सरोवर में उतरूँगा। ये मेरे चमत्कारी डण्डे को जैसे ही ज़मीन पर पटकेंगे, मैं मगरमच्छ का रूप धारण कर लूँगा। उसके बाद फिर डण्डे को ज़मीन पर पटकेंगे, मैं फिर आदमी का रूप धारण कर लूँगा।''

लोग उसकी बात मान गए। उजले कपड़े किनारे पर रखकर वह पानी में उतरा। मुखिया ने चमत्कारी डण्डा ज़मीन पर पटका। वह आदमी खौफनाक मगरमच्छ बनकर किनारे की ओर बढ़ा। डर से मुखिया के प्राण सूख गए। हिम्मत जुटाकर उसने फिर डण्डा ज़मीन पर पटका। मगरमच्छ पर इसका कोई असर नहीं हुआ। नुकीले

जबड़े फैलाए काँटेदार पूँछ फटकारते हुए मगरमच्छ, मुखिया की तरफ बढ़ा। मुखिया सिर पर पैर रखकर भागा। डण्डा भी उसके हाथ से गिर गया।

अब उस सरोवर पर कोई नहीं जाता। उजले कपड़े आज तक किनारे पर पड़े हैं। गाँव वाले चार मील दूर दूसरे सरोवर पर जाने लगे हैं।

आज वह मगरमच्छ जगह–जगह नंगा घूम रहा है।

09. जाला

नीलांजना का बुखार था कि छूटने का नाम नहीं ले रहा था। खाँसी का दौरा पड़ता तो साँस जैसे रुक जाती। ऐसे कष्ट से बेहतर है कि मौत आ जाए। क्या सुख मिला है इस घर में? रात–दिन बाँदी की तरह खटो फिर भी ज़रा–सा सुख नहीं। पति समीर को काम से ही फुर्सत नहीं, दो घड़ी पास में बैठकर बात तो क्या करेंगे? आज सुबह से ही गायब हैं।

बुखार और तेज हो गया है। रह–रहकर उसका जी रोने को चाह रहा है। आँखें मुँदी जा रही हैं। सब कुछ धुँधला नज़र आ रहा है। वह जैसे एक ऊँचे पहाड़ से नीचे लुढ़क गई है। उसकी चीख निकल गई। वह घिघियाई... ''मैं नहीं बचूँगी।''

उसके माथे पर कोई ठण्डे पानी की पट्टी रख रहा है। वह सुबक रही है। किसी ने रूमाल से उसकी आँखें पोंछ दी हैं। कुछ उँगलियाँ उसके बालों को सहला रही हैं। उसे अजीब–सा सुकून मिल रहा है। वह सहलाने वाली उँगलियों को दोनों हाथों से दबोच लेती है।

जब उसकी आँख खुली– दो कोमल हाथ उसका माथा सहला रहे थे। उसकी दृष्टि सामने दीवार पर लगी घड़ी पर पड़ी, साफ दिख रहा है... बारह बज गए, रात के बारह!

उसने गर्दन घुमाई। सिरहाने समीर बैठा है। घोर उदासी चेहरे पर पुती है। आज तक उसको इतना उदास कभी नहीं देखा।

''अब कैसी हो नीलांजना?'' उसने भर्राई आवाज़ में पूछा।

''मैं ठीक हूँ समीर। तुम पास में हो तो मुझे कुछ नहीं हो सकता...'' नीलांजना के होठों पर मुस्कान बिखर गई।

10. आँख का तिल

कमला हाथ नचा–नचाकर अपनी बहू उमा को तानों से छीलने पर तुली थी– ''बाप के घर से पोटली बगल में दबाकर चली आई। कंगाल के घर से भी कोई इस तरह नहीं आता। दहेज नहीं लाएगी तो तुझे यहाँ एक घड़ी भी नहीं टिकने दूँगी। तूने समझ क्या रखा है।''

उमा बुत की तरह खड़ी थी– भावहीन, होंठ सिले हुए। शर्मा जी भीतर तक दहल गए। उसे इस तरह चुपचाप देखकर वे कमला के पास आकर ठिठके। वह फिर बके जा रही थी। शर्मा जी ने दृढ़ स्वर में कहा– ''इधर सुनो, तुम भी दहेज नहीं लाई थीं। फिर भी मेरे साथ पच्चीस साल से सम्मानपूर्वक इस घर में रह रही हो। उमा भी बिना दहेज लाए इस घर में पच्चीस वर्ष तो रह ही सकती है।''

कमला का चेहरा फक हो गया। फिर उससे कुछ भी बोलते ना बना।

11. नई सीख

भेड़िया आदमी के एक छोटे बच्चे को उठाकर गाँव से बाहर निकला। कई कुत्ते भौंकते–भौंकते उसके पीछे दौड़ पड़े। अपने को चारों तरफ से घिरा हुआ देखकर भेड़िया बोला– ''तुम मुझे क्यों रोक रहे हो?''

''तुम्हारी धूर्त्तता की भी हद हो गई'', उनमें से बूढ़ा कुत्ता बोला– ''सबके सामने बच्चे को उठाए ले जा रहे हो और पूछते हो क्यों रोक रहे हो?''

''बाबा, इस जमाने में मेरी धूर्त्तता नहीं चल पाती। मुझे और अधिक धूर्त्तता सीखनी पड़ेगी। इसलिए आदमी के बच्चे को उठा के ले जा रहा हूँ।'' भेड़िए ने उत्तर दिया।

12. अपने–अपने सन्दर्भ

इस भयंकर ठंड में भी वेद बाबू दूध वाले के यहाँ मुझसे पहले बैठे मिले। मंकी कैप से झाँकते उनके चेहरे पर हर दिन की तरह धूप–सी मुस्कान बिखरी थी।

लौटते समय वेदबाबू को सीने में दर्द महसूस होने लगा। वे मेरे कंधे पर हाथ मारकर बोले– ''जानते हो, यह कैसा दर्द है?'' मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना मद्धिम स्वर में बोले– ''यह दर्दे–दिल है। यह दर्द या तो मुझ जैसे बूढ़ों को होता है या तुम जैसे जवानों को।''

मैं मुस्करा दिया।

धीरे–धीरे उनका दर्द बढ़ने लगा।

''मैं आपको घर तक पहुँचा देता हूँ।'' मोड़ पर पहुँचकर मैंने आग्रह किया– ''आज आपकी तबियत ठीक नहीं लग रही है।''

''तुम क्यों तकलीफ करते हो? मैं चला जाऊँगा। मेरे साथ तुम कहाँ तक चलोगे? अपने वारण्ट पर चित्रगुप्त के साइन होने भर की देर है।'' वेद बाबू ने हँसकर मुझको रोकना चाहा।

मेरा हाथ पकड़कर आते हुए वेदबाबू को देखकर उनकी पत्नी चौंकी– ''लगता है आपकी तबियत और अधिक बिगड़ गई है? मैंने दूध लाने के लिए रोका था न?''

''मुझे कुछ नहीं हुआ। यह वर्मा जिद कर बैठा कि बच्चों की तरह मेरा हाथ पकड़कर चलो। मैंने इनकी बात मान ली।'' वे हँसे।

उनकी पत्नी ने आगे बढ़कर उन्हें ईज़ी चेयर पर बिठा दिया। दवाई देते हुए आहत स्वर मे कहा– ''रात–रात भर बेटों के बारे में सोचते रहते हो। जब कोई बेटा हमको पास ही नहीं रखना चाहता तो हम क्या करें। जान दे दें ऐसी औलाद के लिए। कहते हैं– ''मकान छोटा है। आप लोगों को दिक्कत होगी। दिल्ली में ढंग के मकान बिना मोटी रकम दिए किराए पर मिलते ही नहीं।''

वेदबाबू ने चुप रहने का संकेत किया– ''उन्हें क्यों दोष देती हो भागवान! थोड़ी–सी साँसें रह गई हैं, किसी तरह पूरी हो ही जाएँगी।'' कहते–कहते हठात् दो आँसू उनकी बरौनियों में आकर उलझ गए।

13. टुकड़खोर

अभय खा–पीकर कमर सीधी करने के लिए लेटा ही था कि घर के कोने पर एक कुत्ता ज़ोर–ज़ोर से भौंकने लगा। उसने खिड़की से उस पर कंकड़ दे मारा। चोट

खाकर कूँ–कूँ करता हुआ कुत्ता वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

कुछ क्षण बाद वह चादर ओढ़कर लेटा ही था कि कुत्ते की आवाज और तेज हो गई। लगा, जैसे वह उसके सिर पर ही भौंक रहा है। वह भुनभुनाया, ''दफ्तर में साहब चैन नहीं लेने देते। रात के नौ बजे जाकर पिंड छोड़ा, वह भी सुबह जल्दी आने की मीठी हिदायत के साथ। आज दिन–भर फाइलों में आँखें टाँकनी पड़ीं। उल्टे–सीधे काम करें साहब, सब शिकायतों के जवाब तैयार करे वह। टरकाते भी नहीं बनता। न जाने साहब का माथा कब गरम हो जाए? कब उसे रूखी–सूखी सीट पर पटक दें? इस दफ़्तर में क्लर्की करना कुत्ता घसीटी से भी बदतर है। हरदम जी–जी कहते हुए मुँह सूख जाता है। मेडिकल क्लेम में अडंगे लगने का खटका न होता तो मज़ा चखा देता खूसट को।''

भौंकने की आवाज रात के गहराते सन्नाटे को चाकू की तरह चीरने लगी। वह झुंझलाकर उठा– ''हरामजादे, तेरी खबर लेनी पड़ेगी।''

उसने दरवाजा खोला। दरवाजा खोलने की आवाज़ सुनकर कुत्ता भौंकते–भौंकते बेहाल हो उठा। डण्डा उठाने लगा तो पत्नी ने टोका, ''आज क्या हो गया है आपको? अगर यह कुत्ता रात–भर भौंकता रहा तो आप रात–भर डण्डा लेकर इसके पीछे दौड़ते रहेंगे क्या?''

''बिना डण्डा खाए यह चुप होने वाला नहीं।'' वह झल्लाया।

''आप रुकिए।'' कहकर पत्नी उठी और कटोरदान से एक रोटी निकाल लाई। अतू–अतू की आवाज़ लगाकर पत्नी ने रोटी गली में फेंक दी।

कुत्ते ने लपककर रोटी उठाई। एक बार पीछे मुड़कर देखा और तीर की तरह दूसरी गली में तेज़ी से मुड़ गया।

14. स्त्री–पुरुष

आज नीलम ने कक्षा से बाहर आकर कुछ पूछने का प्रयास किया। मैंने उसे उपेक्षा से टरका दिया। मुझे उसका रिक्शावाले से घुल–मिलकर बतियाना बुरी तरह अखर गया। मैं उसके पास से ही निकला था पर ऐसा क्या कि उसे पता ही नहीं चला।

न चाहकर भी मैंने उसे टोक दिया– ''नीलम, मैं तुम्हें एक अच्छी लड़की समझता हूँ। किसी रिक्शावाले से इतना घुल–मिल जाना ठीक नहीं है।''

वह कुछ उत्तर न देकर फफक–फफककर रो पड़ी। उसका रोना और भी बुरा लगा। जवान लड़की, कहीं कुछ गलत न कर बैठे, वह आशंका मेरे मन में बार–बार फन उठा रही थी।

वह भरी आँखों से बोली– ''ठीक है सर, अब मैं कभी आपसे कुछ नहीं पूछूँगी।''

मुझे लगा– जैसे वह मेरी उपेक्षा करने के लिए कमर कसकर तैयार हो गई है।

''मेरी बला से!'' मैंने क्रुद्ध होकर कहा।

मैं छुट्टी के बाद घर के लिए लौट रहा था। स्कूल गेट के बाहर जमा भीड़ देखकर ठिठक गया। नीलम के रिक्शावाले के सिर से खून बह रहा था और वह अपने दुपट्टे का छोर फाड़कर पट्टी बाँध रही थी।

''क्या हुआ नीलम?'' अनायास मेरे मुँह से निकल गया।

''एक स्कूटर वाला पिताजी को टक्कर मारकर भाग गया।''

15. कटे हुए पंख

एक निरंकुश बादशाह को मरते समय उसके बाप ने कहा था– ''बेटा प्रजा शेर होती है। बादशाह की कुशलता इसी में है कि शेर पर सवार रहे। नीचे उतरने का मतलब है मौत। इसलिए यह ध्यान रखना कि लोग गुलामी के आगे कुछ न सोच सकें। जनता में जो सरदार प्रसिद्ध हो जाए उसे रास्ते का काँटा समझकर हटा देना।'' बेटे ने बाप की शिक्षा का पालन किया और सबसे पहले बूढ़े वजीर को हवालात में बंद कर दिया। बूढ़ा वजीर आज तक सारे शासन का सूत्रधार था।

इसी बीच कहीं से उड़ता हुआ एक तोता राज्य में आ पहुँचा। उसने चारों दिशाओं में उड़कर कहना शुरू कर दिया– ''गुलाम रहना सबसे बड़ी कायरता है। चुप रहकर सहना सबसे बड़ा पाप है।''

प्रजा में खुसुर–पुसुर शुरू हो गई। तोते की वाणी को देववाणी समझकर लोग एकजुट होने लगे। बादशाह को भी सुराग मिल गया। उसने तोते को पकड़वाकर पिंजरे में बंद करवा दिया।

क्रुद्ध जनता ने तोते को मुक्त कराने की आवाज उठाई तो बादशाह ने वाहवाही लूटने के लिए उसे पिंजरे से मुक्त कर दिया। तोता उड़कर दूर के वृक्ष पर जा बैठता, इसके पूर्व ही प्रजा बादशाह की दरियादिली का बखान करती हुई लौट आई।

परन्तु तोता उड़ न सका। वह धीरे से पिंजरे के पास बैठ गया था; क्योंकि उसके पंख मुक्त होने से पहले ही काट दिए गए थे।

16. अच्छे पड़ोसी

हरिया का साल–भर का लड़का अचानक बीमार हो गया। उसकी पत्नी इन्द्रो भी परेशान हो उठी। बच्चे के तुतलाते हुए स्वर ने और परेशान कर दिया– ''माँ दलद'' –बच्चे ने अपनी छाती पर हाथ रखकर इशारा किया।

रात के ग्यारह बजे होंगे। ठंडी हवा चाकू की तरह चीर रही थी। सारा गाँव गहरी नींद में सोया था। इस गाँव में कोई वैद्य–हकीम भी नहीं है। हरिया क्या करे? उसका स्वभाव इतना रूखा है कि किसी से सीधे मुँह बात तक नहीं करता। इन्द्रो भी उससे उन्नीस नहीं है। गली–मोहल्ले में रोज़–रोज़ गुलगुपाड़ा मचाती रहती है। यही कारण है कि कोई उसके मुँह नहीं लगना चाहती।

दर्द के मारे लड़का रोने लगा। रुलाई सुनकर पार्वती चाची आँगन में आ गई। उसने इन्द्रो को आवाज लगाई– ''क्या बात है बहू? लल्ला क्यों रो रहा है?''

इन्द्रो चौंकी– पार्वती चाची के साथ आज ही तो छोटी–सी बात पर लड़ाई की थी। बहुत बुरा–भला भी कहा था। वह बोली– ''साँझ हल्का–सा बुखार था, अब तेज हो गया है।''

''तुम लोगों को बच्चों की फिकर कहाँ रहती है!'' चाची ने एक मीठी झिड़की दी। इन्द्रो ने प्रतिवाद नहीं किया।

आवाज़ सुनकर अमरनाथ चाचा भी आ गए। हरिया से बोले– ''सुनो हरिया, मैं वैदजी के गाँव जा रहा हूँ। दवाई लेकर फौरन आता हूँ।''

''इतनी ठंड में कहाँ जाओगे चाचा? रास्ता भी ठीक नहीं है। रोज़–रोज़ राहज़नी होती

रहती है। बिना पैसा लिए वैदजी दवाई नहीं देंगे। और मेरे पास फूटी कौड़ी...''

''वो सब मैं देख लूँगा''– चाचा ने बात काटी– ''तुझे क्या फिकर है! इस चाचा के पास तो पैसा है। आखिर किस दिन काम आएगा?'' कहकर चाचा चले गए।

17. परख

कजरी को बेचने के बाद त्रिलोचन अपनी उदासी नहीं छुपा सका था। सूना खूँटा देखकर राधा भी कुरलाती रह गई; परंतु बापू के सामने कुछ कहने की हिम्मत न जुटा पाई थी।

शाम होते ही कजरी रस्सा तुड़ाकर किसना के यहाँ से भाग आई। त्रिलोक को देखकर कजरी ने थूथन ऊँची करके रँभाना शुरू कर दिया। त्रिलोक ने पास आकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा तो वह आश्वस्त होकर कूँड के पास बिखरी सूखी घास को सपड़–सपड़ खाने लगी।

सहकारी समिति का कर्ज़ा चुकाने का नोटिस न मिला होता तो वह कजरी को कदापि न बेचता। और अब... कजरी लौट आई है। पैसे लौटाने पड़ेंगे। कर्ज चुकाने के लिए कोई दूसरा तरीका ढूँढ़ना पड़ेगा।

तभी किसना भी पीछे–पीछे आ पहुँचा– ''भाई त्रिलोक, तुम्हारी गाय को काबू में रखना मेरे बस का नहीं। सुबह से हरी बरसीम इसके आगे पड़ी रही; पर इसने मुँह तक नहीं मारा।''

''आदमी ही नहीं, जानवर भी प्यार का भूखा होता है किसना। तुम क्या समझोगे– मैंने कजरी को कैसे पाला है? अपनी बच्ची की तरह पाला है।'' त्रिलोक ने अण्टी से पैसे निकालकर देते हुए कहा– ''अपने रुपए गिन लो।''

किसना ने जेब में रुपए रखते हुए बात बढ़ाई– ''सुबह तुम राधा बिटिया के रिश्ते के लिए कह रहे थे न? मैंने अपने बेटे से पूछ लिया है। वह तैयार हो गया है।''

''पर मैं तैयार नहीं हूँ इस रिश्ते के लिए।''

किसना भौचक्का रह गया– ''लेकिन सुबह तुमने ही तो कहा था बात चलाने के लिए।''

''सुबह की बात और थी।'' त्रिलोक बोला। उसकी दृष्टि कजरी की ओर उठी। राधा भी न जाने कब चुपचाप आकर गाय की गर्दन सहलाने लगी थी। दोनों की आँखों में उसे एक ही जैसी तरलता नज़र आई। फिर आँखों के आगे दोनों चेहरे गड्ड–मड्ड होकर एक ही जैसे लगने लगे।

''फिर सोच लो!'' किसना बोला।

''अच्छी तरह सोच लिया है।''

कजरी ने तब तक अपनी झाग भरी थूथन त्रिलोक के कंधे पर टिका दी थी।

18. असभ्य नगर

जंगली कबूतर जब बरगद की डाल छोड़कर शहर में निवास करने के लिए जाने लगा, तब उल्लू से नहीं रहा गया। उसने टोका– ''जंगल छोड़कर क्यों जा रहे हो?''

''मैं बेरहम और बेवकूफ लोगों के बीच और नहीं रह सकता। तंग आ गया हूँ

मैं सबसे।'' कबूतर गुस्से से बोला।

''कहीं शेर हिरन पर झपट रहा है, कहीं भेड़िया खरगोश के प्राण लेने पर तुला है। कितने क्रूर एवं असभ्य हैं सब! उल्लू को सारी दुनिया बेवकूफ मानती है।''

''शहर में भी तुम्हें इनकी कमी नहीं अखरेगी।'' उल्लू हँसा। कबूतर सुनकर झुँझलाया और शहर की तरफ उड़ गया।

दो दिन बाद वही कबूतर उसी बरगद की डाल पर गर्दन झुकाए उदास बैठा था। उल्लू पास खिसक आया– ''शहर में मन नहीं लगा क्या?''

लज्जित–सा होकर कबूतर बोला– ''मेरा भ्रम टूट गया। शहर में आदमी को आदमी जब चाहता है, कत्ल कर देता है। रोज के अखबार हत्या, बलात्कार, लूटपाट, आगजनी के समाचारों से भरे रहते हैं। आदमी तो जानवर से भी ज़्यादा जंगली और असभ्य है।''

उल्लू ने कबूतर को पुचकारा– ''मेरे भाई, जंगल हमेशा नगरों से अधिक सभ्य रहे हैं। तभी तो ऋषि–मुनि यहाँ आकर तपस्या करते थे।''

19. धारणा

मैं इस शहर में बिल्कुल अनजान था। काफी भाग–दौड़ करके किसी तरह पासी मुहल्ले में एक मकान खोज सका था। परसों ही परिवार शिफ्ट किया था। बातों ही बातो में ऑफिस में पता चल गया कि मैं अपना परिवार पासी मुहल्ले में शिफ्ट कर चुका हूँ। बड़े साहब चौंके– ''आप सपरिवार इस मुहल्ले में रह पाएँगे?''

''क्या कुछ गड़बड़ हो गई सर?'' मैंने हैरान होकर पूछा।

''बहुत गन्दा मुहल्ला है। यहाँ आए दिन कुछ न कुछ लफड़ा होता रहता है। सँभलकर रहना होगा।'' साहब के माथे पर चिन्ता की रेखाएँ उभरी– ''यह मुहल्ला गंदे मुहल्ले के नाम से बदनाम है। गुण्डागर्दी कुछ ज़्यादा ही है यहाँ।''

मैं अपनी सीट पर आकर बैठा ही था कि बड़े बाबू आ पहुँचे– ''सर आपने मकान गंदे मुहल्ले में लिया है?''

''लगता है मैंने ठीक नहीं किया है।'' मैं पछतावे के स्वर में बोला।

''हाँ सर, ठीक नहीं किया। यह मुहल्ला रहने लायक नहीं है। जितना जल्दी हो सके, मकान बदल लीजिए।'' उन्होंने अपनी अनुभवी आँखें मुझ पर टिका दीं।

इस मुहल्ले में आने के कारण मैं चिन्तित हो उठा। घर के सामने पान–टॉफी बेचने वाले खोखे पर नज़र गई। खोखे वाला काला–कलूटा मुछन्दर एक दम छँटा हुआ गुण्डा नजर आया। कचर–कचर पान चबाते हुए वह और भी वीभत्स लग रहा था।

सचमुच मैं गलत जगह पर आ गया हूँ! मुझे रात भर ठीक से नींद नहीं आई। छत पर किसी के कूदने की आवाज़ आई। मेरे प्राण नखों में समा गए। मैं डरते–डरते उठा। दबे पाँव बाहर आया। दिल जोरों से धड़क रहा था। मुण्डेर पर नज़र गई। वहाँ एक बिल्ली बैठी थी।

आज दोपहर में बाज़ार से आकर लेटा ही था कि आँख लग गई। कुछ ही देर बाद दरवाजे पर थपथपाहट हुई। दरवाज़ा खुला हुआ था। मैं हड़बड़ाकर उठा।

सामने वही पान वाला मुछन्दर खड़ा मुस्करा रहा था। दोपहर का सन्नाटा। मुझे काटो तो खून नहीं।

''क्या बात है?'' मैंने पूछा।

''शायद आपका ही बच्चा होगा। टॉफी लेने के लिए आया था मेरे पास। उसने यह नोट मुझको दिया था।'' कहते हुए पान वाले ने सौ का नोट मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं चौंका! यह सौ का नोट मेरी कमीज की जेब में था। देखा– जेब खाली थी। लगता है सोनू ने मेरी जेब से चुपचाप यह नोट निकाल लिया था।

''टॉफी के कितने पैसे हुए?''

''सिर्फ़ पचास पैसे। फिर कभी ले लेंगे।'' वह कचर–कचर पान चबाते हुए मुस्कराया। दूधिया मुस्कान से उसका चेहरा नहा उठा– ''अच्छा, बाबू साहब, प्रणाम!'' कहकर वह लौट पड़ा।

मैं स्वयं को इस समय बहुत हल्का महसूस कर रहा था।

20. चक्र

मोना को सुबह ही सुबह खेलते देखकर महेश ने पत्नी को कनखियों से इशारा किया, ''देखो, मोना को रात भी कितना समझाया था कि सोने का वक्त हो गया है। खेल बंद करके होमवर्क पूरा कर लो। अब फिर सुबह ही सुबह...'' वह क्रोध से होंठ चबाता हुआ दूसरे कमरे में चला गया। सहमा हुआ मोना नल पर जाकर ब्रश करने लगा।

आठ बज गए। स्कूल जाने में सिर्फ़ आधा घंटा है। महेश की नज़रें मोना को तलाश रही थीं। उड़ती–सी नज़र बरामदे की ओर चली गई। पत्नी रसोईघर में व्यस्त थी। मोना दीवार के किनारे इमली के बीज फैलाकर निशाना साध रहा था। महेश इस बार संयम खो बैठा। उसने लपककर मोना को पकड़ लिया। एक के बाद एक थप्पड़ पड़ने लगे। उस पर जैसे पागलपन सवार हो गया था। उसने मोना को लाकर पलंग पर पटक दिया। एक चीख के साथ वह उछलकर खड़ा हो गया। पत्नी रसोईघर से दौड़कर आई। उसने पत्नी को एक तरफ धकेल दिया।

''मत मारो पापा...'' उसने हाथ जोड़ दिए। डर के मारे पेशाब निकल जाने से उसकी पैण्ट गीली हो गई। सुबकियों के साथ उसका पूरा शरीर पत्ते की तरह काँप रहा था। महेश चीखा, ''तुमको रात भी समझाया फिर भी तुम बात क्यों नहीं मानते?'' और थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया। पत्नी ने हाथ पकड़ लिया, ''अब जाने भी दो या जान ही लोगे इसकी।''

दफ्तर पहुँचने पर उसका मन और व्याकुल हो गया। जब काम में मन नहीं लगा तो वह छुट्टी लेकर घर लौट आया।

मोना को बुखार चढ़ गया था। पत्नी सिरहाने बैठी थी। मोना ने धीरे से आँखें खोलीं। ''पापा!'' कहकर फिर आँखें मूँद लीं।

''मैंने आज अपने बेटे को बहुत पीटा है न?'' महेश ने मोना के बालों में उँगलियाँ चलाते हुए कहा।

''मैंने भी तो आपकी बात नहीं मानी?'' मोना ने अपना हाथ पिता की गोद में रख दिया।

दोनों की आँखें भीग चुकी थीं। ■■

रा. का. हिमांशु जी : 1974 का एक भाव चित्र

खेमकरण 'सोमन'

ये ज़मीन मेरी है

''ये ज़मीन सिर्फ मेरी है!'' बड़े भाई ने अपनी छाती फुलाकर गर्वीली मुस्कान से कहा तो ऐसा लगा कि उसकी बात सुनकर ज़मीन ने भी बुरा–सा मुँह बना दिया हो।

तब तक छोटा भाई भी आ गया था। उसे सुनाते हुए बड़े भाई ने फिर कहा, ''ये ज़मीन सिर्फ मेरी है! सिर्फ मेरी!''

बड़े भाई की बात सुनकर छोटा भाई बोला, ''नहीं भइया! ये ज़मीन सिर्फ़ आपकी नहीं बल्कि मेरी भी है!''

इस प्रकार उनकी बातें आगे बढ़कर लड़ाई–झगड़े में तब्दील हो गई। फिर तीर, तलवार और धारदार हथियार भी निकल पड़े। अंततः दोनों भाइयों ने एक–दूसरे को काट–मारकर यहाँ–वहाँ फेंक दिया।

उसी जमीन को लेकर आज तक हजारों भाई एक–दूसरे को काटकर फेंक चुके हैं और जमीन... जमीन है कि आज भी उसी तरह पड़ी हुई है।

■ द्वारा श्री बुलकी साहनी, प्रथम कुंज, अम्बिका विहार, ग्राम व पो. भूरारानी, रुद्रपुर, जिला उधम सिंह नगर, उ.खंड–263153 / मो. 090450 22156

विभा रश्मि

ब्रेकअप

शाम को सब कबीर के रूम पर जा रहे थे।

''क्यों जाना है उसके घर?''

''माँ ज़रूरी है जाना। उसे अकेला नहीं छोड़ना है।''

''क्यों बीमार है क्या?''

''नहीं माँ, उसकी सहेली थी न आपको बतलाया था...।''

''हाँ! वो तो उसकी चार साल से दोस्त थी, शायद फ़र्स्ट ईयर से।''

''हाँ, आप जब पिछली बार आयीं थीं मैंने आपसे शेयर किया था। उस लड़की से भी मिलवाया था।''

''हाँ माँ, आज उसने ब्रेकअप कर लिया।''

''क्या? ऐसे नहीं हो सकता। ग़लत बात की है।''

''माँ चार साल तक इस्तेमाल किया उसकी इंटेलिजेंस को, उसके टेलेंट को। सारी पढ़ाई–लिखाई, प्रोजेक्ट पूछ–पूछकर बनाये।''

''अब फ़ाइनल इयर के एग्ज़ाम शेष होते ही उसे ज़ोरदार झटका दिया।''

''उस बेचारे की तो दुनिया ही लुट गयी अम्मा। वो तो सीरियस था रिलेशनशिप में।''

''वो कुछ कर तो नहीं बैठेगा बेटा?'' माँ का चिन्तित स्वर।

''नहीं अम्मा, डरो मत। हम सब जा रहे हैं न उसे सँभालने। अब सब छोटे थोड़ी हैं, मेच्योर्ड हैं।''

बेटी और उसके सभी दोस्तों का दल, खाने–पीने के पैकेटों के साथ, अपने साथी के यहाँ उसका ग़म ग़लत करने चल पड़ा था।

माँ खिड़की के शीशे से उन्हें जाते हुए देखती रही। मन उनका भी उदास था। फिर ये सब लोग कबीर के साथ चार साल से पढ़ रहे थे। दोस्त के दुःख में शरीक होने जा रहे युवा, 'जश्न मनाकर' उसका दुःख भुलाने में मदद करेंगे।

मन कहीं संतुष्ट भी था, युवाओं के नये ज़माने के इस फ़ैशनेबल ब्रेकअप से। ऐसे ब्रेकअप का जश्न अगर हमारे ज़माने में होता, तो विरह के हजारों गाने न तो लिखे जाते और न गाये ही जाते।

■ एस–1/303, लाइफस्टाइल होम्स, होम्स एवेन्यू, वाटिका इण्डिया नेक्स्ट, सेक्टर 83, गुरुग्राम–122012, हरि./मो. 08826765717

मालती बसंत

विज्ञान और प्रकृति

एक दिन विज्ञान और प्रकृति में झगड़ा हो ही गया। बेचारी प्रकृति, विज्ञान के नये प्रयोगों से दुखी थी। वह कह रही थी, ''सन् 1960 में, तुमने रेडियो के माध्यम से मेरे पुत्र मनुष्य के कानों पर कब्जा कर लिया। मैं चुप रही। मैं समझती रही तुम मधुर स्वर लहरियों के माध्यम से मनुष्य का मनोरंजन कर रहे हो। उसे शांति प्रदान कर रहे हो। शुरू में तुमने मधुर संगीत अवश्य सुनाया, पर बाद में कानफोडू संगीत से मनुष्य के कान खराब करना शुरू कर दिया।

सन् 1980 में तुमने टीवी के माध्यम से मेरे पुत्र मनुष्य की आँखों पर जोर डालना शुरू किया। मैं चुप रही, पर धीरे–धीरे बच्चे टीवी से चिपकने लगे, उन्हें पढ़ाई से दूर कर दिया। सन् 2000 में तुमने मोबाइल रूपी खिलौना इतना आवश्यक कर दिया कि वह मनुष्य के हाथ में दिन–रात रहने लगा और सच्चे मित्रों, रिश्तेदारों को पास लाने के बहाने दूर कर दिया। समय का भान भी मनुष्य को नहीं रहा। अब मैं चुप नहीं रहूँगी, क्योंकि अब तुम मेरे पुत्र मनुष्य के मस्तिष्क पर भी कब्जा कर रहे हो। तुमने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भर रोबोट बनाना शुरू कर दिया है। तुम तो मनुष्य से उसका कर्म ही छीन लोगे। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है, 'मनुष्य को निरंतर कर्म रत रहना चाहिए।' मनुष्य रोबोट आने से कर्महीन हो जायेगा और अपनी संवेदना भी रोबोट को दान कर देगा। मनुष्य संवेदनाहीन हो जायेगा तो वह मनुष्य ही कहाँ रहेगा।''

हो...हो करके विज्ञान हँसा, बोला, ''प्रकृति दादी माँ! मैं भी तो मनुष्य के मस्तिष्क से ही जन्मा हूँ। इस तरह मैं आपका पौत्र हूँ। मैं भी तो ज्ञान दे सकता हूँ, गीता में भगवान ने यह भी कहा है कि मनुष्य अपना ही मित्र होता है और अपना ही शत्रु।

आप ही बताइए दादी माँ, मनुष्य के साथ उसका साथी विवेक भी तो रहता है। तो वह अपने विवेक की बात क्यों नहीं मानता?

■ 92, सुरेन्द्र माणिक अवधपुरी (विद्या सागर कॉलेज के सामने), भोपाल–462022, म.प्र./मो. 09981775190

सुधा भार्गव

आज का सुदामा

''अरे तू...! खबर भी नहीं दी आने की। रास्ते में तो बड़ा कष्ट हुआ होगा। कहाँ सुविधाओं से भरी शहरी ज़िंदगी और कहाँ खट्टा–मीठा मेरा गाँव। किताबों में पढ़ा था सुदामा कृष्ण की नगरी में गये थे पर कृष्ण को सुदामा की नगरी में आते आज ही देखा है।''

''वीरू, कृष्ण कहकर मुझे लज्जित न कर। माना मैंने पैसा ज्यादा कमा लिया है। पर उस पैसे से न शुद्ध भोजन खरीद सकता हूँ न शुद्ध पानी और हवा। यहाँ तक कि अपने लिए दो बूँद प्यार भी नहीं जुटा सकता।'' स्वर में हताशा थी।

''ऐसे न कह दोस्त। तेरी बातों को सुन मेरा हृदय फटता है।''

''मेरे दुःख का अंत नहीं वीरू! और सुन, आए दिन बीमार रहता हूँ। हालचाल पूछने न कोई पड़ोसी आता और न रिश्तेदार।''

''उनकी बात छोड़ो। तेरा तो भरा–पूरा परिवार है। अपनों की क्या कमी है?''

''बच्चे भी कहाँ अपने! घर में मोबाइल से चिपकनबाजी या लेपटोप पर टंकणबाजी। न उन्हें बात सुनने का समय है न मेरी तरफ देखने का। खिचड़ रही है गाड़ी, नौकर–चाकर के भरोसे। अब तू ही बता मैं सुदामा हूँ या नहीं? और... और यह सुदामा तुझसे कुछ माँगने ही आया है।''

''क्या बात करते हो दोस्त! मेरे पास क्या है तुम्हें देने के लिए!'' वीरू अचरज से भर उठा।

''तुम्हारे पास तो बहुत कुछ है।''

''जो कहना है जल्दी कह। मेरे सब्र की परीक्षा न ले।'' वह खीझ उठा।

''मैं यहाँ की सुगंध भरी हवा में साँस लेना चाहता हूँ। प्रकृति की सुंदरता को अपने दिल में बसाकर उगते सूरज की ललाई में रँग जाना चाहता हूँ। यही नहीं बल्कि तेरे साथ दिल खोलकर ठहाके लगाता, भाभी के हाथ की स्नेह पगी मक्का–बाजरे की रोटी खाना चाहता हूँ। क्या दे सकेगा यह सब इस भूखे को।''

भाव विह्वल वीरू का गला भर्रा गया। उससे बस यही कहते बना, ''मेरे घर को अपना ही घर समझ। जब तक रहना चाहे, रह।''

''मुझे मालूम था तू यही कहेगा। तू इतना अमीर है कि कहो तो सारी दुनिया तेरे दिल में समा जाए।''

प्यार के अतिरेक से दोनों की आँखें अश्रुपूरित थी। आँसुओं के वेग में अमीरी–गरीबी की दीवार ढह रही थी और अपनी संस्कृति खिलखिला रही थी।

■ जे ब्लॉक, 703, स्प्रिंगफील्ड अपार्टमेंट, सरजापुरा रोड, बैंगलोर–560102, कर्ना./मो. 09731552847

कपिल शास्त्री

कैश नहीं काइंड

कांट्रेक्टर रतन सिंह का पेमेंट चेक रुका हुआ था। इसे लेकर वह बड़े परेशानी व असमंजस में थे। कैसे पूछे मंत्री जी से! अपने ही गाँव के हैं। कई बार साथ में खाना–पीना भी हो चुका है। इतने घनिष्ट सम्बन्धों के बावजूद...! इसी उधेड़बुन में हीरे की अँगूठी उँगली में घुमाते–घुमाते हिम्मत करके पूछ ही डाला, ''चेक निकलवाने में कितने लगेंगे, साफ–साफ बता दीजिए।''

''धत्त, तुझसे पैसे लूँगा! प्यार भरे अपनेपन से मंत्री जी ने डपटा।

''वैसे कॉन्ट्रैक्ट कितने का था? मंत्री जी ने अनभिज्ञ बनते हुए पूछा।

''बीस लाख का था।'' रतन सिंह ने आशाभरी नज़रों से देखते हुए उत्तर दिया।

हीरे की चमक मंत्री जी की आँखों में चमकी।

''अंगूठी तो बड़ी सुन्दर है, ला दिखा।'' ऐसा कहकर देखने के लिए अँगूठी उतरवा ली गयी।

हथेली में एक–दो बार उछालकर तोलते हुए बोले, ''भारी भी है, कितने में पड़ी?''

''सोना मिलाकर दो लाख की तो है।'' रतन सिंह ने कीमत का खुलासा किया।

''मंत्री जी ने बातों ही बातों में अँगूठी टेबल के साइड में रख दी और अपने पी. ए. को बुलाकर पूछा, ''ये रतन सिंह हैं, इनका पेमेंट चेक अभी तक रिलीज नहीं हुआ, क्या कारण है?''

''सर, आपने ही तो...''

''चुप!'' उसकी बात बीच में ही काटते हुए फटकारा।

''कितने साल हो गये हैं काम करते हुए, फिर भी समझते नहीं हो। आज शाम तक इनका पेमेंट हो जाना चाहिए।''

हीरे की जगह अब उतरी हुई अँगूठी का त्वचा पर उजला गोल निशान चमक रहा था। मंत्री जी ने समझा दिया था कि अपनो में कैश नहीं तो क्या हुआ काइंड तो चलता है।

■ निरुपम रीजेंसी, एस–3/231ए/2 ए, साकेत नगर, भोपाल–462024, उ.प्र./मो. 09406543770

महावीर रवांल्टा

चोर

छोटे से पहाड़ी कस्बे से राजधानी के लिए चलने वाली परिवहन निगम की बस सड़क पर आगे बढ़ चुकी थी। बीच–बीच में कंडक्टर की सीटी बजते ही बस रुक जाती। सवारियाँ चढ़ती, उतरती और बस आगे बढ़ने लगती। बस में सवार होते ही लोग अपने लिए सीट तलाशते फिर आपसी अभिवादन, परिचय व कुशलक्षेम के बाद बातचीत का सिलसिला शुरू हो जाता। बातचीत

क्षेत्र, प्रदेश व देश की राजनीति, भ्रष्टाचार, बढ़ती महँगाई जैसे विषयों पर केंद्रित होती। अधिकांश लोग देश में बढ़ रही अराजकता, व्यभिचार, रिश्वत, मुनाफाखोरी व चोरी पर चिंता व्यक्त करते हुए इसके लिए राजनेताओं को दोषी ठहराते हुए इसमें संलिप्त लोगों को बुरी तरह कोसते।

''लेकिन इसके लिए हम लोग भी जिम्मेदार हैं क्योंकि हम अपना हित साधते समय न अपने समाज की चिंता करते हैं और न ही देश की।'' वार्तालाप में शामिल एक सज्जन बोले।

''आप ठीक कहते हैं यदि हम लोग सिर्फ अपना भला न देखकर देश की चिंता करें तो हमारा देश आज भी सोने की चिड़िया हो जाये।'' उनकी बराबर में बैठे सज्जन ने उनकी बात का समर्थन किया था। तभी टिकट काटता हुआ कंडक्टर उनकी ओर बढ़ा। उसे सामने देखकर उन्होंने बटुए से सौ का नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ाया।

''ये रखिए, इतने ही काफी हैं।'' कंडक्टर उन्हें पचास का नोट पकड़ाता हुआ चेहरे पर हल्की–सी मुस्कान लाता हुआ बोला।'' सौ के बदले सिर्फ पचास! चलो पचास तो बचे।'' मन ही मन सोचते हुए उन्होंने नोट अपने जेब के हवाले कर दिया।

कंडक्टर उन्हें बिना टिकट दिए अपना रुख दूसरी सवारियों की ओर कर चुका था।

बस में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, व्यभिचार, मुनाफाखोरी व चोरी पर अब भी बहस जारी थी। लोग बढ़–चढ़कर उसमें भागीदारी कर रहे थे, जिसमें वे भी शामिल थे।

■ संभावना–महरगांव, पत्रालय–मोल्टाड़ी, पुरोला, उत्तरकाशी–249185,उत्तराखंड / मो. 8894215441

पवन जैन

रिजर्वेशन

आज लगातार तीसरा दिन है, समाज के बुजुर्ग एक–एक कर टिकट कटा रहे हैं। दिसम्बर की इस कड़कड़ाती ठंड में, मैं तो रोज श्मसान के चक्कर लगा रहा हूँ, ऊपर से यह बरसात भी चैन नहीं ले रही। अभी दो दिन पहले के कपड़े भी सूखे नहीं है कि आज फिर पेंट, जर्सी धोना पड़ रहा है। उनकी तो नैय्या पार हो गई, सालों से बिस्तर पर जो पड़े थे। घरवाले भी सेवा करके हार चुके थे।

मेरी हाजिरी इसलिए भी पक्की रहती कि वहाँ की कापी में अपना नाम दर्ज हो जाये, जिससे उनके परिजन आगे पीछे यह न कहें कि आप तो आये ही नहीं थे। मिट्टी में जाने पर तीन काम मैं जरूर करता हूँ। चंदन की लकड़ी का छोटा–सा टुकड़ा लेकर उसके पाँच टुकड़े करना, फिर पंच लकड़ी देना, कापी में अपना नाम लिखना पता समेत, फिर समाज के ठेकेदारों द्वारा दिए गये संक्षिप्त भाषण को सुनना जो हर समय एक से ही होते हैं, सिर्फ नाम बदल जाता है। उसके बाद उनके परिजनों को नमस्कार कर आगे बढ़ना। नमस्कार करना तो फारमलिटी है, असली बात तो यह है कि इतनी भीड़ में भी मेरी सूरत अच्छे से देख लें।

मुझे फिलहाल समाज में ही रहना है, और फिर न जाने अपना भी टिकट कब कट जाये।

■ 593, संजीवनी नगर, जबलपुर–482003, म.प्र./मो. 09425324978

लाजपत राय गर्ग

दूसरा पिता

''अविनाश शाम को कार्यालय से घर पहुँचा तो उसकी इकलौती बेटी मालती ने प्रश्नात्मक स्वर में कहा, ''पापा, कृष्ण जी की दो माताएँ थीं?''

''हाँ बेटे, देवकी और यशोदा। एक ने जन्म दिया, दूसरी ने लालन–पालन किया।''

''पापा, यदि मैं किसी अन्य व्यक्ति को भी 'पापा' मानूँ तो आपको बुरा तो नहीं लगेगा?''

''लेकिन क्यों और किसे?''

''यदि आपने आराम या कोई और काम न करना हो तो मेरे साथ चलो, आपके प्रश्न का उत्तर स्वयं ही मिल जायेगा।''

अविनाश मालती से बेहद प्यार करता था, उसकी खुशी के लिये कुछ भी करने को सदैव तत्पर रहता था। अतः उसने कहा, ''चलो, कहाँ चलना है?''

''कार में चलना पड़ेगा पापा, जीरकपुर से थोड़ा आगे अम्बाला रोड पर।''

अविनाश ने कार निकाली और बिना प्रश्न किये मालती के साथ कार अम्बाला रोड की ओर बढ़ा दी। तीन–चार किलोमीटर चलने के बाद मालती ने एक ढाबे के सामने कार रुकवाई। सामने था– ''मितर प्यारेयाँ दा ढाबा''।

अविनाश ने कार रोकी और मालती के साथ उतर पड़ा। मालती अविनाश का हाथ पकड़कर ढाबे के अन्दर ले गयी। गद्दी पर बैठे ढाबे के मालिक हरबख्श सिंह ने मालती को देखते ही उठते हुए कहा, ''आओ बेटी'' और हाथ जोड़कर अविनाश को 'सत श्री अकाल' कहा।

मालती– ''पापा, यही हैं मेरे दूसरे पापा।''

अविनाश अचम्भित। फिर भी उसने कोई प्रश्न नहीं किया। हरबख्श सिंह ने मालती की बात सुनकर और अविनाश के चेहरे के भाव पढ़कर कहा, ''भाई साहब, कल शाम वेले मैं आपणे स्कूटर ते 'नीलम थियेटर' दी पिछली सड़क तों आ रअेया सी कि मैं देख्या, तिन–चार गुंडेयाँ ने मालती नूँ घेर रख्या सी। मैं ओन्हाँ नूँ वंगारिया ते मालती नूँ छड्डन लई केहा। इक्क जना बोल्या, 'ओऐ सरदारा, तूँ आपणा कम्म कर, सानूँ आपणा कम्म करन दे। ऐह तेरी की लगदी है जो तूँ ऐदी पैरवी करदा ऐं?' मैं कटार कढ़के जवाब दित्ता, 'ऐह मेरी धी है, हुण किसे ने कोई हरकत कित्ती ताँ ऐह कटार तों बच्च नहीं सकना।' ते ओन्हाँ ने भज्जन च ही ख़ैर समझी।''

अविनाश ने ऊपर की ओर देखते हुए मन–ही–मन भगवान् को धन्यवाद दिया और हरबख्श सिंह के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, ''सरदार साहब, आपका

बहुत–बहुत धन्यवाद। आपने मालती को बचाकर एक पिता व इन्सानियत का फ़र्ज़ बखूबी निभाया है, जिसके लिये धन्यवाद जैसे शब्द नाकाफ़ी हैं।''

■ 150, सेक्टर 15, पंचकूला–134113, हरियाणा / मो. 09216446527

मिनी मिश्रा

कीचड़ में कमल

साड़ी का खूँट पकड़कर मेरा बेटा मुझसे हठ करने लगा, ''अम्मा...बताओ ना... कीचड़ में क्या खिलता है?''

''अरे... हट, तंग मत कर। देख ऊपर, कितने घने बादल हैं... जोर से बारिश आने वाली है। जल्दी–जल्दी इन बिचड़ों को लगाकर घर जाना है मुझे। कल से घर में चूल्हा नहीं जला है! क्या पता? इंद्र देव आज भी कुपित हो जाएँ? यदि आज भी वो ओले बन कहर बरपायेंगे... तो खाना–पीना–रहना, सब दूभर हो जाएगा! जलावन सूखी बची रहेगी? या कल की ही तरह हमें आज भी सत्तू खाकर दिन काटना पड़ेगा? बेचारे इन बिचड़ों का जो हाल होगा, वो भगवान मालिक!''

''अम्मा, ये सब मुझे नहीं सुनना... पहले बताओ...?''

''तू भी सच में बड़ा जिद्दी है। बिना बताये कभी मानता कहाँ! बेटा, कीचड़ में बिचड़ों का मुस्कुराना मेरे मन को बहुत सुकून देता है। रे...तू क्या समझेगा! अभी इसी तरह अबोध जो है!'' धान के बिचड़ों को कीचड़ सने हाथों से सहलाते हुए.. मैं काले मँडराते बादल को देखने लगी।

''पर, अम्मा... किताबों में तो यही लिखा है कि कीचड़ में कमल खिलता है।''

''पढ़ा होगा तू! पर, जिस किताब की बात तू कर रहा है ना, वो भाषा मुझे नहीं सुहाती! भूखे पेट... कीचड़ में कमल नहीं, मुझे, धान की बालियाँ लुभाती हैं।''

■शिवमातृ अपार्टमेन्ट, फ्लैट नं. 301, रोड नं. 3, महेशनगर, पटना–800024 / मो. 08340290574

कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'

मिनी किचन

''रश्मि, क्या बात है? आजकल सीमा नहीं दिखाई देती? ठीक तो है न वो।'' मैंने सहज ही पूछ लिया।

''सीमा जब भी मिलती है, उसकी भवें तनी होती हैं।'' रश्मि ने नाक–मुँह सिकोड़ते कहा, ''मैं कुछ पूछूँ कि ताना शुरू, ''तू अच्छी है। हमेशा फ्रेश मूड में घूमती रहती है। कोई जिम्मेदारी जो नहीं... और एक मैं हूँ, जो कोल्हू के बैल की तरह घर में जुती रहती हूँ। कभी–कभार घूमना तक मेरे नसीब में नहीं। दूसरों की तरह अगर रेस्तराँ जायेंगे भी, तो बूढ़े सास–ससुर को तो दो रोटी देना ही है न!'' रश्मि बिना रुके शिकायत किये जा रही थी, ''वो समस्या का हल तो ढूँढ़ती नहीं। हाँ, आँसू बहाते हुए किसी सहानुभूति जताने वाले को ज़रूर ढूँढ़ लेती है। अब तुम ही बताओ मधु, अपने

टेंशन कम हैं, जो बैठकर उसके आसूँ पोंछूँ?''

दोनों अंतरंग सहेलियों के बीच अलगाव गंभीर रूप न ले ले, इसलिए मैं एक दिन उन दोनों को अपने घर ले आई।

सबसे पहले उन्हें सास–ससुर के कमरे में ले गई। उनका परिचय कराया। उनसे घर के बाकी हिस्से की चाबियाँ लीं। दोनों सहेलियाँ मेरे पीछे चल दीं।

उनकी खुसर–पुसर का अंदाजा लगा मैं बोली, ''तुम सोच रही हो न कि मेरे लौटने पर माँ जी के चेहरे पर खीझ या झुँझलाहट के बजाय मुस्कुराहट क्यों थी? मेरे कहीं जाने पर न उन्हें टेंशन रहता है, न मुझे। इसका समाधान है यह मिनी किचन।'' दोनों मेरी बात गौर से सुन रही थीं। हमने जब घर का नक्शा बनवाया था, तो बच्चों के साथ–साथ माँ–बाबूजी का कमरा बनवाते समय कई सुविधाओं का ध्यान रखा। जैसे– उनका अटैच्ड वाशरूमवाला कमरा ऐसी जगह हो, जहाँ से एक दरवाजा घर के भीतर खुलता हो और दूसरा बाहर बगीचे की ओर, ताकि वे अकेलापन न महसूस करें। आने–जानेवालों पर उनकी नज़रें भी रहें और वे बाहर की रौनक से भी जुड़े रहें। कमरे के एक कोने में कुछ ज़रूरी सामान रखकर मिनी किचन बना दिया, ताकि मेरी अनुपस्थिति में उन्हें कोई कमी न रहे। फ्रिज में उनके लिए दूध, फल, दवाइयाँ रहती ही हैं। वे हमारे साथ ही हैं, अलग नहीं। ये चीजें तो उनकी सुविधा के लिए हैं।''

''अरे! तुम दोनों किस सोच में डूब गईं? ये कोई कठिन काम नहीं। मोना के बाहर भोपाल पढ़ने जाने पर, जब मैंने जाकर उसके रूम में मिनी किचन का बंदोबस्त किया था, तभी ख़्याल आया कि जब हम बच्चों के लिए सभी सुविधाएँ जुटा देते हैं, तो बुजुर्गों को इन सुविधाओं से वंचित क्यों रखें!''

दोनों सहेलियाँ बंद कली–सा चेहरा लिए आईं थीं, पर फूल–से खिले–खिले मुख से विदा हुईं।

■ शिवनंदन', 595, वैशाली नगर (सेठीनगर), उज्जैन–456010, म.प्र./मो. 09424014477

सत्य शुचि

बहिना!

आलीशान होटल में बाड़ाबंदी चल रही थी और एक प्रदेश में सत्ता पक्ष के विधायकों की कमान एक वरिष्ठ मंत्री के जिम्मे थी। तिस पर रक्षाबंधन पर्व निकट ही था।

एक महिला विधायक ने होटल में मंत्री जी को राखी बाँधी। तत्पश्चात उसी क्षण मंत्री जी भावुक हो चले।

''..क्या चाहिए, बहिना!'' अचानक मंत्री जी के लब–होंठ उत्साह और जोश में भीग आये।

''कुछ नहीं... भाई साहब।'' संक्षेप में महिला का स्वर प्रस्फुटित हुआ।

''ऐसा कैसे हो सकता है! आप तीन बार पार्टी की विधायक रह चुकी हैं तो...''

''... ...'' वह मौन थी।

''कुछ तो बताइए, आप! ...कदाचित् आज की तारीख में यहाँ सब संभव है, बहिना!''

''अगर ऐसा ही कुछ है तो आप मुझे मंत्री बनवा दे।''

''क्या...!''

''हाँ..., यही बहिन के वास्ते राखी की सच्ची सीख–सौगात समझो या कि बहिन का नेकाचार!''

''बस...! तथास्तु!!'' और मंत्री जी बहिन के सिर पर हाथ फेरते हुए आगे बढ़ गये।

■ साकेत नगर, ब्यावर–305901, राजस्थान / मो. 09413685820

सुभाष मित्तल 'सत्यम'

खोदा पहाड़ और...

पंडित भरत जी मिश्रा को 2020 में कोरोना हो गया। इलाज करवाने से कुछ दिन में और तो सब ठीक हो गया पर उनकी गंध और स्वाद अनुभव करने की शक्ति नहीं लौटी। इलाज तो ले रहे थे मगर लाभ कुछ नहीं।

एक बार किसी यजमान के पूजा कार्य के लिए वे मुंबई गये। काम के दौरान अपनी तकलीफ का भी जिक्र किया। यजमान ने वहाँ के एक प्रसिद्ध डॉक्टर का नाम बताया और कहा कि उनकी फ़ीस तो पाँच हजार रुपये है पर इलाज कारगर है।

डॉक्टर ने पन्द्रह दिन बाद की तारीख दी। पंडित जी नियत दिन वहाँ पहुँचे। डॉक्टर ने कुछ टैस्ट जैसे– खून, कफ आदि के करवाये। पाँच हजार रुपये फ़ीस तथा दो हजार रुपये टैस्ट आदि के खर्च कर डॉक्टर के सामने बैठे तो उन्होंने कहा ठीक हो जायेगा। पंडित जी बोले, ''तो इलाज करो।''

डॉक्टर ने कहा, ''रोज 15–15 मिनट कपाल भाति और अनुलोम–विलोम करो।''

''ये तो मैं पिछले पाँच वर्ष से कर रहा हूँ।'' पंडित जी खिन्न मन से बोले।

डॉक्टर उनका मुँह देख रहा था।

■ पुराना बसस्टैण्ड रोड, राजस्थान टिम्बर के सामने, स्वरूपगंज–307023, वाया आबुरोड (W.Rly) जिला सिरोही, राजस्थान

पृष्ठ 65 ('नवजन्मा' लघुकथा पर रणजीत टाडा) **का शेष...**

आँसू छलकते हैं; जिन्हें वह इस बार नहीं पोंछती है। इस प्रकार लघुकथा नाटकीयता के साथ सुखांत को प्राप्त होती है। लघुकथा चलचित्र की तरह एक जीवन्त दृश्य पेश करती है। लेखक ने लघुकथा को अत्यन्त कुशलता के साथ बुना है और यथार्थ चित्रण किया है। कसे हुए वाक्य, मन को भेदने वाले संवाद, दृश्य संयोजन, सम्प्रेषणीयता, पात्रानुकूल भाषा रचना को मर्मस्पर्शी बनाते हैं।

■ 1699, सेक्टर–17, हिसार–125005, हरियाणा / मो, 09416837937

माधव नागदा को आचार्य लक्ष्मीकांत जोशी साहित्य सम्मान

विगत 29 मई को जोधपुर में सृजना कला, संस्कृति, शिक्षा विमर्श मंच और जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय की संयुक्त मेजबानी में आचार्य लक्ष्मीकांत जोशी साहित्य (लघुकथा) सम्मान विख्यात कथाकार और आलोचक माधव नागदा को उनकी कृति 'माटी की महक' के लिए प्रदान किया गया। उन्हें सम्मान स्वरूप श्रीफल, 21 हजार रुपए राशि का चेक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि दिल्ली के ख्यात साहित्यकार डॉ. बलराम अग्रवाल और अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार प्रेम प्रकाश व्यास थे। आरंभ में अयोध्याप्रसाद गौड़ ने स्व.आचार्य लक्ष्मीकांत जोशी के बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया। सृजना के सचिव और कार्यक्रम के संचालक डॉ. हरीदास व्यास ने इस आयोजन का परिचय और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तीन पुस्तकों– मुरलीधर वैष्णव की पुस्तक 'धरा पर इंद्रधनुष', हरीदास व्यास की पुस्तक 'कहानी है कि खत्म ही नहीं होती' और बसंती पवार की पुस्तक 'नाक का सवाल' के अंग्रेजी अनुवाद 'फॉर द सेक ऑफ नोज़' का विमोचन भी हुआ। डॉ. बलराम अग्रवाल ने 'लघुकथा– सर्जन और चुनौतियाँ' विषय पर बोलते हुए कहा, ''सृजन मनुष्य को जीवित रखने का औजार है। लघुकथा सृजन की वह विधा है, जिसमें लेखक का मौन भी मुखर होता है। लघुकथा विस्तृत ब्यौरों से मुक्ति दिलाते हुए बिंब व प्रतीकों के सहारे अपनी बात कहती है। यह एक ऐसा शिल्प है जहाँ एक लोकोक्ति पूरे पैराग्राफ की जगह ले सकती है। लघुकथा के समक्ष चुनौतियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आज का रचनाकार अपनी रचना से संवाद नहीं करता। डिजिटल सुविधाओं ने उसे अपनी रचना से दूर कर दिया है।'' माधव नागदा ने अपनी चुनिंदा लघुकथाओं के वाचन के साथ समारोह को सम्बोधित भी किया। अध्यक्ष प्रेम प्रकाश व्यास ने कहा कि सृजन समाज का दर्पण नहीं बल्कि एक प्रिज़्म है जिससे निकलकर विभिन्न विचारों, सम्वेदनाओं और अनुभूतियों के विभिन्न रंगो का प्रकाश हमें प्राप्त होता है। स्वागत उद्बोधन सुषमा चौहान तथा धन्यवाद ज्ञापित किया हरि प्रकाश राठी ने। कार्यक्रम प्रभारी थी प्रगति गुप्ता। (समाचार सौजन्य : डॉ. बलराम अग्रवाल)

आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र लघुकथा प्रतियोगिता सम्पन्न

मई 2022 में डॉ.ऋचा शर्मा (ल.शो.के. अहमदनगर) के संयोजन में आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र लघुकथा प्रतियोगिता–2022 का आयोजन किया गया। इसमें प्रथम पुरस्कार डॉ.संध्या तिवारी (छोटी सी आशा), द्वितीय पुरस्कार श्री संतोष सुपेकर (अनुताप), तृतीय पुरस्कार डॉ. इंदु गुप्ता (बाप होना मतलब) एवं मधुकर वनमाली (भौजिया) को प्रदान किया गया। अनीता सैनी 'दीप्ति' (ज्ञान सरोवर) एवं पवन शर्मा (ठंडक) को सांत्वना पुरस्कार दिये गये। प्रतियोगिता में देशभर से 130 लघुकथाकारों ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता की लघुकथाओं के परीक्षक थे– श्री माधव नागदा एवं डॉ.उमेश महादोषी। (समाचार सौजन्य : डॉ. ऋचा शर्मा)

प्रतिष्ठित सप्तपर्णी सम्मान संदीप राशिनकर को

मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन, भोपाल द्वारा संयोजित चर्चित पत्रिका 'समकालीन प्रेरणा' द्वारा स्व. उर्मिला तिवारी की स्मृति में स्थापित प्रतिष्ठित सप्तपर्णी सम्मानों की घोषणा कर दी गई है। सम्मेलन के श्री पलाश सुरजन ने बताया कि साहित्य को समर्पित रूपांकन के लिए दिए जाने वाला सप्तपर्णी सम्मान–2021 संदीप राशिनकर को दिए जाने का निर्णय लिया गया है। उल्लेखनीय है कि जाने माने चित्रकार, लेखक, समीक्षक संदीप के रेखांकनों ने देशभर की पत्रिकाओं में हजारों की संख्या में प्रकाशित होकर न सिर्फ अपनी विशिष्ट पहचान बनाई

है वरन सैकडों पुस्तकों पर प्रकाशित उनकी कलाकृतियाँ पाठकों और कला रसिकों को अपनी अभिनव कलादृष्टि से सराबोर कर रही है। निकट भविष्य में सम्मेलन द्वारा भोपाल में एक गरिमापूर्ण कार्यक्रम में उन्हें सम्मानित किया जाएगा। (समा. सौजन्य : संदीप राशिनकर)

वातायन की शतकीय संगोष्ठी दिल्ली में आयोजित

विगत 5 अप्रैल को नई दिल्ली में हाइब्रिड मोड में आयोजित सौ वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ब्रिटेन में हिंदी साहित्य एवं शिक्षण में देश–विदेश के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों की सहभागिता रही। शुभारंभ डॉ. एस के मिश्रा द्वारा संपादित एक लघु फ़िल्म से हुआ, जिसमें विश्वभर के हिंदी प्रेमियों ने वातायन–यूके की शतकीय संगोष्ठी के सुअवसर पर शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं। मनु सिन्हा द्वारा वंदना–प्रस्तुति के बाद अलका सिन्हा ने संचालन की बागडोर संभाली। श्याम परांडे जी ने सहभागियों का स्वागत किया। स्वागत–उदबोधन था वातायन–यूके की अध्यक्षा मीरा मिश्रा कौशिक का। डॉ. पद्मेश गुप्त ने वातायन की स्थापना, उद्देश्य एवं उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डाला। श्री वीरेंद्र गुप्ता जी ने कहा कि कोविड काल में वातायन–यूके ने हिंदी सेवा का जो कार्य अपने कंधे पर लिया है, वह बदलाव ला रहा है। सुप्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल ने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्व हिंदी सम्मेलन की परिकल्पना को साकार एवं सफल बनाने के पीछे ऐसे ही हिंदी प्रेमी संस्थाओं का अहम योगदान रहा है। कार्यक्रम अध्यक्ष सच्चिदानंद जोशी ने हिंदी सिनेमा का उदाहरण देते हुए कहा कि फिल्म में किसी पात्र का शुद्ध हिंदी बोलना हास–परिहास का बोध कराता है, हमें ऐसे मिथक तोड़ने होंगे। हिंदी के प्रति अंदर से उत्साह पैदा हो और ऐसे सकारात्मक वातावरण का निर्माण होना चाहिए, तभी हम हिंदी को आगे बढ़ा सकते हैं। नासिरा शर्मा, डॉ. रेखा सेठी, डॉ. अरुणा अजितसरिया, सुरेखा चोफला, नारायण कुमार, अनिल शर्मा जोशी, डॉ. बीना शर्मा आदि ने भी संगोष्ठी को संबोधित किया। वर्चुअल (ज़ूम) कार्यभार संभाला आशीष मिश्रा, कृष्ण कुमार, चेतन जी और आस्था देव ने। (समाचार सौजन्य : शुभम राय त्रिपाठी)

बालप्रहरी की 400 वीं ऑनलाइन कार्यशाला

पठन–पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बच्चों के लिए चल पुस्तकालयों की स्थापना की जानी चाहिए। बच्चों को यदि पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएंगी तो बच्चे पुस्तकें जरूर पढ़ेंगे। इसके लिए अभिभावकों को बच्चों को पुस्तकें लाकर देनी चाहिए। ये बातें बालप्रहरी तथा बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा 'बच्चों का सर्वांगीण विकास और ऑनलाइन कार्यशालाएं' विषय पर 400वें ऑनलाइन कार्यक्रम के अध्यक्ष बतौर रमेश तैलंग जी ने कही। मुख्य अतिथि श्रीमती प्रभाकिरण जैन (दिल्ली) तथा प्रकाश तातेड़ (उदयपुर), डॉ. अशोककुमार नेगी (खंडवा), संरक्षकगण आकाश सारस्वत व श्याम पलट पांडेय ने भी कार्यशाला को संबोधित किया तथा बालप्रहरी की इस अनूठी पहल की प्रशंसा की। संचालन कक्षा 12 की छात्रा मुस्कान तिवारी ने किया। कार्यशाला में अनेक बच्चों, बाल साहित्यकारों एवं शिक्षकों ने भी सहभागिता की। संयोजक एवं बालप्रहरी के संपादक उदय किरौला ने पिछली गतिविधियों की जानकारी देते हुए सहयोग के लिए अभिभावकों का आभार व्यक्त किया। (समाचार सौजन्य : उदय किरौला)

डॉ. शील कौशिक सम्मानित

विगत दिनों डॉ. शील कौशिक को हरि. साहित्य अकादमी ने 'पंडित माधव प्रसाद मिश्र सम्मान–2018' दिया। उन्हें यह सम्मान चंडीगढ़ में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर के कर कमलों से प्राप्त हुआ। सम्मान के तहत शील जी को ढाई लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह व शाल ओढ़ाकर अलंकृत किया गया। (समा. सौ. : डॉ. शील कौशिक)

।।प्राप्ति स्वीकार।।

{पुस्तक/पत्रिका की **एक प्रति** ही **बरेली के पते** पर भेजें। पुस्तकों की निम्नानुसार संक्षिप्त सूचना का प्रकाशन ही संभव है।}

प्राप्त पुस्तकें

लघुकथा विवेचना और आलोचना : लघुकथा–आलोचना : भगीरथ परिहार। प्रका. : बीएफसी पब्लिकेशन्स प्रा.लि., सीपी–61, विराज खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, उ.प्र.। मू. : रु. 268/–। सं. : 2022।

लघुकथाकार कमल चोपड़ा की सृजन–संवेदना : लघुकथा–आलोचना : भगीरथ परिहार। प्रका. : अयन प्रकाशन, जे–19/39, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली–59। मूल्य : रु. 550/–। सं. : 2022।

जीवन की नींव : पं. राधेश्याम कथावाचक पर समीक्षा : हरिशंकर शर्मा। प्रका.: बोधि प्रकाशन, सी–46, सुदर्शनपुरा इंड. एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर–06 मू. : रु. 250/–। सं. : 2022।

आगे से फटा जूता : कहानी संग्रह : राम नगीना मौर्य। प्रका. : रश्मि प्रकाशन, महाराजापुरम्, केशरीखेड़ा रेलवे क्रासिंग के पास, कृष्णा नगर, लखनऊ–11, उ.प्र.। मूल्य : रु. 220/–मात्र। संस्करण : 2022।

अपकेन्द्रीय बल : लघुकथा संग्रह : संतोष सुपेकर। प्रका. : एच.आई. पब्लिकेशन, 302–303, तीसरी मंजिल, शान्ति प्लाजा, होटल समय के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन, म.प्र.। मूल्य : रु. 300। सं. : 2022।

हाल–ए–वक्त : लघुकथा संग्रह : चंद्रेश कुमार छतलानी। प्रकाशक : हिमांशु पब्लिकेशन, 464, हिरण मगरी, सेक्टर–11, उदयपुर–313002, राज.। मूल्य : रु. 250। संस्करण : 2022।

कैक्टस के जंगल : कहानी संग्रह : सुरेश बाबू मिश्रा। प्रकाशन : अयन प्रकाशन, जे–19/39, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली–59। मूल्य : रु. 320/–। संस्करण : 2021।

आ अब लौट चलें : लघुकथा संग्रह : डॉ. ऋचा शर्मा। प्रकाशन : विश्व हिन्दी साहित्य परिषद, एडी–94डी, शालीमार बाग, दिल्ली–88। मूल्य : रु. 200। संस्करण : 2021।

तैंतीसवीं पुतली : लघुकथा संग्रह : डॉ. जसबीर चावला। प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, सी–46, सुदर्शनपुरा इंड. एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर–06। मूल्य : रु. 150/–। संस्करण : 2020।

जीवन के सच : लघुकथा संग्रह : जया आर्य। प्रकाशक : भव्या प्रकाशन, एल.जी.–42, लोअर ग्राउंड, करतार आर्केड, रायसेन रोड, भोपाल–462023, म.प्र.। मूल्य : रु. 200/–। संस्करण : 2021।

चल प्राची की ओर : दोहा संग्रह : सुभाष मित्तल 'सत्यम'। प्रकाशक : शब्दांकुर प्रकाशन, जे–2–41, मदनगीर, नई दिल्ली–110062 । मूल्य : 200/– मात्र। संस्करण : 2021।

प्राप्त पत्रिकाएँ

प्रेरणा,समकालीन लेखन के लिए **:** साहित्यिक त्रैमासिकी। सम्पा. : अरुण तिवारी। वार्षिक शुल्क : 200/– मात्र। सम्पर्क : ए–74, पैलेस आरचर्ड फेज़–3, सर्वधर्म के पीछे, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)–462042।

कथादेश : मासिकी। सम्पादन : हरि नारायण। वार्षिक सहयोग : रु. 400/– मात्र। सम्पर्क : एल–57 बी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली–110095।

विभोर स्वर : वैश्विक हिन्दी त्रैमासिकी। सम्पादन : पंकज सुबीर। पाँच वर्षों का शुल्क : 3000/–। सम्पर्क : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3–6, सम्राट काम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैण्ड के सामने, सीहोर, म.प्र.।

शिवना साहित्यिकी : साहि.त्रैमा.। संपादक : पंकज सुबीर/शहरयार। पाँच वर्षों का शुल्क : 3000/–। सम्पर्क : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3–6, सम्राट काम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैण्ड के सामने, सीहोर, म.प्र.।

दि अण्डरलाइन : राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्रिका। सम्पादन : वीरेन्द्र शुक्ला/डॉ. प्रेमस्वरूप त्रिपाठी। मूल्य : 15/– मात्र। सम्पर्क : 127/122, डब्ल्यू–2, जूही कलां, कानपुर, उ.प्र.।

मड़ई–2021 : वार्षिक पत्रिका। सम्पादन : डॉ. कालीचरण यादव। मूल्य : निःशुल्क। सम्पर्क : बनियापारा, जूना बिलासपुर, जिला बिलासपुर–495001, छत्तीसगढ़।

अनन्तिम : काव्य केन्द्रित त्रैमासिकी। संपादन : सतीश गुप्ता। द्विवार्षिक शुल्क : रु. 240/– मात्र। सम्पर्क : के–221, यशोदा नगर, कानपुर–208011 (उ.प्र.)।

पत्रिकाओं की सूची–02 पृष्ठ 33 पर

पंजीयन : UTTHIN/2012/48352

दिल्ली पुस्तक मेले में उमेश महादोषी संपादित 'मधुदीप की 66 लघुकथाएँ'के लोकार्पण में सर्वश्री भगीरथ, मधुदीप, बलराम अग्रवाल, उमेश महादोषी व सतीशराज पुष्करणा के साथ हिमांशु जी

एक कार्यक्रम में डॉ. सतीशराज पुष्करणा के साथ मंचासीन हिमांशु जी

अ.भा.प्र. लघुकथा मंच के सम्मेलन पटना में वक्तव्य देते हिमांशु जी

प्रेषक

प्रधान सम्पादिका
अविराम साहित्यिकी
एफ–488/2, गली संख्या–11, राजेन्द्र नगर, रुड़की–247667, जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

प्राप्तकर्ता का नाम व पता

(मुद्रित पुस्तक पैकेट/Printed Book Packet)

प्रतिष्ठा में,